विश्व शांति का पथ अणुव्रत

◈ uhj t l\uh
श्रीमती फूलादेवी गर्ल्स सी.सै. स्कूल
भिवानी, हरियाणा

विश्व में आज जो भी हिंसा और क्रूरता दिखाई देती है, इसका जिम्मेदार कौन है? इसका जिम्मेदार स्वयं इंसान है। इंसान की क्रूरता इसके लिए उत्तरदायी है। मनुष्य अपनी मनुष्यता भूल गया है। अपने धर्म को भूल गया है। भगवान महावीर ने कहा है- ''क्रूर हृदय मानव तीक्ष्ण शस्त्र के समान है। वह सदैव स्वयं व दूसरों के अहित का कारण बनता है।''

vkज विश्व में चारों ओर हिंसा और अशांति फैली हुई है। चारों ओर जुर्म का डंका बज रहा है। आनंद तो कहीं भी नहीं है जबकि आनंद तो ईश्वरीय तत्व है। यह प्रत्येक मानव की अंतर्रात्मा में विद्यमान है। परंतु इस आनंद से अन्जान होकर हम सुख साधन और सुविधाओं में ही आनंद खोजते हैं। साधन सुख–सुविधा सम्पत्ति हमें पूर्ण रूप से आनन्दित कर सके, यह आवश्यक नहीं अपितु इनकी प्राप्ति के बावजूद अधिकांश लोग दुखी, चिंतित एवं अशांत हैं। दिव्य आनंद से कोसों दूर हैं। आनंद तृप्ति देता है, शांति देता है परंतु भोगों की तृष्णा कभी शांत नहीं होती।

मानव जीवन क्षण भंगुर है, साथ ही छोटा भी। इसे बढ़ाना हमारे वश में नहीं है। फिर भी ईर्ष्या, वैमनस्य, संकीर्णता व लोभ की प्रवृत्ति से हमने इसे विषाक्त बना रखा है। ईर्ष्या वाला व्यक्ति मन ही मन घुटता रहता है, कुढ़ता रहता है, जलता रहता है। ईर्ष्या की प्रवृत्ति का त्याग हमें मंगलमय, आनंदमय, स्वास्थ्य लाभ, मुस्कराता चेहरा और आर्कषण देगा। श्री रविशंकर का कहना है कि हमें जीवन इस आस्था के साथ जीना चाहिए कि हम यहाँ उदास व दुःखी होने नहीं आए हैं, हम यहाँ दिखावा

करने, तनाव झेलने नहीं आए हैं, हम तो मुस्कुराते हुए जीने तथा दूसरों के अधरों को मुस्कान देने, किसी के आंसू पोंछने, किसी का दुःख बांटने आए हैं।

नन्हें शिशु की भांति मुस्कुराते रहिए। इससे मस्तिष्क को शांति, राहत, आनंद और आत्मविश्वास का एहसास होता है। आपकी क्षमताएँ बढ़ती हैं। पूरे व्यक्तित्व को साहस, सक्रियता, लोकप्रियता एवं आत्मविश्वास की ऊर्जा मुस्कान से मिलती है। सदैव उत्साहित रहो। हतोत्साहित तो किसी को कभी नहीं करें। आनंद प्राप्ति के इस मार्ग का पता होने के बावजूद लोग इससे अन्जान रहते हैं न जाने क्यों?

अक्सर देखा जाता है कि माता–पिता, अभिभावक प्रतियोगितावाद युग के कारण अपने बच्चों पर महत्वाकांक्षा का दबाव डालते हैं। हर वक्त हतोत्साहित करने वाले तानों से बच्चे सहम जाते हैं। आत्मविश्वास कुंठित हो जाता है। वे स्वाभाविक नहीं रहे पाते। बच्चों के साथ नकारात्मक दृष्टिकोण रखना घातक हो सकता है। इसलिए ध्यान, मुस्कान, सेवा, प्रोत्साहन और प्रेम को अपनी जीवनचर्या का भाग बनाना चाहिए। इससे आप सुखी, शांत और आनन्दित रहेंगे। इस संसार में भौतिक सुख भी धर्म के प्रभाव से मिलते हैं और आत्मिक सुख भी। दुःखों का बीज है पाप और सुखों का बीज है धर्म। मिट्टी के बिना घड़ा नहीं बन सकता, बीज बिना वृक्ष नहीं बन सकता, वैसे ही धर्म बिना सुख नहीं। अतः पाप को छोड़ो, धर्म को अपनाओ। इसी से आनंद प्राप्ति होगी।

व्यक्ति का अपने आप में सिमटना भी विश्व अंशाति का कारण है। शांति न जाने कहाँ लुप्त हो गई है। हम विश्व शांति की बात कर रहे हैं जबकि शांति हमारे घर में, हमारे मन में भी नहीं है। आज व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों तक ही सीमित है। उसके लिए औरों को चाहे जितना नुकसान सहना पड़ा व्यक्ति केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि तक ही सोच सकता है, विश्व शांति के बारे में नहीं।

विश्व में आज जो भी हिंसा और क्रूरता दिखाई देती है, इसका जिम्मेदार कौन है? इसका जिम्मेदार स्वयं इंसान है। इंसान की क्रूरता इसके लिए

उत्तरदायी है। मनुष्य अपनी मनुष्यता भूल गया है। अपने धर्म को भूल गया है। भगवान महावीर ने कहा है ‘‘क्रूर हृदय मानव तीक्ष्ण शस्त्र के समान है। वह सदैव स्वयं व दूसरों के अहित का कारण बनता है।’’

आज विश्व की अशांति का कारण मनुष्य के अतिरिक्त और कोई नहीं, यदि होता तो इसका हल खोजना आसान था। यदि मनुष्य स्वयं अपने घर को आग लगाने पर तुला है तो इसका हल खोजना आसान नहीं। आज के मनुष्य की शक्ल देखिएः

आदमी अब जानवर की सरल परिभाषा बना है,
भस्म करने विश्व को आज दुर्वासा बना है,
क्या जरूरत राक्षसों को चूसने इंसान को जब,
आदमी ही आदमी की जान का प्यासा बना है।

भगवान महावीर ने कहा है—‘‘मानव तू किसे मारता है। जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है। तू किसी अन्य को नहीं मार सकता है और जिसकी तू रक्षा कर रहा है, जिस पर अपना करुणा रस बहा रहा है, वह भी तू ही है।’’ कहा भी गया हैः

दया पार की कीजिए, दया आपकी होय,
साईं के सब जीव हैं, कोटि कुंजर दोय।।

मनुष्य स्वयं पर ही करुणा कर सकता है और हिंसा भी स्वयं पर ही कर सकता है। लेकिन मनुष्य अज्ञान के कारण अपनी करुणा और हिंसा का पात्र अन्य को मान लेता है। वस्तुतः करुणा करुणावान की विवशता होती है। करुणा की नहीं जाती वह तो सहज ही अंतर हृदय से बहती है। कष्ट कवलित को देख कर करुणावान हृदय स्वयं बह जाता है। सहायता करना उसकी विवशता हो जाती है।

fo’o 'kkfr dk iFk v.kqor% अणुव्रत बदलने का दर्शन है। मनुष्य अपनी प्रकृति का निरीक्षण करे, उसे समझे और उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास करे, अणुव्रत इसीलिए ही है। धर्म का उदय हिंसा को मिटाने के लिए है किंतु वही हिंसा को प्रोत्साहन देने लगा है। धर्म जीवन का

सर्वोपरि तत्व है जो नीचे दब गया है। साम्प्रदायिक कट्टरता उस पर हावी हो गई है। इसी कारण धर्म के नाम पर हिंसा को बढ़ावा मिला है।

इतिहास में सैकड़ों पृष्ठ धर्म के नाम पर हुई हिंसा से रंजित हैं। नैतिकताशून्य धर्म ने धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा दिया है। धर्म गौण हो गया है, सम्प्रदाय मुख्य हो गए हैं। इस संदर्भ में अणुव्रत ने एक नया दृष्टिकोण दिया। उसने संप्रदायमुक्त धर्म की अवधारणा दी।

अणुव्रत केवल धर्म है संप्रदाय नहीं। इस दृष्टि से इसे निर्विशेषण धर्म कहा जा सकता है। धर्म में नैतिकता न हो, यह बात बुद्धिमान्य नहीं है। किंतु नैतिकविहीन धर्म को मान्यता मिल गई है। अणुव्रत ने इस भ्रांति को तोड़ने के लिए प्रयत्न किया है और एक नया स्वर दिया है कि व्यक्ति नैतिक हुए बिना धार्मिक नहीं बन सकता।

उपासना धर्माराधना का माध्यम है। केवल उपासना के बल पर ही धार्मिक बनने वालों को प्रधान बना दिया और धर्म को गौण कर दिया। अणुव्रत ने घोषणा की उपासना का दूसरा स्थान है। प्रथम स्थान धर्म का है। अणुव्रत का मुख्य दृष्टिकोण मुख्य रूप से व्यक्ति निर्माण अथवा व्यक्ति के चरित्र निर्माण से है। वर्तमान स्थिति यह है कि आज चारों ओर हिंसा फैली हुई है। कोई भी विश्व शांति के लिए कामना नहीं करता, करता है तो केवल अपने स्वार्थों को साधने के लिए।

किसी ने कहा हैः–

''दीन–दुःखों का दर्द न जाने उसे अहिंसक क्यों मानें
पर–पीड़ा अपनी न मानें उसे अहिंसक क्यों मानें,
जिसका पड़ोसी भूखा सोए उसे अहिंसक क्यों मानें,
जिसका भाई दुखिया रोए उसे अहिंसक क्यों मानें।''

किसी भी प्रवृत्ति, कार्यक्रम, संस्था, समाज अथवा राष्ट्र का संचालन करने वाला व्यक्ति होता है। यदि व्यक्ति का चरित्र निर्माण न हो तो अच्छी व्यवस्था भी लड़खड़ा जाती है। व्यक्ति के चरित्र निर्माण का प्रयत्न बुनियादी सच्चाई है। अणुव्रत इस सच्चाई को सामने रख कर चल रहा

है। उसकी घोषणा है ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।'' व्यक्ति के सुधार से समाज सुधार संभव है। समाज और राष्ट्र निर्माण का सपना पूर्ण रूप से व्यक्ति निर्माण पर टिका है। अतः स्पष्ट है यदि व्यक्ति का चरित्र अच्छा है तो उससे समाज अच्छा होगा और यदि समाज का विकास उचित प्रकार से होगा तो राष्ट्र भी अच्छा होगा। विश्व में शांति और अहिंसा भी इसी माध्यम से फैलेगी। ✿

आज यह सौभाग्य का विषय है कि विश्व के सभी बड़े राष्ट्र विश्व शांति ही चाहते हैं। एक नाविक जब अपनी नाव में दिन भर सैकड़ों लोगों को इस पार से उस पार पहुंचा सकता है तो कोई कारण नहीं कि जिनकी नसों में ऋषियों और देवताओं का रक्त बहता हो, वे उपयोगी परिवर्तन की वेला में महत्ती भूमिका न निभा सकें।

विश्व शांति व अहिंसा एक–दूसरे के पूरक

◈ tfguk luoky 11वीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

bZश्वर द्वारा रचित मानव उसकी सर्वोत्तम कृति है। वह बुद्धिमान प्राणी है, इसलिए वह अपने अच्छे–बुरे का भेद कर सकता है। ईश्वर ने उसे अद्भुत क्षमताएं प्रदान की हैं। उसने ऊँचे–ऊँचे पर्वतों को काटकर बस्तियाँ बनाई, सड़कें तथा सेतु आदि बनाए हैं। मानव सभ्यता की गाथा उसकी उपलब्धियों तथा पराक्रम की गाथा है, फिर भला वह क्यूं नहीं समझ पाता कि युद्ध से किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

समुचित इंसानियत आज सवालों की काल–कोठरी में कैद है। यह सवाल पारिवारिक, समाज, देश और समस्त विश्व के हैं। हर कहीं जलते सवालों की चिंगारियां फैलकर बिखर रही हैं। अलगाव, आतंकवाद, अव्यवस्था, पर्यावरण, असंतुलन, विश्व अशांति न जाने कितने रूप हैं इन सवालों के। सवालों के समाधान की तलाश करता विज्ञान थक कर हार चुका है। दर्शन भूल–भटककर बुद्धि की भूलभुलैया में जा फँसा है।

इन व्यथापूर्ण क्षणों में तलाश उस मनीषी की है जो धर्म का आच्छादन तो दे, दर्शन को जीवन की राह के रूप में सँवारे और विज्ञान का मार्गदर्शन करे। जिसका चिंतन प्रश्नों के चक्रव्यूह में उलझी मानवता के

लिए मुक्तिकारक समाधान सिद्ध हो क्योंकि भविष्य की परिकल्पना करना न केवल उनके लिए स्वाभाविक होता है बल्कि उनका चिंतन रचनात्मक भी होता है।

आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा है। मनुष्य को उसके स्वार्थ ने जकड़ लिया है और इस स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह आज भयानक अस्त्र–शस्त्रों की होड़ लगाए जा रहा है और सर्वनाश के साधन अणुबम तथा परमाणु बम आदि बनाकर अपनी शक्ति का परिचय देते हुए अशांतमय और भयानक वातावरण का निर्माण करने में लिप्त है।

अतः हम कह सकते हैं कि आज सम्पूर्ण संसार विश्व अशांति के दौर से गुजर रहा है। इस अशांति के कारण कई हैं। इनमें प्रमुख है शक्ति। जो राष्ट्र शक्तिशाली हैं, वह निर्बल राष्ट्रों को अपने जाल में फँसाकर दूसरे राष्ट्रों के खिलाफ उन्हें उकसा कर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं।

आज पूरा विश्व कई भागों में बंटकर परस्पर विनाश के गर्त में जाने का नित्य प्रयास करते दिखाई देता है। सच है आज विश्व बारूद के ढेर पर खड़ा है और कोई भी सिराफिश न जाने कब इस ढेर को पलीता लगाने की मूर्खता कर सकता है, इसलिए आज सम्पूर्ण जगत को विश्व शांति की परम आवश्यकता है।

विश्व शांति आज समस्त जगत के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। द्वितीय महायुद्ध में अमेरिका द्वारा फैंके गए परमाणु बम ने जापान के दो नगरों हिरोशिमा और नागासाकी को अग्निकुण्ड बनाकर रख दिया था, जिससे वहां के लोगों की चिंदी–चिंदी उड़ गई थी जबकि बम आकाश में ही फट गया था। आश्चर्य इस बात का है कि अभी भी मनुष्य स्वयं को सुधार नहीं रहा। शायद 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' चरितार्थ करने लगा है।

हमें इस बात की खुशी है कि हमारा देश भारत इससे दूर शांतिप्रिय है। उसने कोई भी कार्य दूसरों को पीड़ित करने के लिए नहीं किया। वह स्वयं की शांति के साथ–साथ समस्त राष्ट्रों की शांति चाहता है, तभी उसने आक्रमणकारियों को भी गले लगा कर अपना उत्कृष्ट परिचय दिया है।

विश्व शांति है क्या? विश्व शांति का अर्थ है–चुपचाप अन्याय–अत्याचार सहन न करना और न ही निष्क्रियता बल्कि जानबूझकर ऐसे कार्यों को न करना है जिनसे शांति भंग करने या होने का अंदेशा हो, जिससे कोई भी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र या समस्त विश्व दुःखी व परेशान न हो। भारत ने इसके लिए गुट निरपेक्षता, निःशस्त्रीकरण, परमाणु–विस्फोट का विरोध, युद्ध–संतुलन आदि प्रयास किए हैं। शस्त्रों और बमों का निर्माण उसने अवश्य किया पर अपनी सुरक्षा की दृष्टि से, क्योंकि शास्त्र कहते हैं–'जब शत्रु के हाथों में हथियार हो तो उस पर कतई विश्वास मत करो।' बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ गौतम के अनुसार– ''शांति भीतर से आती है, इसे इसके बिना न तलाशें।''

हिन्दू धर्म में ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की अवधारणा गृहीत की गई है जिसका अर्थ है कि पूरा विश्व एक ही परिवार है। इसके अनुसार केवल कलुषित मन ही द्विभाजन और विभेद देखता है। अतः विश्व शांति अंतर से उपजने वाली भावना है जो अहिंसा से सम्भव है क्योंकि विश्व शांति और अहिंसा में घनिष्ठ संबंध है। इतिहास साक्षी है कि किसी भी युग में किसी भी समस्या का समाधान युद्ध नहीं क्योंकि युद्ध हिंसा है और अगर यह सच होता तो आज पूरा विश्व शांतिमय होकर सुख की नींद सोता।

हिंसा से शांति सम्भव नहीं। ईश्वर ने यदि मानव को देवता बनाया तो राक्षसी प्रवृत्ति भी दी है। जब कभी भी अहिंसा पर चर्चा होती है तो गौतमबुद्ध, वर्द्धमान महावीर तथा महात्मा गांधी आदि को याद किया जाता है। उनके लिए अहिंसा सत्य के साक्षात्कार के समान थी। अहिंसा का अर्थ किसी प्राणी के मन, वचन और कर्म से हिंसा न करना है। महावीर जी के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति अपने मन में किसी के लिए बुरी भावना रखता है या कटुवचन बोलता है तो वह भी हिंसा है।

अहिंसा जगत को रास्ता दिखाने वाला दीपक है, जो माता के समान सभी प्राणियों में संरक्षण करने वाली, पाप नाशक व जीवनदायिनी है। महावीर जी के इस कथन से स्पष्ट होता है कि सभी धर्म अहिंसा को श्रेष्ठ बताते है। 'अहिंसा परमोधर्मः' अर्थात् अहिंसा ही परम धर्म है। इससे ही पृथ्वी पर शांति और जीवन शेष रह सकता है। वास्तव में अहिंसा वही

है जो युद्ध रोके और किसी का अहित न करे। अहिंसा विश्वधर्म की धुरी है। विश्व की महानतम् शक्तियां भी जान चुकी हैं कि अहिंसा से ही विश्व के अस्तित्व की रक्षा सम्भव है। अहिंसा के दो हाथ हैः

- अपरिग्रह कपड़े मकान की व्यवस्था करता है और हमें निवस्य नहीं करता।
- अनेकांत मनुष्य जो डिब्बाबंद जिंदगी जीने के लिए मजबूर हो चुका है उसे परम्परा और ग्रहों की रुद्र परतों से बाहर निकालने को प्रेरित करता है।

अहिंसा का मार्ग खांडे की धार पर चलने के समान है जिस डोर पर नट सावधानी से नजर रखकर चल सकता है। अहिंसा की डोर उससे भी पतली है कि जरा चूके और गिरे। पल–पल साधना से ही उसके दर्शन होते हैं, अतः हम कह सकते हैं कि विश्व शांति से अहिंसा का गहरा संबंध है। विश्व शांति का प्रश्न विचारणीय है। इस विषय में हम कह सकते हैं कि भाईचारे की भावना सर्वप्रथम है। सबसे पहले आवश्यक है परस्पर हित–चिंतन की भावना, सुख–दुःख की भावना आदि।

सबके प्रति अपने समान ही व्यवहार करना, अगर यह सद्भावना और श्रेष्ठ विचार प्रत्येक व्यक्ति के मन में उत्पन्न हो जाएं तो फिर विश्व में शांति ही शांति व्याप्त हो जाएगी। इसके लिए मानव कल्याण समारोह आयोजित कर यह प्रेरणा जगानी चाहिए कि हमें पाशविक, शठता, दुर्जनता और दानवता युक्त प्रवृत्तियों से बचना चाहिए। इसके लिए प्रकृतिवादिता दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। हमें पुरातन काल तथा नवीन ऋषियों–कवियों तथा श्रेष्ठ पुरुषों के दिव्य जीवन–संदेश को अपनाना चाहिए।

आज यह सौभाग्य का विषय है कि विश्व के सभी बड़े राष्ट्र विश्व शांति ही चाहते हैं। एक नाविक जब अपनी नाव में दिन भर सैकड़ों लोगों को इस पार से उस पार पहुंचा सकता है तो कोई कारण नहीं कि जिनकी नशों में ऋषियों और देवताओं का रक्त बहता हो, वे उपयोगी परिवर्तन की वेला में महत्ती भूमिका न निभा सकें।

मार्ग में रोड़े भले ही अड़चनें उत्पन्न करते रहें पर काफिला नहीं, यह

समग्र विश्व क्रांति है। सम्रग का अर्थ चिंतन से है। चेतना का चिंतन ही गुण धर्म है, सामर्थ्य का स्त्रोत है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के भयंकर परिणामों पर भी विचार किये जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना यही प्रकट करती है। इससे पारस्परिक झगड़ों और संघषों को हल किया जाता है। आज हर देश युद्ध से कतराने लगा है और युद्ध की संभावना दिखते ही वह शांति प्रयासों को अपनाने लगता है जो अच्छा संकेत है।

विश्व बंधुत्व और अन्तर्राष्टीयता भी भावना ही इसको कायम रख सकती है। विश्व शांति के लिए अहिंसा का मार्ग ही अपनाना एक सुखद कल्पना ही नहीं अपितु सत्य भी है। अंत में मैं यही कहूंगी कि विश्व शांति और अहिंसा में गहरा संबंध ही नहीं अपितु ये एक दूसरे के पूरक भी हैं। यह विश्व शांति के लिए परमावश्यक भी है, तभी यह शांति हमेशा के लिए कायम रह सकती है। ✿

हिंसा विश्व शांति का आधार नहीं

◈ çxfr tk'kh 9वीं
गीता आदर्श विद्यालय
सोलन, हिमाचल प्रदेश

शांति स्थापना के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाना एक सुखद कल्पना ही नहीं, सत्य है। हम देख रहे हैं कि आज दुनिया के बड़े-बड़े शक्तिशाली देश भी युद्ध से घबराने लगे हैं और युद्ध की सम्भावना दिखाई देते ही शांति प्रयासों का मार्ग अपनाते हैं। यह एक अच्छा संकेत है।

bतिहास साक्षी है कि किसी भी युग में किसी भी समस्या का समाधान युद्ध से नहीं होता। युद्ध हिंसा है और यदि हिंसा से समस्याएं हल होतीं तो आज सारा विश्व शांतिमय होकर सुख की नींद सोता। किंतु यह भी सत्य है कि प्रकृति ने यदि मनुष्य को देवता बनाया है तो राक्षस भी बनाया है। पुण्य के साथ पाप को भी रचा है। दिन का प्रकाश है तो रात्रि का अन्धकार भी और सृजन के साथ नाश भी। फिर भला अहिंसा के साथ हिंसा कैसे नहीं होगी। मनुष्य की सद्वृत्ति एवं दुष्वृत्ति में सदैव संघर्ष रहा ही है। प्रश्न उठता है कि फिर क्या यूं ही संघर्ष को चलने दें? कदापि नहीं।

मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है। ईश्वर ने उसे अद्भुत क्षमताएं प्रदान की हैं। उसने ऊँचे–ऊँचे पर्वतों को काटकर बस्तियाँ बनायीं, सड़कें बनायीं, सेतु बनाये। मानव सभ्यता की गाथा उपलब्धियों की गाथा है। मनुष्य के अपरिमित पराक्रम की गाथा है। फिर वह भला क्यों नहीं समझ पाता कि युद्ध से किसी भी समस्या का निराकरण संभव नहीं।

महाभारत के युद्ध के बाद युधिष्ठिर ने जब आत्म–विवेचन किया तो

उन्होंने भी यही महसूस किया कि हम गर्हित करने में लगे हुए थे। दुर्योधन ने अन्तिम समय में उनसे कहा कि 'युधिष्ठिर! मैं वीरों को लेकर स्वर्ग चला, तुम निपूती माताओं और विधवाओं को लेकर राज्य करो।' युधिष्ठिर के कानों में दुर्योधन के यह वचन विकराल सत्य बनकर गूँजते रहे और उन्होंने यही सोचा की सच तो यह है कि हिंसा का आदि भी अधर्म है, मध्य भी अधर्म है और अन्त भी अधर्म है।

अधर्म की बात सोचना भी हिंसा है। फिर उस योजना का क्रियान्वयन भी हिंसा है और अन्त तो हिंसा है ही। पर वही बात है कि युद्ध तो समाप्त हो चुका था और कुरूक्षेत्र की भूमि पर रक्त और माँस का दलदल बन गया था, बड़े–बड़े महारथी पराक्रमी योद्धा महाभारत के यज्ञकुण्ड में आहूत हो चुके थे।

यही स्थिति अशोक के सामने भी आयी थी। उसने अपनी तलवार पर जीवन भर विश्वास किया और कलिंग राज्य के साथ जो भीषण युद्ध हुआ, जिसमें हज़ारों सेनानी मृत्यु के घाट उतार दिये गए। अशोक ने कलिंग पर विजय भी प्राप्त कर ली, किन्तु इस विजय का परिणाम अशोक के लिए अत्यन्त निराशा और हताशा लेकर आया। कलिंगवासियों का क्रन्दन उसके हृदय को विदीर्ण कर गया और उसने प्रतिज्ञा की कि अब वह जीवन भर कभी युद्ध नहीं करेगा। किन्तु क्या सचमुच अशोक पूर्णतः हिंसा से मुक्त हो पाया? वह जिस सिंहासन पर बैठा था वहाँ बैठने वाला कोई भी शासक जानकार या अन्जाने में हिंसा से मुक्त नहीं हो सकता।

अकबर जैसे प्रतापी एवं महान् सम्राट को भी हिंसा से मुक्ति नहीं मिली। भारतवर्ष के अधिकांश भू–भाग पर अधिकार हो जाने के बावजूद अकबर की लिप्सा समाप्त नहीं हुई। महाराणा प्रताप ने अकबर की आधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया। अकबर की विशाल सेना के सामने महाराणा प्रताप की सेना कुछ भी नहीं थी। युद्ध हुआ और महाराणा प्रताप बिना आधीनता स्वीकार किए अपने परिवार के साथ जंगलों में चले गए।

अकबर भी वीर था और महाराणा प्रताप भी परमवीर दोनों ही अपनी–अपनी

जिद पर अड़े रहने के कारण हिंसा पर हिंसा किए जा रहे थे। अकबर यह सोच सकता था कि यदि कोई राजा उसकी आधीनता स्वीकार नहीं करना चाहता तो उसे स्वतंत्र रहने दिया जाये, किन्तु अकबर शक्तिशाली था इसलिए उसके अहं ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। उसके विपरीत महाराणा प्रताप के राज्य पर आक्रमण किया। अकबर की गरिमा शायद इसीलिए ज्यादा होती कि वह खुशी से महाराणा प्रताप की इच्छानुसार स्वतंत्र रूप से राजा बने रहने देता, लेकिन मनुष्य की महत्वाकांक्षा भाँति–भाँति से हिंसा के लिए उकसाती है।

दूसरे को मानसिक रूप से कष्ट पहुँचाना भी हिंसा है। गांधी जी ने एक स्थान पर कहा है कि हिंसा केवल रक्तपात करना ही नहीं है, मारपीट करना ही नहीं है, किसी के विषय में बुरा सोचना भी हिंसा ही है। मन में कुविचार लाना मानसिक हिंसा है। इसीलिए यदि हिंसा से मुक्त रहना चाहते हो तो मनसा, वाचा, कर्मणा इन तीनों से मुक्त रहना पड़ेगा। यही कारण है कि भारत को आजाद कराने के लिए गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का मार्ग चुना। वे जानते थे कि युद्ध की समस्या इसका निराकरण नहीं है।

हिंसा से हिंसा बढ़ती है, घृणा से घृणा। विश्व बन्धुत्व और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना में वृद्धि किये बिना शांति स्थापित नहीं हो सकती। संयुक्त राष्ट्र ने मिस्र युद्ध को रोकर विश्व शांति को भंग होने से बचाया था। इराक में भी क्रांति द्वारा प्रजातंत्र की स्थापना हुई लेकिन आज इराक पर अमरीकी कब्जा है। लेबनान पर इजरायल के हमले जारी हैं। उत्तर कोरिया कभी–कभी मिसाइल परीक्षण करके विश्व शांति को भंग करने का भाव जगाता है। ऐसी घटनाओं से विश्व शांति तृतीय विश्व युद्ध के रूप में भंग हो सकती है।

यदि आज सभी देशों के नेताओं ने समझदारी से काम नहीं लिया तो विश्व शांति को भयंकर खतरा हो सकता है अतीत में जब–जब भी युद्ध हुए हैं, दुनिया में किसी कोने में भी युद्ध हुए हैं तो अन्य देशों न मिलकर वही प्रयास किया कि युद्ध को शीघ्र समाप्त करा दिया जाए।

शांति स्थापना के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाना एक सुखद कल्पना ही नहीं, सत्य है। हम देख रहे हैं कि आज दुनिया के बड़े–बड़े शक्तिशाली देश भी युद्ध से घबराने लगे हैं और युद्ध की सम्भावना दिखाई देते ही शांति प्रयासों का मार्ग अपनाते हैं। यह एक अच्छा संकेत है। यदि हम अपने को आज अधिक सभ्य कहने लगे हैं तो यह भी आवश्यक है कि हम युद्ध और कलह के मार्ग को छोड़कर प्रेम और शांति का मार्ग अपनायें।

पिछले दो महायुद्धों में भयानक नरसंहार को देखकर सारा विश्व यह जान चुका है। बड़े–बड़े राष्ट्रों के शासक सदैव यही प्रयास करते हैं कि कठिन से कठिन स्थिति में भी युद्ध न करना पड़े। बीच–बीच में भले शोले भड़कते हैं लेकिन उन्हें शीघ्र ही बुझा दिया जाता है। इसीलिए हिंसा को विश्व शांति का आधार नहीं माना जा सकता। अहिंसा ही विश्व शांति का आधार बन सकता है।

महावीर स्वामी एवं भगवान वुद्ध ने अहिंसा का मार्ग अपनाया और वही मार्ग संसार को दिखाया। प्रेम और करुणा ही सबसे बड़े मन्त्र थे। मन, वाणी और कर्म से किसी भी प्राणी को कोई कष्ट नहीं देना अहिंसा का मूल मंत्र है। अशोक ने जब बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया तो सुदूर देशों में भी अहिंसा का ही प्रसार किया। उन्होंने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को भिक्षुणी बनाकर बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए सिंहलद्वीप भेजा था। महात्मा गाँधी ने भी भगवान बुद्ध के सत्य, प्रेम और अहिंसा को सर्वाधिक उचित अस्त्र बनाया था।

महान् कवियों ने भी हमेशा सूक्ति रूप में अहिंसा का ही उपदेश दिया है। यजुर्वेद में कहा गया है कि ''मनुष्यों और जंगली पशुओं की हिंसा मत करो।'' वेदव्यास ने कहा–'अहिंसा सबसे उत्तम धर्म है।' महात्मा गाँधी ने कहा ''अहिंसापूर्ण सत्य का ही आचरण करके संसार को अपने चरणों में झुका सकते हो। अहिंसा सत्य का प्राण है, इसके बिना मनुष्य पशु है।'' महात्मा बुद्ध ने कहा था–'अहिंसा परमो धर्मः।' इसीलिए यदि अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है तो विश्व में शान्ति स्थापना के लिए अहिंसा का ही सहारा लेना उचित होता है।

भारत ने युद्ध को कभी महत्व नहीं दिया। रामायण और महाभारत के युद्धों के बाद भारतीयों की ओर से कभी कोई युद्ध शुरू नहीं हुआ। भारत के इतिहास में कोई भी काल ऐसा नहीं है जब भारत ने किसी दूसरे देश पर आक्रमण किया हो किन्तु आततायियों से अपने देश की रक्षा के लिए यदि युद्ध करना पड़ता है तो यह विवशता है। अतः युद्ध चाहे हो या न हो, युद्ध के लिए सैनिकों को हमेशा तैयार रहना आवश्यक है। इसे किसी भी तरह हिंसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आत्मरक्षा का अधिकार जैसे प्रत्येक व्यक्ति को है वैसे ही देश का है।

रहा सवाल विश्व शांति का। यदि विश्व का प्रत्येक देश इस सिद्धान्त को समझ ले तो स्वयं ही सर्वत्र अहिंसा का साम्राज्य होगा। निःसन्देह विश्व के प्रत्येक देश को यह प्रयास करना चाहिए कि वह युद्ध से बचे। आज के युग में युद्ध की बात सोचना भी भयानक परिणामों को न्योता देना है। क्योंकि मनुष्य के हाथ में विज्ञान ने ऐसे–ऐसे अस्त्र पकड़ा दिये हैं, जिनसे वह स्वयं को और समूची मानव जाति को पलभर में तहस–नहस कर सकता है। यदि नन्हें से बच्चे के हाथ में मशाल पकड़ा दी जाए, तब जो परिणाम होगा, वही वर्तमान समय में युद्ध करने का परिणाम हो सकता है। ✿

मनुष्य हमेशा से सुख और शांति प्राप्त करना चाहता है लेकिन शांति का सही मार्ग उसके हाथ नहीं लगा। वह भौतिक साधनों से शांति की कामना करता है। यह धारणा आकाश कुसुम की भांति निराधार है। शांति बाहर नहीं, वह तो भीतर में है। उसकी प्राप्ति का साधन है समता।

'संयमः खलु जीवनम्' को अपनाएं

◈ **vnick** 11वीं
सरस्वती विद्यालय
अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली

Vहिंसा क्या है...? क्या केवल जीव हत्या न करना ही अहिंसा है? नहीं, प्रत्येक प्रकार की हानि या क्षति न करना अहिंसा है। किसी भी प्रकार की पीड़ाकारक एवं ध्वंसात्मक कार्यवाही में संलग्न न होना अहिंसा है। अतः अहिंसा का मतलब यह नहीं है कि किसी की हत्या न करना या किसी का अहित न सोचना। बल्कि किसी के हित के लिए प्रयासरत रहना, हर किसी का भला सोचना और उसे क्रियान्वित करने का प्रयास करना अहिंसा है।

अहिंसा एक परम गुण है। जिस प्रकार सत्य, दया, अस्तेय और परोपकार इत्यादि से हृदय परमोज्जवल होता है, उसी प्रकार अहिंसा से भी आत्मा का विकास होता है। जब किसी मनुष्य के हृदय में अहिंसा या दूसरों को दुख न पहुँचाने का भाव होता है तो उसका यह तात्पर्य है कि उसके हृदय में उन गुणों का विकास पूर्ण रूप से हो चुका है, जिन्हें हम सत्य, दया, धर्म और परोपकार कहते हैं। यही कारण है कि हम अहिंसा को सर्वोपरि गुण समझते हैं, और उसे ''परम धर्म की उपाधि'' से विभूषित करते हैं।

अहिंसा का महत्व अहिंसा का संबंध आध्यात्मिकता से है। आज का युग विज्ञान और भौतिकता का युग है। विज्ञान और भौतिकता ने आज के मानव

को अत्यधिक अर्थ–केंद्रित और सुख–लोलुप बना दिया है। आज का मानव केवल अपने ही सुखों और अपनी ही प्रगति की ओर देखता है।

आज मनुष्य जिस सुख और शांति के लिए व्याकुल है, वह उसे अहिंसा से ही प्राप्त हो सकती है। अहिंसा से मानव को वह सुख और शांति उपलब्ध होगी, जिसका उपभोग वह सहस्त्रों वर्षों तक बड़े आनंद से कर सकता है। अहिंसा से मानव में द्वेष, कलह और पारस्परिक संघर्ष की भावना न रहेगी, तब वह बड़ी शांति के साथ मिलजुल कर अपना जीवन व्यतीत कर सकेगा।

अहिंसा और विश्व आज मनुष्य जिस सुख और शांति के लिए व्याकुल है, वह उसे शांति से ही प्राप्त हो सकती है। जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में अहिंसा कल्याण की वर्षा करती है, उसी प्रकार बड़े–बड़े राष्ट्रों के जीवन में भी अहिंसा से सुख शांति की संवर्द्धना होती है।

आज के जगत में कहीं भी सुख–शांति नहीं संसार के सभी राष्ट्रों के भीतर आज चीत्कार हो रहा है। दुनिया की यह वीभत्सा उसी समय समाप्त हो सकती है, जब मानव अहिंसा के महत्व को समझेगा और उसके हृदय में हिंसा के प्रति घृणा उत्पन्न होगी। अहिंसा ही एक साधन है जिससे आज के मानव जगत का हाहाकार बंद हो सकता है। यदि मानव सुख और शांति चाहता है तो उसे शीघ्र ही अहिंसा की शरण लेनी चाहिए।

मनुष्य हमेशा से सुख और शांति प्राप्त करना चाहता है लेकिन शांति का सही मार्ग उसके हाथ नहीं लगा। वह भौतिक साधनों से शांति की कामना करता है। यह धारणा आकाश कुसुम की भांति निराधार है। शांति बाहर नहीं वह तो भीतर में है। उसकी प्राप्ति का साधन है समता। अहिंसा का अर्थ है स्वयं निर्भय होना और दूसरों को निर्भयता प्रदान करना। भगवान् महावीर ने कहा–दुःख हिंसा प्रसूत है। सारे दुःख हिंसा से पैदा होते हैं। बैर–विरोध और संघर्ष ये मनुष्य को कभी सुखी नहीं बना सकते। अपितु दुःखी बनाते हैं। यह तथ्य उसकी समझ से परे है कि वह क्या करे?

आज व्यक्ति अपने आचरण से भ्रष्ट होता जा रहा है। क्योंकि मनुष्य में

स्वार्थ–वृत्ति इतनी बढ़ गई कि सत्य, प्रामाणिकता, ईमानदारी जैसे मानवीय गुण जीवन से लुप्त होते जा रहे हैं। ऐसे नैतिक एवं चारित्रिक दुर्भिक्ष के वैषक्यपूर्ण युग में व्यक्ति–व्यक्ति को अपना आत्म–निरीक्षण करना चाहिए। अणुव्रत जीवन जीने की एक अद्‌भुत कला है। इस पर किसी का लेबल नहीं है। यह किसी संप्रदाय का खंडन नहीं करता क्योंकि यह तो संपूर्ण मानव जाति का है। दूसरे शब्दों में कहे तो यह सार्वभौम मानव–धर्म है।

आज के इस अशांत एवं वैमनस्य के वातावरण में समता और शांति का दिव्य–संदेश देने वाला उपक्रम है। अणुव्रत विवेक जागृति का एक अमोघ–मंत्र है। अणुव्रत का मूल उद्‌देश्य है मानव–मानव में अहिंसा, मैत्री एवं सद्‌भावना का सतत् विकास करना। अतः यदि हम आचार–संहिता को संकल्प स्तर पर स्वीकार करें तो निःसंदेह हमारे जीवन में वास्तविक सुख और आनंद का स्त्रोत प्रस्फुटित होने लगेगा।

प्राचीन काल से लेकर आज तक हमारे देश में अनेक महान् विभूतियों तथा युगपुरुषों ने जन्म लिया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ऐसी ही महान् विभूति थे, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सत्य व अहिंसा का प्रयोग कर यह सिद्ध कर दिखाया कि सत्य व अहिंसा सभी बलों से श्रेष्ठ और अधिक शक्तिशाली है। गांधीजी ने अहिंसा के इस अमोघ अस्त्र को संपूर्ण मानव समाज को प्रदान किया। यह ऐसा अस्त्र था जिसके सामने तोप–बंदूक तो क्या बड़े–से–बड़ा एटम बम भी पराजित हो जाए।

आज हमारे समाज में चारों ओर सामाजिक राजनीतिक हिंसा का बोलबाला है। कश्मीर की समस्या, पूवोत्तर, असम–नागालैण्ड आदि में जनजातीय पृथकतावाद, बिहार में बढ़ रही बंदूकी संस्कृति, उग्रवाद आदि से निपटने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा है। समाज की हर तह, यहाँ तक कि घर–परिवार तक में कटु हिंसा व्याप्त हो चुकी है। इस परिस्थिति में गांधीजी के सिद्धांत ही हमें सही दिशा की ओर जाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

हमें अपने जीवन में ''संयमः खलु जीवनम्'' को अपनाना है। हमारे छोटे

से छोटे व्यवहार में प्राणी मात्र, यहाँ तक कि सूक्ष्म जीवों तक का अहित नहीं होना चाहिए। हम सभी अगर इस विचारधारा का अनुसरण करें, तो नित्य ही हमारा समाज स्नेह और सौहार्दपूर्ण वातावरण में रमते हुए उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

विश्व शांति की स्थापना भी अहिंसा के मार्ग द्वारा ही हो सकती है। विज्ञान की उन्नति हमें जनकल्याण और मानव मूल्यों को उन्नत बनाने के लिए करनी चाहिए न कि प्रजा को पीड़ित और तबाह करने के लिए। आज अनेक देश परमाणु शक्ति संपन्न बनकर अपने गर्व का प्रदर्शन करने लगे हैं। आधुनिक शस्त्रों द्वारा अपने हितों की रक्षा करने की प्रतिद्वंद्विता में वे बौद्धिक संयम खो चुके हैं।

'असंयम' का हिंसा से सीधा वास्ता है। अपने से छोटों और निरीह असहायजनों पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन और आतंक भी हिंसा है। यदि संयम का पालन हो तो अहिंसा का वातावरण स्वतः जन्म लेगा और यह संपूर्ण सृष्टि आनंद और मंगल से ओतप्रोत हो जाएगी।

अच्छे संस्कार ही संयम और अहिंसक विचारों को जन्म देते हैं। आत्मचिंतन और मनन से व्यक्ति विनम्र एवं त्यागी बनता है। इन सभी आचरणों से ओत–प्रोत मानव ही सच्चा संत होता है। जब हम संत हो जाएं तो हिंसा हमारे तेज के समक्ष टिक नहीं पाएगी। तब हम स्वतः ही अहिंसा के मार्ग को अपनाने लग जाएंगे। ✿

विश्व शांति के लिए भाईचारे की भावना सबसे पहले जरूरी है। भाईचारे, मेल-मिलाप की भावना और परस्पर हित-चिंतन की भावना विश्व शांति की दिशा में महान् कदम और सार्थक कार्य होगा। परस्पर दुःख-सुख की भावना और कल्याण-स्थापना की भावना विश्व-शांति के लिए ठोस कदम होगा।

हिम्मत व ईमानदारी से दुनिया बनेगी स्वर्ग

◈ fç;dk tu 11वीं
श्री बालाजी गणेश मारवाड़ी
उ.मा. कन्या विद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश

vkधुनिक युग को यांत्रिक युग कहा जाता है। चारों तरफ यंत्रों का बोलबाला है। यंत्रों का प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में हो रहा है। विज्ञान ने इस युग में बड़ा विकास किया है। आज का मानव अंधा होकर धन के पीछे दौड़ रहा है। यह अंधी दौड़ कब तक चलेगी? इसका अंतिम ध्येय क्या है? यह मानव के लिए किस सीमा तक लाभप्रद है? अनिश्चित है। इसमें भाग लेने वाले मानव भी अपने ध्येय को अभी तक निश्चित नहीं कर सके।

यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि इस दौड़ का परिणाम बड़ा भीषण है। इस दौड़ ने विश्व में अशांति का बीज बो दिया है। इस दौड़ में भाग लेने वाले मानव अशांत हैं, दुःखी हैं। मानव जीवन के चरम लक्ष्य को भुला चुके हैं और आए दिन आपस में युद्ध किया करते हैं।

वर्तमान समय में व्यक्ति असभ्य एवं अनुन्नत राष्ट्रों का शोषण करने में जरा भी नहीं हिचकिचाता है। मानव के हाथों से ही मानवता नष्ट हो रही है, कराह रही है और त्रस्त होकर तड़प रही है। वर्तमान समय में व्यक्ति सर्वाधिक शोषण, संहार, असभ्यतापूर्वक व्यवहार करने में लगे हुए

हैं। यंत्रों की आधुनिकता के कारण मानव जाति का महत्व कम होता जा रहा है। पहले सुनने में आता था कि आधुनिक उपकरणों के लिए जानवरों का ही शोषण होता है लेकिन आज के समय में मनुष्य को भी नहीं छोड़ रहे हैं। यदि हमें विश्व शांति बनाए रखनी है तो इसके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाईचारा है।

fo'o 'kkafr dh leL;k,a% विश्व शांति की सबसे बड़ी समस्याएं आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार है। ये समस्याएं विश्व में बहुत तेजी से फैल रही हैं। आज आतंकवाद ने इतना सिर उठा लिया है कि हम प्रतिदिन समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आम जनसम्पर्क के द्वारा कही–न–कहीं अवश्य हाय–हत्या की खबर सुन–देख सकते हैं। आतंकवाद का ज्वर आज अधिक हो गया है क्योंकि समझौता सफल नहीं हो रहा है।

lkEçnkf;drk% हमारे देश में विभिन्न प्रकार के धर्मावलम्बी रहते हैं। सनातन धर्मी, आर्यसमाजी, ब्रह्मसमाजी, शैव, शाक्त, वैष्णव, कबीरपंथी, दादूपंथी, निरंकारी, सिख, ईसाई, मुसलमान, पारसी, शिया–सुन्नी आदि। सब अपने–अपने धर्म–सम्प्रदाय का प्रचार करते हैं, एक–दूसरे से टकराते हैं और अपने धर्म सम्प्रदाय को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए समय–समय पर प्रदर्शन, जुलूस, नारेबाजी, भूख हड़ताल, घेराव और दंगा–फसाद आदि किया करते हैं। साम्प्रदायिकता के अभिशाप से आज हमारा देश पूर्ण रूप से अशांत और असुरिक्षत अनुभव कर रहा है। इस देश की आंतरिक स्थिति की नींव हिल–डुल रही है।

tula[;k of)% जनसंख्या आकाश बेल की तरह बेरोक–टोक और बिना परवाह किए बढ़ती जा रही है। जन्मदर की वृद्धि और मृत्युदर की कमी के कारण जनसंख्या बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान समय में वस्तुओं के भाव दिन–प्रतिदिन चढ़ते जा रहे हैं। जीवन स्तर बढ़ने की अपेक्षा गिरता जा रहा है जिससे देश संतुलित नहीं हो पाता। जनता की आवश्यकताओं को देखते हुए देश का उत्पादन बहुत ही थोड़ा प्रतीत होता है। इस कारण बुद्धिमत्ता तो इसी बात में है कि बढ़ती हुई आबादी को रोका जाए।

Hk"Vkpkj% भ्रष्टाचार की पैठ आज इतनी अधिक हो चुकी है कि इससे मुक्ति मिलना बहुत ही कठिन लग रहा है। चारों ओर दुराचार, व्याभिचार, बलात्कार, अनाचार आदि सभी कुछ भ्रष्टाचार के ही प्रतीक हैं। भ्रष्टाचार के नाम–रूप तो अलग–अलग हैं, लेकिन उनके कार्य और प्रभाव लगभग समान हैं या एक दूसरे से बहुत ही मिलते–जुलते हैं। भ्रष्टाचार के मुख्य कारणों में व्यापक असंतोष पहला कारण है। जब किसी को कुछ अभाव होता है और उसे वह अधिक कष्ट देता है तो वह भ्रष्ट आचरण करने के लिए विवश हो जाता है। भ्रष्टाचार का दूसरा कारण स्वार्थ सहित परस्पर असमानता है।

dSlS LFkkfir gks fo’o ’kkafr% आज विश्व शांति की आवश्यकता बहुत अधिक हो गयी है। सचमुच में आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा मृत्यु की गोद में चला जा रहा है। मनुष्य ने मनुष्य को अपने स्वार्थों में जकड़ लिया है। उसे आज कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। उसे केवल स्वार्थ दिखाई दे रहा है। इस प्रकार संपूर्ण विश्व एक बहुत बड़ी अशांति के दौर में पहुँच चुका है।

जीवन में अनुशासन की विशेष रूप से जरूरत पड़ती है। अनुशासन ही किसी व्यक्ति को सभ्य नागरिक एवं चरित्रवान बनाने में सहायक है। इसके विपरीत अनुशासनहीनता व्यक्ति, समाज के लिए हानिकारक होती है। अनुशासन से व्यक्ति आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वासी बनता है। इससे वह प्रगति–पथ पर अग्रसर होता चला जाता है। व्यक्तिगत प्रगति तथा मानसिक प्रगति भी अनुशासन से हो सकती है।

विश्व शांति के लिए भाईचारे की भावना सबसे पहले जरूरी है। भाईचारे, मेल–मिलाप की भावना और परस्पर हित–चिंतन की भावना विश्व शांति की दिशा में महान् कदम और सार्थक कार्य होगा। परस्पर दुःख–सुख की भावना और कल्याण–स्थापना की भावना विश्व शांति के लिए ठोस कदम होगा।

विश्व शांति के लिए अपने ही समान समझना और अपने ही समान आचरण करना, एक ठोस और प्रभावशाली विचार होगा। अगर इस तरह

की सद्भावना और श्रेष्ठ विचार प्राणी–प्राणी के मन में उत्पन्न हो जाएगा तो किसी प्रकार से विश्व में अशांति और अव्यवस्था की भावना नहीं हो सकती है।

fo'o 'kkfr o vfgalk विश्व शांति और विश्व को समान दशा में लाने के लिए हमें मानव कल्याण समारोहों का आयोजन करना चाहिए। इसके द्वारा जन–जन में यह प्रेरणा जगानी चाहिए कि हमें किस प्रकार से अमानवीय और पाशविक दुर्भावनाओं से बचा जा सके। हमारे अंदर जो कठोरता, दुर्जनता और दानवता का प्रवेश हो चुका है, वह किस प्रकार से समाप्त हो सकता है। इसके अंदर किस प्रकार सज्जनता और मानवता उत्पन्न हो सकती है।

इस प्रकार के विचार हमें विभिन्न प्रकार की योजनाओं और कार्यक्रमों के द्वारा अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। यह तभी संभव है जब हम भौतिकवादी दृष्टिकोण का परित्याग करें। इसके स्थान पर हमें प्रकृतिगामी और प्रकृतिवादी दृष्टिकोणों को अपनाना चाहिए।

सात्विक जीवन अपने आप में महत्वपूर्ण जीवन माना जाता है। जीवन में धन कमाओ तो सात्विक ही, क्योंकि सात्विक धन ही सही धन माना जाता है। व्यापार भी सात्विक ही होना चाहिए जिसमें ज्यादा हिंसा न हो। जिसमें संकल्पी हिंसा होती हो ऐसे धंधे का धन का त्याग कर देना चाहिए, कभी भी उसे अपनाना नहीं चाहिए।

सात्विक धन का सात्विक कार्य में उपयोग करना चाहते हो तो अपने समाज का एक बैंक खोलिए और इसका नियम होना चाहिए कि इसका पैसा मात्र सात्विक कार्यों में ही उपयोग किया जाऐगा। उस बैंक का नाम आप 'अहिंसा बैंक' रख सकते हैं। इसके माध्यम से धन के दुरुपयोग से बच सकते हैं।

विश्व शांति के लिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम भौतिकता के बने जंगल से आध्यात्मिकता के सपाट मैदान की ओर लौट आएं। इस अर्थ में हमें अपने पुरातन काल के ऋषियों और मुनियों के अलौकिक और दिव्य जीवन–संदेश को समझना होगा। उनका हमें अनुसरण करना

होगा। विश्व शांति के प्रयास में हमें महान् दार्शनिकों और महात्माओं के जीवन सिद्धांतों और आचरणों को अपना होगा। उनके अनुसार चलना होगा। इसके परिणामों को हमें समझ करके दूसरे को इससे प्रभावित करना होगा, तभी विश्व शांति का सार्थक और ठोस प्रयास होगा। ✿

मन को शांत बनाएं हम

◈ **nh{kk t|u** 10वीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
कोटा, राजस्थान

आधुनिक वैज्ञानिक और डॉक्टर भी शोध और अनुसंधान के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अहिंसात्मक जीवन ही दीर्घायु और स्वस्थ जीवन का आधार है। विश्व शांति का अमोघ उपाय मानना होगा ओर समर्थन करना होगा। अहिंसा समष्टि में आने से पहले व्यक्ति के जीवन में आना आवश्यक है। क्योंकि व्यक्तियों से ही विश्व बनता है।

vkज विश्व विनाश के कगार पर खड़ा है। केवल एक बारीक–सी चिंगारी उठने की देर है। कौन, कब इस चिंगारी को उठा दे, यह खतरा भी सभी विकसित राष्ट्रों को बना हुआ है। ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में सभी को शांति की तलाश है। आज विश्व के कई विकसित राष्ट्रों में दवाई से अधिक नींद की गोलियाँ बिक रही हैं। सभी के पास धन–दौलत के भंड़ार भर गये हैं किन्तु संतुष्टि नहीं है।

भोजन है पर भूख नहीं। मखमली गद्दे और एयर कन्डीशनर हैं पर बिन गोली नींद नहीं आती। दूसरी ओर एक बड़ा वर्ग गरीब राष्ट्रों में बेकारी और भुखमरी से त्रस्त है। आवश्यक सुविधाएँ जुटाने के लिए भी अपराधवृत्ति की शरण ले रहा है। कुछ स्वार्थी तत्व इन दोनों वर्गों को लड़ाकर ही खुश रहना चाहते हैं क्योंकि वे अन्य को उन्नति करता हुआ नहीं देख सकते। इन सभी विरोधाभासों के बीच में विश्व की शांति खो गई है।

इसे प्राप्त करने के लिए हिंसा का तांडव और आतंकवाद का बोलबाला है। आखिर विश्व में शांति और अहिंसा की स्थापना कब हो और कैसे हो?

fo'o e v'kkfr d dkj.k% अशांति के मुख्य कारण अति महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या और राग–द्वेष ही हैं। अशांति चाहे विश्व में हो या राष्ट्र में, किसी समाज में हो या परिवार में, सभी में ये ही कारण जिम्मेदार होते हैं। यदि हम विश्व में शांति चाहते हैं तो पहले व्यक्तिगत सोच को ऊँचा उठाना होगा, फिर पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सोच में नैतिकता, सहृदयता लानी होगी तभी हम एक–दूसरे की उन्नति को सहन कर सकेंगे और हिंसा से बच सकेंगे।

उदारवादी सोच, परोपकारी सोच ही अहिंसा का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। दूसरों के दिल हिंसा से नहीं अहिंसा से बदले जा सकते हैं। अहिंसा ऐसा मार्ग है जिससे दुश्मन को भी दोस्त बनाया जा सकता है। शक्तियों के टकराव को रोकर उन्नति में उपयोग किया जा सकता है। अहिंसा एक प्राकृतिक सत्य ही है क्योंकि हिंसक प्राणी, राष्ट्र या व्यक्ति भी स्वयं के लिए अहिंसा ही चाहता है। कोई भी मरना नहीं चाहता। आखिर अहिंसा के अमोघ उपाय हो अपनाने के लिए पहले समझना आवश्यक है।

vek?k mik;% जब–जब भी अहिंसा की चर्चा चलती है तो अहिंसा को जैन धर्म और बौद्ध धर्म से जोड़कर देखा जाता है। यह सत्य है कि धर्ममय जीवन भव्य भवन है तो अहिंसा उसकी नींव। परंतु इस प्रकार अहिंसा को किसी धर्म या जाति विशेष तक सीमित कर देना स्वयं अहिंसा की हिंसा होगी। अहिंसा तो जन–जीवन में ही नहीं अपितु प्राणी मात्र में, प्रकृति के कण–कण में समायी हुई है। इसे केवल गहराई से समझने की आवश्कता है और समय की पुकार है। आज जलते हुए विश्व के लिए अहिंसा और 'जिओ और जीने दो' के नारे को अपनाने की महत्ती आवश्यकता है। सभी धर्मों में अहिंसा का पर्याप्त उपदेश है और महापुरुषों ने जीवन में अनेक कष्ट उठाकर भी अहिंसा का ही अनुसरण किया है।

आधुनिक वैज्ञानिक और डॉक्टर भी शोध और अनुसंधान के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अहिंसात्मक जीवन ही दीर्घायु और स्वस्थ जीवन का आधार है। विश्व शांति का अमोघ उपाय मानना होगा और समर्थन करना होगा। अहिंसा समष्टि (विश्व) में आने से पहले व्यष्टि (व्यक्ति) के

जीवन में आना आवश्यक है क्योंकि व्यक्तियों से ही विश्व बनता है। अहिंसा और शाकाहार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। व्यक्ति की सोच उसके खान–पान, रहन–सहन, वातावरण और संगति से प्रभावित होती है। अहिंसात्मक वातावरण के लिए अहिंसा की उत्पत्ति और उपयोग को इस प्रकार समझा जा सकता है 'अहिंसा कायरता नहीं, वीरों का उपक्रम है।'

fgalk lw{e :i ,oa mRifŸk% जैन दर्शन के अनुसार रागादि भावों की उत्पत्ति ही हिंसा है। और रागादि विभाव–भावों का अभाव ही अहिंसा है। यहाँ रागादि भावों में राग–द्वेष, क्रोधादि कषायें एवं पाप परिणाम सम्मिलित हैं। यह जानकर आश्चर्य होगा कि राग अर्थात् प्रेम–प्यार के भाव हिंसा का कारण है तो फिर द्वेष–भावों और क्रोधादि की बात ही क्या? पर वास्तविक सत्य तो यह ही है। द्वेष और क्रोधादि की नींव में भी राग ही गर्वित है। अगर हम शांति से विचार करें तो समझ आ जाएगा।

प्रेम और राग से ही चिंगारी शुरू होती है। हम अगर इतिहास के अतीत पर नजर डाले तो विश्व में जो व्यापक हिंसा वाले युद्ध हुए हैं, उनमें जर, जोरन्त और जमीन ही मुख्य कारण रहे है। ऐतिहासिक रामायण का युद्ध सीता के कारण हुआ। यहाँ सीता से राम को राग और प्रेम ही था। सीता से द्वेष रावण को भी नहीं था वरना हरण ही क्यों करता और सीता से राग नहीं होता तो राम को ससम्मान वापस लौटा देता तो रामायण का युद्ध ही टल जाता।

महाभारत का युद्ध पाँच गाँवों के राजा के लिए लड़ा गया। यहाँ भी पांड़वों को राजा और भूमि से राग ही था और कौरवों को भी राग ही था। यदि कौरव दे देते या पांडवों ने पाँचों गांवों का राग ही छोड़ दिया होता तो महाभारत का युद्ध टल जाता।

भारत–चीन, भारत–पाकिस्तान के बीच होने वाले युद्ध भी जमीन के कारण ही हुए हैं और हो रहे हैं। यहाँ मैं राष्ट्र–प्रेम और कर्तव्य से पीछे हटने की बात नहीं कर रही हूँ। मैं तो रागादि भावों से हिंसा के परिप्रेक्ष्य में पुष्टि करने हेतु उदाहरण दे रही हूँ। आज विभिन्न देश, समाज,

परिवार और यहाँ तक की निकट संबंधी और खून के रिश्तों में भी संपत्ति संबंधी विवादों और हिंसक परिणति के समाचार आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिलते हैं। दहेज के लिए हत्याएँ भी धन से राग के कारण होती हैं। दोनों पक्ष यदि राग भावों को सीमित करें,संयम रखें, अपरिग्रह पर ध्यान दें तो अनेक झगड़ों को सुलझाना आसान हो सकता है। हम धैर्य से विचार करें कि भौतिक संपत्तियाँ तो जीवन के अंतिम क्षणों में किसी के साथ जाने वाली नहीं हैं। सम्राट अशोक, सिकन्दर महान् की ऐतिहासिक हिंसा और राग छूटने पर इस बात के साक्षी हैं। सिकन्दर भी अन्त समय में कह गया कि

खूब थी धन–दौलत, सभी हाली–बहाली थे।
सिकन्दर जब गया तो इस दुनिया से दोनों हाथ खाली थे।

आज का पुरुषार्थ ही कल का भविष्य बनेगा। कई बार हिंसा के विशेष प्रयास करने वाले को तो हिंसा का दोष लग जाता है जिसकी सजा उसे कर्मों से ही मिलती है। जैसे कोई किसी को मार रहा है और रास्ते से गुजरने वाले ने उसकी प्रशंसा कर दी, वह भी हिंसा में भागीदार बन जाता है। वर्तमान में सामूहिक हिंसा अथवा दुर्घटनाएं ऐसे ही कर्मों के फलस्वरूप होती हैं जबकि फाँसी पर चढ़ाने वाले व्यक्ति को इतना दोष नहीं लगेगा जितना की फाँसी की सज़ा देने वाले को लगेगा। भारत का कानून भी यही मानता है कि किसी निर्दोष को सज़ा न मिले।

युद्धों में होने वाली हिंसा, डॉक्टर द्वारा ऑपरेशन में होने वाली हिंसा भी इसी प्रकार की हिंसा होती है। उनके भाव मारने के नहीं होते बल्कि कर्तव्य पालन के कारण ऐसी हिंसाएं होती हैं। अतः उन हिंसाओं में उन्हें दोष कम लगता है अथवा नहीं भी लगता है क्योंकि इसमें उनका उद्देश्य नहीं होता किसी को नुकसान पहुँचाना। यदि विश्व में शांति चाहते हैं तो पहले स्वयं के मन को शांत और पवित्र बनाना होगा जो शाकाहार के द्वारा ही संभव है। हमारा मन पवित्र होगा तो वचन और कार्य भी पवित्र होंगे जो मानवता और परोपकार का इतिहास रचेंगे। ✿

दुर्बलता का प्रतीक नहीं अहिंसा

◈ Lokfeuh Ijh'k [kkufoydj 12वीं
आदित्य बिरला पब्लिक स्कूल
खरच, कोसम्बा, सूरत, गुजरात

स्पष्ट है कि भारत विश्व शांति के लिए हमेशा योगदान करता आया है, बल्कि उसके लिए हमेशा से प्रयत्नशील भी है। भारत सभी देशों के साथ मधुर संबंध स्थापित कर विश्व में शांति की स्थापना करना चाहता है। गुट-निरपेक्षता में भारत का पूर्ण विश्वास है।

vkचार्य चाणक्य का कथन है– ''शांति के समान कोई तप नहीं, संतोष से बढ़ कर सुख नहीं, तृष्णा से बढ़ कर कोई व्याधि नहीं और अहिंसा के समान कोई धर्म नहीं।''

विश्व शांति संसार की समृद्धि और प्रगति की सूचक है, मानव कल्याण के लिए नित्य–प्रति चिंतन और अन्वेषण का उद्‌गम है; विश्व के राष्ट्रों में परस्पर प्रबल सहयोग की कामना है। विश्व शांति विकासशील देशों में अपने पांव पर खड़े होने की सहायता की शर्त है। यह नए–नए शस्त्रास्त्रों की खोज और निर्माण का कारण है। विश्व शांति ही औद्योगिक प्रगति और हरित क्रांति का माध्यम है।

भारत वैदिक काल से ही 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' (सब सुखी हों तथा सभी निरोग हों) की कामना करता आया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' उसका सिद्धान्त वाक्य है। अहिंसा का वह प्रचारक है। त्याग और परोपकार उसको घुट्टी में मिले हैं। 'बहुजन हिताय' उसकी कामना है तथा 'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्' उसका लक्ष्य है।

भारतीय संस्कृति में मनीषियों ने 'अहिंसा परमो धर्मः' कह कर अहिंसा का महत्व समझा और प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है। श्रीमद्भागवत में कहा गया है–'अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम तप है, अहिंसा परम ज्ञान है और अहिंसा ही परम पद है।'

युद्ध और अशांति का यह वातावरण मानव धरती और सृष्टि पर आरम्भ से ही बनता आया है। युद्ध भी होते रहे हैं। अन्य कारणों से भी अशांति फैलती रही है परंतु तब यह सब कुछ एक सीमित क्षेत्र में, सीमित लोगों में ही हुआ करता था। अन्य क्षेत्रों और वहां के भी आम लोगों पर उस सब का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा करता था।

कुछ समय बाद स्थितियां या तो स्वतः ही समाप्त हो जाया करती थीं, या फिर थोड़े बहुत संघर्ष के बाद उनका अंत हो जाया करता था। पर मानव–सभ्यता के वैज्ञानिक–यांत्रिक, औद्योगिक विकास के आज के युग में स्थितियां पहले जैसी नहीं रह गईं। अब केवल अनेक प्रकार के हिंसक शस्त्रों का वैज्ञानिक निर्माण कर उनकी ऐसी प्रयोग–विधियां भी विकसित कर ली गई हैं कि जो घर बैठे–बिठाए सारे संसार को विनाशक या घातक गतिविधियों से प्रभावित कर सकती हैं। हिंसा मानव स्वभाव का अंग बन गई है।

जब इस प्रकार का वातावरण चारों ओर छा रहा हो तो स्वाभाविक है कि आखिर इस सबका समाधान क्या और कैसे हो सकता है? कैसे व्यक्तियों, समाजों, जातियों, धर्मों और राष्ट्रों को अशांति–अराजकता फैलाने वाले तत्वों से दूर रखा या बचाया जा सकता है? इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर, सभी समस्याओं का मात्र एक ही हल सम्भव हो सकता है और वह है–अहिंसा।

व्यक्ति से लेकर राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय हर स्तर तक अहिंसा ही सब प्रकार की अराजकता, अशांति से मानवता और उसके जीवन की शांति की रक्षा कर सकती है लेकिन तभी, जब अहिंसा को एक सहज मानवीय धर्म, मानवता का उदात नियम और अनुशासन बनाकर व्यक्ति से लेकर राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हर मनुष्य समाज, जाति, धर्म और प्रशासन अपना ले।

fo'o 'kkfr e Hkkjr dk ;xnku% भारत बुद्ध और गांधी का देश है। भारत सदा से ही विश्व शांति का पक्षधर रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब भारत की वैदेशिक नीति बनी, तब उसका आधार भी विश्व शांति ही रखा गया। इतना ही नहीं, भारत का नया संविधान भी विश्व शांति का प्रेमी कहलाया। विश्व शांति के क्षेत्र में जितने ठोस कदम भारत ने उठाए हैं, उतने किसी भी देश ने नहीं उठाए हैं। विश्व शांति के संबंध में भारत द्वारा उठाए गए कुछ ठोस कदम इस प्रकार हैं:

- भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य के रूप में विश्व शांति के अनेक प्रयास किए हैं। भारत संयुक्त राष्ट्र संघ का सबसे बड़ा समर्थक है।
- विश्व में विविध शक्ति गुटों का निर्माण विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा है। यही कारण है कि भारत किसी भी गुट में सम्मिलित नहीं हुआ।
- विश्व शांति कायम रखने के लिए भारत ने 'पंचशील' सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।
- कोरिया और कांगो में संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से भारतीय सेना ने शांति और सुव्यवस्था की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।
- सन् 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया था। उस समय भारत ने डटकर मुकाबला किया। यदि संघर्ष चलता तो तृतीय विश्वयुद्ध भी हो सकता था, किंतु भारत ने विश्व शांति के उद्देश्य से लाया गया कोम्लबो प्रस्ताव मान लिया था।
- विश्व शांति की स्थापना के उद्देश्य से भारत ने कश्मीर की समस्या को संयुक्त राष्ट्र संघ में भेज दिया।
- नवंबर 1988 में अपने पड़ोसी राष्ट्र मालद्वीव में सेना भेजकर जो सहायता की थी, उसकी विश्व भर में सराहना की गई।
- श्रीलंका में भारत ने अपनी शांति सेना भेजकर सच्ची मानवता का परिचय दिया।

स्पष्ट है कि भारत विश्व शांति के लिए हमेशा योगदान करता आया है, बल्कि उसके लिए हमेशा से प्रयत्नशील भी है। भारत सभी देशों के साथ मधुर संबंध स्थापित कर विश्व में शांति की स्थापना करना चाहता है। गुट निरपेक्षता में भारत का पूर्ण विश्वास है। ✿

हिंसा को सभ्यता के विकास से जोड़ना अनुचित

वर्तमान में विश्व शांति की स्थिति अच्छी नहीं है। इसका मुख्य कारण मज़हबी या धार्मिक टकराव होकर देश की शांति को भंग करना है। इसके मुख्य दो ही कारण खोजे-माने जा सकते हैं। पहला कारण है कट्टरवादी जाहिलता। यह जाहिलता कुछ लोगों के मन-मस्तिष्क में इस देश में रहते हुए भी उन्हें अन्य मजहबी देशों से जोड़े हुए है।

◈ HkO; egrk 12वीं
श्री जी पब्लिक स्कूल
नाथद्वारा, राजस्थान

vहिंसा सही अर्थों में साहस का पर्याय है, वास्तव में यह शूरवीरों का भूषण है। आतंक एवं दमन का प्रतिकार भी अहिंसा में ही आता है। इस शब्द का दुरुपयोग न हो, न उसकी ओट में अपनी कायरता छिपाएं। इस आध्यात्मिक गुण की व्याख्या आज की परिस्थिति में सही रूप में किया जाना जरूरी है। अहिंसा का सबसे अच्छा अर्थ देते हुए भारतीय मनीषियों ने प्राणी मात्र में ईश्वर के दर्शन करना अहिंसा बताया है।

vfgalk D;k g% अहिंसा का वास्तविक अभिप्राय है–प्राणीमात्र के प्रति सहानुभूति का भाव रखना; सहानुभूति का तात्पर्य है–दूसरे की मनः स्थिति के साथ अपनी मनःस्थिति को जोड़कर उस जैसी अनुभूति करना। आवश्यक नहीं कि दूसरा व्यक्ति हमारे जैसे परिष्कृत स्वर का हो। उसका चिंतन एवं मस्तिष्कीय विकास जिस सीमा तक जिस दिशा में हुआ होगा, वह उसी दृष्टिकोण से विचार कर सकने में समर्थ होगा।

गाँधीजी अहिंसा को कायरों का नहीं, शूरवीरों का भूषण कहा करते थे। इसे उन्होंने वीरों का मार्ग बताया था। अहिंसात्मक प्रतिकार से उनका आशय था–बिना किसी को कष्ट दिए ऐसा नैतिक दबाव उत्पन्न करना

कि अत्याचारी को हारकर सही रास्ते पर आना पड़े। निश्चित ही इसके लिए बड़े साहस, संतुलन और धैर्य की आवश्कता है। अहिंसा के द्वारा लड़े गए स्वाधीनता संग्राम में हजारों स्वतंत्रता सेनानी अपनी पीठ पर लाठी और बन्दूक के कुंदों को वार सहते थे परंतु आंदोलनों से अलग नहीं होते थे।

vfgalk dk egRo% भारतीय धर्मशास्त्रों में अहिंसा का बड़ा महत्व बताया गया है। इसका सामान्य अर्थ है किसी की हिंसा न करना, निरपराध प्राणियों को न सताना और न ही किसी को कष्ट पहुँचाना। इस अर्थ के कारण बहुत से लोग भ्रम में पड़ जाते हैं कि जब किसी को किसी भी प्रकार से न सताना और कष्ट न देना अहिंसा है तो अपराधियों और हिंसक प्राणियों के लिए निर्द्वंद्व होने की संभावना खुल जाती है।

किसी को कष्ट पहुँचाने की रीति–नीति का अर्थ यह नहीं है कि अपराधियों और दूसरों को हानि पहुँचाने वालों को भी दंडित न किया जाए, उनके कृत्यों का दमन करने के लिए बरती गई दंड नीति को मनीषियों ने ''वैदिकी हिंसा हिंसा न भवती'' कहकर उल्लेख किया है। वैदिकी हिंसा से तात्पर्य है–विचार और विवेकपूर्वक अवांछनीय तत्वों का दमन।

fo'o 'kkfr o vfgalk dh fLFkfr% वर्तमान में विश्व शांति की स्थिति अच्छी नहीं है। इसका मुख्य कारण मज़हबी या धार्मिक टकराव होकर देश की शांति को भंग है। इस के मुख्य दो ही कारण खोजे–माने जा सकते हैं। पहला कारण है कट्टरवादी जाहिलता। यह जाहिलता कुछ लोगों के मन–मस्तिष्क में इस देश में रहते हुए भी उन्हें अन्य मज़हबी देशों से जोड़े हुए है। वे लोग मानवता या भारत की समन्वयवादी मानव–चेतना का अर्थ नहीं समझते। अतः मज़हबी जुनून और दूसरे देशों के लोभ–लालचपूर्ण उकसावे में आकर विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न करते रहते हैं।

दूसरा कारण राजनीतिक अदूरदर्शी महत्वाकांक्षा भी अनेक विषमताओं, अराजकताओं और धार्मिक दंगे–फिसादों की जड़ मानी जाती है। धार्मिक

जुनून और राजनीतिक महत्वाकांक्षा का आज इस देश में कुछ इस सीमा तक बोलबाला हो चुका है कि अक्सर लोग अपने दादा–परदादा और माता–पिता के अस्तित्व, धर्म और मज़हब तक को भी नकारने लगे हैं। यह बात उनके और राष्ट्र दोनों के लिए शुभ–सुखद नहीं कही जा सकती। जितनी जल्दी इस प्रकार की घातक चेतनाओं से छुटकारा पाया जा सके, यह उचित है।

Hkkjrh; rFkk if'peh nf"Vdk.k चरम लक्ष्य की प्राप्ति अहिंसक हुए बिना संभव नहीं। अध्यात्म विद्या के आचार्यों का मत है कि हर मनुष्य शनैः–शनैः अपने चरम लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है, जबकि समाज और सभ्यता पर हम दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि उनकी उन्नति के साथ–साथ अराजकता और अव्यवस्था घटने के बजाए और बढ़ी ही है। ऐसा क्यों? यहाँ यह कहना अनुचित न होगा कि जो लोग हिंसा को सभ्यता के विकास के साथ जोड़ते हैं, वे गलती करते हैं।

यह सत्य है कि बुद्धिवाद के विकास के साथ–साथ तोड़फोड़ जैसी गतिविधियां बढ़ी हैं, पर मूल कारण बौद्धिक प्रखरता नहीं, वरन् आत्मिक प्रखरता का अभाव ही है। प्राचीन काल के लोग बुद्धिहीन थे इसलिए हिंसा नहीं होती थी, यह कहना ठीक नहीं होगा। सत्य तो यह है कि उन दिनों बुद्धि के विकास के साथ चेतना का परिष्कार भी उसी अनुपात में सम्पन्न हुआ था और बुद्धि पर विवेक का, प्रज्ञा का सदा अंकुश लगा रहता था। इसलिए तब के समाज में आजकल जैसी अराजकता नहीं दिखाई पड़ती थी।

'दि सेन सोसायटी' नामक ग्रन्थ में मूर्धन्य मनीषी एरिक फ्राम ने भी इसी आशय का मन्तव्य प्रकट करते हुए लिखा है–''सभ्य समाज स्वस्थ हो, यह जरूरी नहीं पर स्वस्थ समाज के लिए सभ्य अर्थात् सुसंस्कृत होना नितांत आवश्यक है। सुसंस्कृत हुए बिना समाज स्वस्थ हो ही नहीं सकता।'' ज्ञातव्य है कि जहाँ उन्होंने 'सभ्य' शब्द संस्कृति के अर्थ में प्रयुक्त किया है वहाँ संस्कृति अर्थात् चिंतन शैली है। भारत की विचार पद्धति आत्मा और चेतनापरक है। आत्मा की प्रधानता को अभिव्यक्त करते हुए यहाँ के दार्शनिक कहते हैं–''देयर इज ए सोल विदिन दि

बॉडी'' अर्थात् हर शरीर में एक आत्मा निवास करती है, जबकि इस संबंध में पाश्चात्य मान्यता पदार्थपरक है। वे कहते हैं प्रत्येक शरीर अपने अंदर एक जीवात्मा कैद रखता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पूर्वी चिंतन में आत्म को प्रमुखता दी गई है, जबकि पाश्चात्य प्रणाली में पंचभौतिक शरीर की। अतः हमारा अन्तःकरण यदि परिष्कृत हुआ, तो वह बाह्य दरिद्रता को मिटाने के लिए हिंसा का नहीं, अध्यवसाय का सहारा लेगा और कुछ ईमानदारीपूर्वक उपार्जन होगा। अपराध अपरिष्कृत अन्तःकरण का परिणाम है।

अतः भारत एक सर्वधर्म समन्वयवादी देश है। समन्वय–साधना आरम्भ से ही भारतीय सभ्यता संस्कृति की मूल भावना और प्रवृत्ति रही है। इसी कारण भारत की सभ्यता–संस्कृति को बहुमुखी एवं विविध धर्मों–तत्वों की समन्वित सभ्यता–संस्कृति कहा–माना जाता है। सहज मानवीय सद्भावना और विश्व–शांति हमारे महान् देश का महान् आदर्श है। ✿

वास्तव में आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा है। मनुष्य ने मनुष्य को अपने स्वार्थों से जकड़ लिया है। उसे आज कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। आज इंसान अशांतमय और भयानक वातावरण का निर्माण करने में लगा हुआ है और सब कुछ भूल चुका है कि क्या उचित है और क्या अनुचित।

जगह–जगह किए जाएं मानव–कल्याण समारोह

◈ iitk <kdk 10वीं
पठानिया पब्लिक स्कूल
गोहाना रोड, रोहतक, हरियाणा

vkज विश्व भर में अशांति इतनी तेजी से फैल रही है जैसे शरीर में कोई बीमारी। हिंसा भी एक भयंकर बीमारी के समान है जो विश्व भर को घेरे हुए है। जिस जहां में मानवीय गुणों और इंसानियत की कभी मिसाल दी जाती थी, जहाँ बापू के सिद्धांतों पर चलना लोग अपना धर्म समझते थे, जहाँ लोगों के दिलों में प्रेम, शांति और अपनत्व की भावना थी, वहीं आज लोगों के हृदयों में नफ़रत और आगे बढ़ने की होड़ के अलावा और कुछ नहीं है।

आज भाई–भाई के खून का प्यासा हो गया है। मनुष्य केवल अपने सुख और समृद्धि के बारे में सोचता है। वह बल और छल से दूसरों से आगे बढ़ने की होड़ में लगा हुआ है और यही सब आगे चल कर हिंसा का रूप धारण कर लेता है। हर मसले का हल केवल लड़ाई–झगड़ा नहीं होता और इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण हमारे सामने है–बापू (महात्मा गाँधी), जिन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चल कर हमें स्वतंत्रता दिलवाई।

उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ आवाज़ ज़रूर उठाई लेकिन अहिंसात्मक रूप से और इसी मार्ग पर चलते–चलते उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई। बड़ी से बड़ी

कठिनाई का सामना भी उन्होंने शांतिपूर्वक किया और मरते दम तक लोगों को भी सदा सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की सीख देते रहे।

उन्होंने सदैव एक–दूसरे के साथ शांतिपूर्ण व्यवहार करने की प्रेरणा दी क्योंकि यह वह हथियार है जो पत्थर दिल इंसान के हृदय को भी पिघला सकता है। जितना क्रोधपूर्ण हमारा व्यवहार होगा, उतना ही हिंसात्मक हमारा जीवन।

आज विश्व भर में फैली अशांति का एक बड़ा कारण है जात–पात व धर्म जिसकी शुरूआत इंसान ने ही की और जो आज उसी के विनाश का कारण बनी है। एक ही ईश्वर द्वारा बनाए गए लोग आज अलग–अलग धर्म और जातियों में बँट गए है। यही बँटवारा आज एक प्रचलन न रहकर घर–घर की ज़रूरत बन गया है।

अहिंसा का एक और मुख्य कारण यह भी है कि आज विश्व भरके अनेक सबल राष्ट्र दूसरे निर्बल और शक्तिहीन राष्ट्र को अपने चंगुल में फँसाए रखने के लिए भारी उद्यम करते हैं। इसके साथ ही वे अपनी निजी शक्ति को बढ़ाते हैं और अपने सम्पर्कों को भी अन्य राष्ट्रों के साथ बढ़ाते हैं। वे दूसरे राष्ट्रों को उकसाने या भड़काने की कोशिश में बराबर लगे रहते हैं। इस प्रकार से आज पूरा विश्व कई भागों में बँटा हुआ परस्पर विनाश के गर्त में पहुँचने के लिए नित्य आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है।

यही वजह है कि आज विश्व शांति की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। वास्तव में आज मनुष्य विनाश की कगार पर खड़ा है। मनुष्य ने मनुष्य को अपने स्वार्थों से जकड़ लिया है। उसे आज कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। आज इंसान अशांतमय और भयानक वातावरण का निर्माण करने में लगा हुआ है और सब कुछ भूल चुका है कि क्या उचित है और क्या अनुचित।

इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व एक बहुत बड़ी अशांति के दौर में पहुँच चुका है। यह स्थिति वर्तमान और भविष्य के लिए निश्चय ही दुखद और चिन्तनीय है। आज विश्व का हर एक कोना हिंसा के साये में घुट कर किसी प्रकार साँसें ले रहा है। विश्व में आतंकवाद, उग्रवाद, उल्फावाद आदि का

ज़ोर–दबदबा कुछ इस कदर फैल रहा है जिससे उस का हिंसा से बच पाना मुश्किल क्या असंभव हो गया है।

आज विश्व शांति की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। विश्व शांति कैसे आ सकती है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। हम कह सकते हैं कि विश्व शांति के लिए सबसे पहले ज़रूरी है भाईचारे की भावना। भाईचारे, मेल–मिलाप, प्रेम तथा अपनत्व की भावना विश्व शांति की दिशा में महान् कदम और सार्थक कार्य होगा। एक–दूसरे के प्रति सुख–दुःख की भावना विश्व शांति की दिशा में एक सार्थक पहल होगी तथा एक ठोस कदम होगा।

विश्व शांति के लिए सबको एक समान समझना एक ठोस और प्रभावशाली विचार होगा अगर इस तरह की सद्भावना और श्रेष्ठ विचार प्राणी–प्राणी के मन में उत्पन्न हो जाएगा तो किसी प्रकार से विश्व में अशांति व हिंसा की भावना नहीं हो सकती है।

विश्व–शांति के लिए हमें मानव–कल्याण समारोहों का आयोजन करना चाहिए। इसके द्वारा जन–जन में यह प्रेरणा जगानी चाहिए कि हम किस प्रकार से अमानवीय और पाश्विक दुर्भावनाओं से बचें । हमारे अंदर जो पशुता, दानवता और दुर्जनता प्रवेश कर चुकी है, वह किस प्रकार समाप्त हो सकती है? हमारे अंदर किस प्रकार सज्जनता और मानवता उत्पन्न हो सकती है? इस प्रकार का विचार करके हमें विभिन्न प्रकार की योजनाओं और कार्यक्रमों को अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए।

विश्व शांति के लिए हमें प्रयास करना चाहिए कि हिंसा से बने वन से आध्यात्मिकता के सपाट मैदान की ओर लौट आएँ। इसके लिए हमें अपने महापुरुषों, ऋषियों और मुनियों के अलौकिक और दिव्य जीवन को समझना होगा। विश्व शांति के लिए हमें महात्माओं के जीवन सिद्धांतों और आचरणों को अपनाना होगा। हमें एकजुट होकर 'हिंसा' नामक बीमारी का सामना कर इसे सदा–सदा के लिए समाप्त कर देना चाहिए।

हम सभी विश्ववासियों का यही प्रयास होना चाहिए कि हमारे विश्व से अशांति का ऐसा सफाया हो जाए कि सारा विश्व सदैव अहिंसक विश्व कहलाता रहे। ✿

शांति व अहिंसा से ही मिलती हैं खुशियां

◈ lykuh xkck 12वीं
दिल्ली पब्लिक स्कूल
विद्युत नगर, दादरी, उत्तर प्रदेश

आखिर हम पूरे विश्व में शांति बनाए रखने के लिए क्या कर सकते हैं? शांति बनाए रखने का सबसे उत्तम एवं प्रभावकारी उपाय है-स्वयं शांत बने रहना। अगर हम 'ईंट का जवाब पत्थर से' देने लगे, यानि अगर हम भी आतंकवाद और हिंसा रोकने के लिए स्वयं हिंसक बन गए तो यह पूरा विश्व नष्ट हो जाएगा।

vkज विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती है—शांति और अहिंसा कैसे संभव हो? आज पूरा विश्व शस्त्रों की होड़ में अंधा होकर अपनी मृत्यु का सामान इकट्ठा कर चुका है। द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका द्वारा फेंके गए परमाणु बम ने जापान के दो नगरों हीरोशिमा और नागासाकी को अग्निकुण्ड बनाकर रख दिया, ये दोनों महानगर देखते ही देखते स्वाहा हो गए थे। लोखों निवासी मौत का शिकार हो गए थे। प्रलय से भी भयंकर दृश्य समुपस्थित हो गया था।

आज दुर्भाग्य से उस परमाणु बम से भी सैकड़ों गुणा शक्तिशाली बम बनाए जा चुके हैं। वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार आज सारे विश्व के पास इतनी विस्फोटक शक्ति है कि वह सारी धरती को पन्द्रह बार समूल नष्ट कर सकता है। आश्चर्य का विषय यह है कि अब भी मनुष्य अपनी मृत्यु की वस्तुओं को और अधिक इकट्ठा करता चला जा रहा है। आज 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' वाली कहावत सिद्ध हो रही है।

भारत प्रारम्भ से ही शांतिप्रिय देश रहा है। भारत भूमि अहिंसा की पुजारी है। शांति से जीवन यापन करना ही यहाँ के लोगों का लक्ष्य रहा है।

'जियो और जीने दो' का नारा ही उसका धर्म है। भारत ने कभी भी कोई ऐसा कार्य नहीं किया है, जिससे विश्व भर में शांति भंग हो। भारत ने तो आक्रमणकारियों को भी गले से लगाया है। प्रसाद जी ने सुंदर शब्दों में कहा है–

'विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।
भिक्षु होकर रहते सम्राट दया दिखलाते घर–घर घूम।।'

यहाँ के राजाओं ने अत्याचार, दमन और संघर्ष का मार्ग छोड़कर त्याग और तपस्या का रास्ता अपनाया। बुद्ध, महावीर, अशोक से लेकर गाँधी तक की परम्परा भारत की उज्ज्वल थाती है। हमने आज़ादी की लड़ाई में भी अहिंसा का मार्ग अपनाया। भारत की धरती पर जन्मे सभी धर्मों ने शांति से जीने की सीख दी है। बौद्ध और जैन धर्म तो मूलतः अहिंसात्मक हैं। भारत सदा से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को बल देता रहा है। भारतीय संस्कृति की मूल भावना को वाणी देते हुए जयशंकर प्रसाद कहते हैं–

'औरों को हँसते देखो मनु
हँसों और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्मृत कर लो
सबको सुखी बनाओ।'

इसी विश्व–मानवतावाद और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना के कारण भारत विश्व शांति का प्रबल पक्षधर रहा है। 'विश्व शांति एवं अहिंसा' की भावना को सभी राष्ट्रों के बीच फैलाने के लिए संयुक्त राष्ट्र भी पीछे नहीं है। संयुक्त राष्ट्र की कई कोशिशों के बावजूद आतंकवाद और हिंसा की आग अभी भी नहीं बुझ पाई है।

आखिर हम पूरे विश्व में शांति बनाए रखने के लिए क्या कर सकते हैं? शांति बनाए रखने का सबसे उत्तम एवं प्रभावकारी उपाय है–स्वयं शांत बने रहना। अगर हम 'ईंट का जवाब पत्थर से' देने लगे, यानि अगर हम भी आतंकवाद और हिंसा रोकने के लिए स्वयं हिंसक बन गए तो यह पूरा विश्व नष्ट हो जाएगा।

सरदार बल्लभभाई पटेल का कहना था कि–'लोहा कितना भी गर्म हो जाए, परंतु लोहार का हथोड़ा ठंडा ही रहना चाहिए।' इसकी दृष्टि से अगर हम भी ऐसा ही प्रयास करेंगे, तभी हम सफल हो सकते हैं। इसी तरह भारत ने भी कभी भी जानबूझकर विश्व–शांति को भंग नहीं किया है। बल्कि जहाँ भी पड़ोसी देशों से टकराव आया, भारत ने सदा शांति–समझौते ही नीति को अपनाया है।

जब आधुनिक विश्व अमेरिका और रूस के दो विरोधी पलड़ों में बँटकर परस्पर कट–मरने को उद्यत हो रहा था, तब भी भारत ने ही विश्व को 'गुटनिरपेक्षता' की नई नीति दी थी। भारत ने स्पष्ट घोषणा की थी कि हम अमेरिका या रूस के पक्षधर बनकर विश्व युद्ध की आग में घी नहीं डालेंगे, बल्कि एक तृतीय विश्व का निर्माण करेंगे, जो इन गुटों से अलग रहकर शांति स्थापित करने का प्रयास करेंगे। सौभाग्य से यह गुटनिरपेक्ष मंडल निरंतर विस्तृत होता जा रहा है। यह भारत द्वारा दिए गए उपाय एवं नीति का प्रभाव है कि विश्व अपने विनाश को छोड़कर सुरक्षा का उपाय सोच रहा है।

भारत ने निःशस्त्रीकरण की नीति का ज़ोर–शोर से प्रचार किया है। भारत का कहना है कि विश्व में आज जितने भी परमाणविक हथियार बना लिए हैं, उनसे मुक्ति प्राप्त की जाए। आजकल चल रही शस्त्रों की होड़ को भी रोका जाए। ऐसा नहीं है कि भारत केवल निःशस्त्रीकरण के भाषण ही देता है, उसने व्यवहार में ऐसा करके भी दिखाया है।

भारत ने हमेशा से ही विश्व को अहिंसा व सत्याग्रह का अमूल्य ज्ञान दिया है। गौतमबुद्ध, महावीर, अशोक एवं महात्मा गाँधी के त्याग, अहिंसा, सत्याग्रह, शांति को देखकर कई लोग प्रभावित हुए। उनमें से एक हैं सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका के 44वें राष्ट्रपति बराकर ओबामा जिन्हें नोबल शांति पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। विश्व के सबसे बलवान देश के राष्ट्रपति ने यह स्वयं बताया था कि वे भी महात्मा गांधी के बहुत बड़े समर्थक हैं। इस तरह हमें यह पता चलता है कि हमारे देश ने किस तरह विश्व में अहिंसा व शांति का संदेश देकर अपना अलग स्थान बनाया है।

शांति स्थापित करने के लिए सबसे बड़ा आधार है–शक्ति। जिसके पास शक्ति होती है, विश्व उसी की बात सुनता है। अमेरिका चाहे तो अपने धन–साधन या शस्त्र बल पर किसी भी समस्या का शांतिपूर्ण समाधान जुटा सकता है। अमेरिका के पास इतना बल है कि वह कुछ भी कर सकता है। अगर अमेरिका चाहे तो वह स्वयं ही पूरे विश्व में शाांति और अहिंसा का प्रतीक बन सकता है और पूरे संसार में शांति और अहिंसा का संदेश दे सकता है।

अगर हम इस पूरे संसार में शांति व अहिंसा फैलाना चाहते हैं, तो हमें ऐसे छोटी–छोटी बातें याद रखनी ही होगी। हमें यह ध्यान में रखना होगा कि हिंसा व युद्ध बर्बादी ही लाते हैं शांति और अहिंसा से संसार में खुशियाँ फैलती हैं। ✿

ताकतवर बनने की होड़ विश्व शांति में बाधक

◈ itk lkuh 12वीं
बिड़ला बालिका विद्यापीठ
पिलानी, राजस्थान

अगर प्रतिस्पर्धा का बोलबाला कम हो जाए, पृथ्वी जगत पर सब प्राणियों में अपनत्व की भावना आ जाए तो निश्चय ही समूचा विश्व एक-दूसरे की भावना को समझेगा और इससे आंतरिक गतिरोध दूर होगा तथा एक परिवार की तरह इन्सान-इन्सान से , एक देश दूसरे देश से सहृदय होकर अपना विस्तार कर सकता है तथा निज प्रभुता स्थापित कर सकता है।

या देवी सर्वभूतेषु, शांति रुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।

प्रस्तुत श्लोक के अनुसार शांति आज की ही नहीं आदिकाल से चली आ रही वह अदृश्य शक्ति है जिसके बल पर दैवीय, मानवीय, असुरी प्रवृत्ति को भी जीता जा सकता है। शांति चाहे विश्व शांति के रूप में हो, सर्वत्र छिटकी हुई ऐसी प्रतीत होती है जैसे बरसात के बाद इन्द्रधनुष प्रतीत होता है।

विश्व–शांति का शाब्दिक अर्थ है एक अखण्ड विश्व यानि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की स्थापना करना तथा अहिंसा का अर्थ है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की नीति को दिल से स्वीकारना। शांति व अहिंसा दोनों एक–दूसरे के बंधन में बंधे हुए हैं, एक–दूसरे के पूरक हैं जो पूरे संसार को एकता के सूत्र में बाँध सकते हैं, बशर्ते कि दोनों का समायोजन पूर्ण रूपेण निष्पक्ष किया जाए। विश्व शांति को अहिंसा के बूते पर तभी संभाल सकते हैं जब शांति अहिंसा के मज़बूत कंधों पर टिकी हो। आइए देखते हैं कि अहिंसा किस तरह संसार में शांति स्थापित करने में अपना वर्चस्व हासिल कर

सकती है? निम्न सोपानों के द्वारा हम उपरोक्त विषय का संक्षिप्त ब्योरा जान सकते हैं।

fo'o 'kkfr o vfgalk dk lkiku

- **le; dh mi;kfxrk%** कहावत है 'खाली दिमाग शैतान का घर होता है।' अगर शैतान को खाली रहने ही नहीं दिया जाए तो आसानी से हम शांति की शुरूआत कर सकते हैं जो आगे विस्तृत रूप लेकर विश्व शांति कायम कर सकती है। गाँधीजी ने इसी शांति को अपने जीवन काल में कायम करने का भरसक प्रयास किया था।

- **çfrLi/kkZ dk var%** वर्तमान में अतीत से ही प्रतिस्पर्धा का ज़ोर चल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो पूरी पृथ्वी को एक प्रतियोगी बना दिया गया है जिसके द्वारा हर काम करने की होड़ बढ़ती जा रही है। हर राष्ट्र अपने आप को शक्तिशाली बनाने की होड़ में इतना अंधा हो गया है कि उसके सामने सिर्फ निजत्व की भावना रह गयी। विश्व के सामने वह एकमात्र सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनकर ख्याति अर्जित करना चाहता है। यदि इस स्पर्धा को प्रारम्भ से ही लम्बित कर दिया जाए तो शायद विश्व एक परिवार का रूप ले सकता है।

- **viuRo dh Hkkouk%** अगर प्रतिस्पर्धा का बोलबाला कम हो जाए, पृथ्वी जगत पर सब प्राणियों में अपनत्व की भावना आ जाए तो निश्चय ही समूचा विश्व एक–दूसरे की भावना को समझेगा और इससे आंतरिक गतिरोध दूर होगा तथा एक परिवार की तरह इन्सान–इन्सान से , एक देश दूसरे देश से सहृदय होकर अपना विस्तार कर सकता है तथा निज प्रभुता स्थापित कर सकता है।

- **lekurk dk 0;ogkj%** जैसा कि नाम से ही विदित है समानता–यानि हर क्षेत्र में समान व्यवहार, चाहे व प्राणी का हो या फिर संपत्ति के बंटवारे का हो। अगर सभी इन्सान एक–दूसरे इन्सान को, सभी राष्ट्र एक–दूसरे राष्ट्र से समान व्यवहार करें और पिछड़े हुए राष्ट्रों को अपने समान ऊपर उठाकर अपने साथ लेकर चलें तो काफी हद तक यह विश्व, बंधुत्व की भावना में बंध सकता है चाहे समानता धर्म की

हो, या कर्म की हो। अगर आज गाँधीजी होते तो शायद वे भी इसी बात का विरोध करते कि आज का विश्व समानता शब्द का गलत इस्तेमाल करने लगा है।

एक उम्मीद यहाँ की जा सकती है कि अगर प्राचीन इतिहास के अनुसार यदि 'चन्द्रगुप्त' जैसे महान सम्राट ने अखण्ड भारत की स्थापना के लिए जिस प्रकार संघर्ष किया अगर उसी तरह आज के नौजवान भी उतनी ललक दिखाए तो न केवल बल से अपितु बुद्धि के बल से भी हम एक नए विश्व का निर्माण कर सकते हैं।

आचार्य चाणक्य ने भी सम्पूर्ण अखण्ड भारत बनाने का प्राणी मात्र को एक सूत्र में बांधने का जो बीड़ा उठाया उसे हम अपने संकल्प रूपी मेहनत से पूर्ण कर सकते हैं। इसके अलावा पृथकतावाद और गैर–हस्तक्षेपवाद के समर्थकों को दावा है कि कई राष्ट्रों से बनी एक दुनिया उस समय तक शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व के साथ रह सकती है, जब तक वह घरेलू मामलों की तरफ मज़बूती से ध्यान केंद्रित रखे और दूसरे देशों पर अपनी इच्छा थोपने की कोशिश नहीं करे।

- **,dN= çHkkRo%** ''सबका मालिक एक'' की अवधारणा को चरितार्थ करते हुए यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार पूरी सृष्टि को चलाने का एकछत्र राज ईश्वर ने ले रखा है, वह सबको अपनी डोर से बांधे रखता है, ठीक उसी तरह अगर पृथ्वीवासी भी एक डोर में बंधकर राज करें तो धरती पर ईश्वर को लाया जा सकता है। साक्षात् ईश्वर कभी नहीं आते। वह अपने फरिश्ते के रूप में सबका मालिक होता है और अन्तर्मन से एक होकर सबके कल्याण का भागी होता है। उसी प्रकार अगर इन्सान के दिल में सबके प्रति एकजुट होकर कार्य करने की भावना आ जाए तो सम्पूर्ण विश्व एकछत्र राज कर सकता है तथा धरती पर स्वर्ग स्थापित हो सकता है।

fo'o 'kkfr e: vfglk dh Hkfedk

- **ol/ko dVEcde dh LFkkiuk%** गाँधीजी के बताये मार्ग पर चलकर हमने अहिंसा को अपनाया और इसी के बल पर हमने स्वाधीनता प्राप्त

हुई। अगर हम इसी अहिंसा के बल पर विश्व के हर देश में शांति कायम करें तो हम वसुधैव कुटुम्बकम् की स्थापना कर सकते हैं।

आज चारों तरफ आतंक, मारकाट और अत्याचार जैसी भावना की आग फैली हुई है। उसमें अगर हमने अहिंसा छोड़कर हिंसा का रूप ले लिया तो यह आग में घी का काम करेगा। वसुदेव का परिवार बनाना है तो हमें इत्मीनान के साथ धैर्यपूर्वक अहिंसा का पालन करना होगा और सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में स्वीकारना होगा। तभी हम सम्पूर्ण जगत को एकता के सूत्र में पिरो सकेंगे।

श्रीमद्भगवतगीता में जिस प्रकार ईश्वर ने विराट रूप के दर्शन करवाए थे, ठीक उसी प्रकार प्रेम रूपी व्यवहार से भी हमारा विश्व एक विराट शक्ति के रूप में उभरकर सामने आ सकता है। इंसान जानबूझकर प्रेम करने से कतराता है क्योंकि किसी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करने की कोशिश भी करता है तो अहं की दीवार सामने आ जाती है जो उसे सहृदय होकर संपर्क बढ़ाने से रोकती है। अगर विश्व में प्रेम व सौहार्द की भावना पनप जाए तो गर्व के साथ कहा जा सकता है कि हम संसार के विराट रूप के दर्शन कर सकते हैं। इस दुनिया को एक विराट संसार बना सकते हैं तथा सम्पूर्ण संसार में राम राज्य की स्थापना कर सकते हैं। अहिंसा ही ऐसा साधन है जो हमें हर मार्ग पर सद्विवेक से ले जा सकता है।

अहिंसा के निम्न मूलमंत्रों को धारण करके हम विश्व में शांति कायम कर सकते हैं:–

- **vkrdokn dk [kkRek%** 'अहिंसा परमो धर्मः' यह जानकर तो यह प्रतीत होता है कि दयालुता, अहिंसा के द्वारा हम वह सब कुछ हासिल कर सकते हैं जो हिंसक बनकर नहीं किया जा सकता। आतंकवाद जन्म नहीं लेता उसको परिस्थितियाँ तैयार कर देती हैं हिंसा का बारूद भरकर। अगर हम प्रारंभ से ही नफरत छोड़कर सबके साथ सहृदय रहकर परिस्थिति से समझौता करें तो आतंकवाद का खात्मा हो सकता है।

- **Loçe dh Hkkouk%** दूसरों से प्रेम करने से पहले अपने आप से प्रेम करना ही स्वप्रेम होता है। यदि हमें अपने आप से प्रेम है तभी हम दूसरों से कर सकते हैं। यदि हम अपने आपको हिंसक बनाएंगे तो दूसरों को अहिंसा का पाठ कैसे पढ़ायेंगे? अतः अहिंसा तभी स्थापित की जा सकती है जब अपने से अहिंसात्मक रूप अपनाया जायेगा।

- **n;kyrk o lfg".krk%** अहिंसा के मार्ग पर चलकर व्यक्ति दयावान व सहिष्णु बन सकता है। जो लक्ष्य इसे मारकाट करने पर मिलता है उसमें उसे आत्मिक शांति नहीं मिलती, जो उसे अहिंसा के बल पर प्राप्त होने पर मिलती है। अगर इसे थोड़े प्यार व दयालुता के आधार पर हम किसी को भी जीत सकते हैं।

- **R;kx o cfynku dk çHkRo%** भारतीय संस्कृति की पहचान है कि अगर किसी व्यक्ति के साथ थोड़ा सा प्यार से पेश आया जाए तो वह सब कुछ त्याग कर सकता है और अपना तन–मन–धन भी लुटा सकता है। अगर हमें यही त्याग व बलिदान की भावना विश्व में स्थापित करनी है तो अहिंसा से बड़ा कोई साधन हो ही नहीं सकता।

अतः हम कह सकते हैं कि विश्व का मानस सोया हुआ था और अपनी कर्तव्य–भावना से परिचित नहीं था। यह ठीक है कि भटकाने वाले और भड़काने वाले अनेक स्वार्थी तत्व भी यहाँ विद्यमान हैं, यहाँ राजनीतिक दलदल अधिक है परंतु आज जनमानस की चेतना जाग चुकी है और चेतना व्यर्थ के भुलावों और झूठे झांसों में आने वाली नहीं है। अगर हम सारे तत्वों को समझ लें और उसके नक्शे कदम पर चलें तो हम सर्वत्र चेतना, एकता व शांति स्थापित करने में सक्षम हो सकते हैं। ✿

हमारे देश में बहुत पहले से विदेशी घुसपैठियों ने अराजकता फैला रखी थी। पहले सिकंदर, फिर अफ़गान, मुगल और अंग्रेजों ने अपनी तानाशाही से भारत पर शासन किया परंतु अंततः महात्मा गांधी के अहिंसावादी सिद्धांतों के आगे घुटने टेकने पड़े और भारत को आज़ाद करना पड़ा।

हिंसा से बढ़ती है बदले की आग

◈ T;kfr vxokyk 10वीं
भवन्स बी.पी. विद्या मंदिर, श्रीकृष्ण नगर
नागपुर, महाराष्ट्र

vkज के इस युग में भ्रष्टाचार रक्तबीज दानव के समान बढ़ रहा है। इसकी वजह से समाज में गंदगी फैल रही है, हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है। एक देश के लिए इससे बुरी बात क्या हो सकती है? हिंसा जहाँ विश्व शांति भंग करती है वहीं अहिंसा शांति बनाए रखने में मदद। अहिंसा, बिना मारपीट, लड़ाई–झगड़े आदि के संग हम अपने देश की रक्षा करते हैं। हिंसा से समाज में दुर्भावना का संचार होता है, लोगों के दिलों में बदले की आग इतनी भड़क उठती है कि वे सर पर कफ़न बाँध लेते हैं। इससे समाज में एकता नष्ट होती है।

विश्व शांति बनाए रखना हर मनुष्य का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए। विश्व शांति अर्थात् समस्त जगत में शांति का माहौल होना। जब तक शांति जागती रहेगी तब तक मनुष्यता भी जीवित रहेगी लेकिन अगर वह सो गई तो मनुष्यता भी मर जाएगी। अहिंसा का मार्ग वह दीप है जिससे बिना किसी को हानि पहुँचाए हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

एक छोटा–सा उदाहरण ले लीजिए। अगर आपके माता–पिता ने आपको डाँट दिया, आप पर हाथ उठा दिया और आपने बाद में शांति से उनसे

बातचीत कर मामला सुलझा लिया तो आपके घर की शांति बनी रहेगी। लेकिन अगर आपने उनसे बदला लेने का विद्रोह करने का फैसला कर लिया तब क्या आपके घर की शांति कायम रहेगी? नहीं ना। इसी भाँति विद्रोह करने से या मारपीट करने से किसी का भला नहीं होता।

हमारे देश में तो प्रारंभ से ही बहुत से ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने यह बताया है कि अहिंसा से ही विश्व शांति स्थापित की जा सकती है न कि हिंसा और आतंक से। भगवान बुद्ध और महावीर ने अपने जीवन–चरित्र से अहिंसा का पाठ पढ़ाया है। उन्होंने बताया कि ''अहिंसा ही परमो धर्मः'' अर्थात् यही एक ऐसा मार्ग है जो सर्वोत्तम है। भगवान बुद्ध ने तो एक डाकू तक तो हिंसा से अहिंसा के मार्ग पर ला दिया। उन्होंने कहा, ''जो भी इस संसार में आया है, उसे तो एक दिन मरना ही है, तो फिर मृत्यु से कैसा भय? मनुष्य को लोगों को हिंसा व आतंक से नहीं, बल्कि प्रेम, दया और अहिंसा से अपने वश में करना चाहिए।'' अंगुलिमाल डाकू के मन में भगवान बुद्ध की ये बातें घर कर गईं और उसने हिंसा का मार्ग छोड़ दिया और भगवान बुद्ध के साथ हो लिया।

महावीर स्वामी तो इंसानों को क्या, एक चींटी तक को चोट पहुँचाना पाप और अपराध मानते थे। उन्होंने कहा कि जाने–अन्जाने भी यदि हम किसी की हिंसा करते हैं तो हमें उसका प्रायश्चित करना ही पड़ता है तभी हमें शांति मिलती है। फिर हम कैसे मान लें कि आतंकवाद और हिंसा फैलाकर विश्व में साम्राज्य प्राप्त किया जा सकता है? कदापि नहीं अहिंसा और प्रेम से ही विश्व शांति स्थापित की जा सकती है क्योंकि ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' अर्थात् पूरा विश्व ही एक परिवार है। परिवार में शांति प्रेम और अहिंसा से ही होगी।

विश्व विजेता सिंकदर ने अपने बाहुबल से संसार को जीतना चाहा, मगर अंत में इस मारधाड़ से वह भी थक गया और ऐसा मार्ग खोजने लगा जिसमें उसे लड़ाई न करनी पड़े और राज्य भी मिल जाए। हमारे देश में बहुत पहले से विदेशी घुसपैठियों ने अराजकता फैला रखी थी। पहले सिकंदर, फिर अफ़गान, मुगल और अंग्रेजों ने अपनी तानाशाही से भारत पर शासन किया परंतु अंततः महात्मा गांधी

के अहिंसावादी सिद्धांतों के आगे घुटने टेकने पड़े और भारत को आज़ाद करना पड़ा।

मगर आज दुःख की बात तो यह है कि विश्व को शांति का पाठ पढ़ाने वाला भारत एक बार फिर आतंकवाद के घेरे में कैद हो रहा है। पूरे विश्व में अराजकता और अशांति फैल रही है। यदि विश्व शांति बनाए रखनी है तो हमें आतंक, हिंसा को छोड़कर अहिंसा के रास्ते पर चलना होगा वरना वह दिन दूर नहीं जब हिंसा के कारण विश्व का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

हिंसा का भय फैलाकर कुछ समय के लिए भले ही वह प्राप्त किया जा सकता है जिसे हम पाना चाहते हैं परंतु इससे पाने वाले के मन में भी शांति नहीं रहती क्योंकि हर वक्त यह भय लगा रहता है कि जिसे उसने जोर–जबरदस्ती से पाया है, वह दोबारा उससे छूट न जाए। प्यार और विश्वास के सहारे पायी गई वस्तु हमेशा उसके पास रहेगी क्योंकि पाने वाले को उसके खो जाने का भय नहीं है। जब आतंक और हिंसा करके आतंकवादी हिंसक को स्वयं में ही शांति नहीं है, उसे हमेशा छिपकर रहना पड़ता है और मारे जाने के भय से इधर–उधर भागना पड़ता है तो वह भला क्या हासिल कर पाएगा? तो फिर ऐसी राह चुनने का क्या फायदा जिस पर चलने से दूसरों के साथ खुद को भी भयभीत रहना पड़ता हो।

इस अनमोल जीवन को व्यर्थ की मारकाट में गंवाकर अपना समय बर्बाद करने से तो अच्छा है कि भगवान बुद्ध, महावीर, महात्मा गांधी की तरह अहिंसा और मानवता को सर्वोपरि मानते हुए उन्हीं के दिखाए रास्ते पर चलें, विश्व शांति बनाए रखें, तभी तो राम राज्य बन सकेगा यह सम्पूर्ण विश्व। ✿

सभी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत को अपनाएं

◈ phul kuh 12वीं
श्री दिगम्बर जैन बालिका उ.मा. विद्यालय
उदयपुर, राजस्थान

शांति एवं अहिंसा की कोई सटीक परिभाषा नहीं होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर इसका भिन्न-भिन्न अर्थ प्रस्तुत करता है। निष्कर्ष के रूप में विश्व शांति का अर्थ है कि विभिन्न देशों में युद्धों की समाप्ति, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, आतंकवाद आदि खतरे समाप्त होकर सम्पूर्ण विश्व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत का पालन हो।

foश्व शांति एवं अहिंसा का विचार इतिहास में नया नहीं है। समय–समय पर विभिन्न लोगों ने इसके सम्बंध में अलख जगाई है तब से आज तक शांति का अर्थ तो एक ही था परंतु इसकी प्राप्ति के तरीकों में भिन्नता आ गई है। पुराने समय से ही भारत में अनेक शांति आंदोलनों की उत्पत्ति हुई है एवं भारतीय संस्कृति भी अहिंसा पर आधारित है। भारत एवं अन्य देशों में विभिन्न महापुरुष हुए हैं जो अहिंसा एवं आपसी भाईचारे को महत्व देते हैं।

सम्पूर्ण विश्व यदि अहिंसा की भावना को अपने आप में आत्मसात् कर ले तो पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना स्वतः ही हो जाएगी। इस स्वर्ग की स्थापना इस धरती पर करने के लिए जरूरत है प्रत्येक मानव चाहे वह किसी भी देश का हो, शांति एवं अहिंसा की भावना का प्रसार करे। परंतु इसका एक और नकारात्मक पहलू भी है कि विश्व शांति एवं अहिंसा का प्रसार–विचार मात्र से ही नहीं हो जाता है, इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक राष्ट्र को इसमें अपना योगदान देना चाहिए। सभी के सहयोग एवं प्रयास से ही विश्व में शांति एवं अहिंसा को स्थापित किया जा सकता है।

शांति एवं अहिंसा की कोई सटीक परिभाषा नहीं होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर इसका भिन्न–भिन्न अर्थ प्रस्तुत करता है। निष्कर्ष के रूप में विश्व शांति का अर्थ है कि विभिन्न देशों में युद्धों की समाप्ति, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, आतंकवाद आदि खतरे समाप्त होकर सम्पूर्ण विश्व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्वांत का पालन हो।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अर्थ है कि सारा संसार हमारा घर है अर्थात् सम्पूर्ण संसार हमारा कुटुम्ब है। जिस प्रकार एक कुटुम्ब में सभी लोग मिलजुल कर बिना शिकायत करे रहते हैं, उसी प्रकार का अपनापन का भाव प्रत्येक व्यक्ति सारे संसार को दे। इस सिद्धान्त का पालन करने से सही मायनों में शांति स्थापित हो सकती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सारा विश्व ही हमारे कुटुम्ब के समान है। यदि विभिन्न देश शांति स्थापित करने के थोड़े–थोड़े अपने स्तर पर प्रयत्न करें तो विश्व शांति व्यापक रूप में स्थापित होगी।

शांति से अभिप्राय है कि प्रत्येक देश में प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी भेदभाव, लड़ाई–झगड़े के आपस में मिलकर एवं स्वतंत्र होकर जीवन जी सके तो व्यक्तिगत स्तर पर शांति की स्थापना कर सकते हैं। शांति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है युद्धों एवं दुश्मनी की समाप्ति।

शांति स्थापना के लिए सबसे आवश्यक बात है कि हिंसा न होना अर्थात् हिंसा के स्थान पर अहिंसा की भावना का पालन। अहिंसा का भाव यह है कि निरपराध एवं निर्दोष प्राणियों की हिंसा न करना। भारतीय संस्कृति में हिन्दू धर्म में अहिंसा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर ने अहिंसा धर्म का उपदेश दिया। इसी पावन उपदेश के लिए ये दोनों महापुरुष आज भी लोगों द्वारा जाने जाते हैं।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी अहिंसा के अवतार थे। गाँधीजी के अनुसार, ''अहिंसा का पालन प्रत्येक व्यक्ति को मन से, वाणी से, शरीर और कर्म से करना चाहिए।'' यदि हमारे हृदय में किसी के लिए बुरी भावना है तो वह भी हिंसा मानी जाएगी। गाँधीजी कहते थे कि केवल धार्मिक क्षेत्र में ही अहिंसा का महत्व नहीं है बल्कि राजनीति के क्षेत्र में भी अहिंसा की आवश्यकता है।

भारत में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा अत्यंत प्राचीन है। भगवान कृष्ण ने गीता में ''अहिंसा सव्य अक्रोध'' ऐसा कहकर अहिंसा का दैवी गुणों से सम्पन्न पहला उपदेश दिया। अहिंसा आत्मा का सर्वोत्तम साधन है। आत्मा परमात्मा का ही दूसरा रूप है। जब समाज के लोग अहिंसावादी हो जाएंगे तब समाज में शांति एवं उन्नति की स्थापना स्वतः ही हो जाएगी। यह सत्य है कि ''अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है'' अर्थात् सभी धर्मों से अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है।

दुनियाभर के लोगों ने सोचा था कि विज्ञान की प्रगति के साथ, शिक्षा और चिकित्सा में विकास हो जाने पर सभी विकासशील देशों में विश्व शांति की शांतिपूर्ण क्रांति आ जाएगी। यह भी सोचा गया था कि महाशक्तियाँ नाभिकीय तथा अन्य हथियारों की विनाशक शक्ति देखते हुए, अपने मतभेदों को शांतिपूर्ण तरीकों से सुलझायेंगी तथा दुनिया अपनी ऊर्जाएं लोगों को बेहतर जीवन उपलब्ध कराने के लिए शांतिपूर्ण रूप से एवं अहिंसक रूप से सुधारों और परिवर्तनों में लगाएंगी। जो केवल शांतिपूर्ण उद्देश्यों से नाभिकीय ऊर्जा का प्रयोग करना चाहते हैं, वे भी सीधे आगे को बढ़े जा रहे हैं। फलस्वरूप न केवल हमारे देश में संकट उपस्थित हो गया है बल्कि विकसित एवं समृद्ध देशों में भी वह है। जब भी कोई ऐसी कठिनाई आती है तो वह सभी पर कुप्रभाव डालती है, लेकिन गरीब और कमजोर राष्ट्रों को वह ज्यादा ही पीड़ित करती है। भारत में हम सभी इसी संकटपूर्ण स्थिति में हैं।

विश्व में कानून और व्यवस्था के हालात अच्छे नहीं हैं। साम्प्रदायिक उपद्रव हो रहे हैं जो कभी–कभी जानबूझ कर योजनाबद्ध ढंग से कराये जाते हैं। कई दल और संगठन जातिवाद, संप्रदायवाद या हमारे समाज को विभक्त करने वाले अन्य तरह से जहर फैलाते हैं। यदि वातावरण में संदेह और अविश्वास व्यक्त हो, भय तथा आक्रामकता हो तो रचनात्मक प्रगति के बारे में सोचना संभव नहीं होता। केवल एक वर्ग के लोगों का ख्याल नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि सभी वर्गों के हित हमारे ध्यान में होने चाहिए। सभी धर्म फले–फूलें और सभी भाषाओं को बढ़ावा मिले। जब तक सबके साथ सही न्याय नहीं होता तब तक लोग समृद्धिशाली एवं समर्थ नहीं हो सकते।

सही न्याय से हमारा मतलब पिछड़े राष्ट्रों को विशेष मदद एवं सहायता मिलनी चाहिए। शांति एवं अहिंसा की भावना होगी तभी सभी राष्ट्र आगे बढ़ सकते हैं। विश्व में शांति और सांमजस्य कभी–कभी विश्वमंदी और राजनैतिक दाँवपेचों से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हो सकता है। विश्व की सरकारों में विपक्षी दल में प्रगति में सहायक होने की अपेक्षा बाधक बन जाते हैं। अतः सरकार की जिम्मेदारी होती है वह विपक्ष को सही ढंग से काम करने दे। विपक्ष की भी यही जिम्मेदारी है कि वह सरकार को काम करने दे। लेकिन वह स्थिति का नाज़ायज फायदा उठाने लगता है और सरकार के लिए समस्याएं खड़ी करने लगता है।

इक्कीसवीं सदी के संबंध में स्मरणीय बात है कि विभिन्न देशों में विश्व के विभाजन के विचार को तो सबने स्वीकार किया था लेकिन इस बात पर भी विचार हुआ था कि भविष्य में यह विभाजन समाप्त हो जाएगा और विश्व शांति का स्वप्न तब बहुत दूर नहीं होगा। आज मानव उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृत संकल्प है। विश्व में व्यापक स्तर पर शांति एवं अहिंसा की भावना की आवश्यकता है।

आतंकवाद शब्द हिंसक अतिवाद का पर्याय है जो चारों तरफ ऐसा भय और आतंक फैला देता है कि कभी–कभी शक्तिशाली देश भी इसके सामने अपने होश गंवा देते हैं। आतंकवाद पनपने का कारण राजनीतिक शिकायत या राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं हैं। वास्तविकता यह है कि आतंकवाद के विरुद्ध अभियान के प्रति हम सब तक अधिक आशावान नहीं हो सकते जब तक कि सामूहिक स्वीकार्य हल नहीं निकल पाता है। आतंकवाद ऐसी समस्या है जो विश्व शांति को समाप्त कर वैमनस्य का भाव पैदा करती है एवं हिंसा को बढ़ावा देने वाली होती है।

विभिन्न देशों में आपस में युद्ध होने से भारी मात्रा में जन–हानि एवं कई तरह के अन्य खतरे पैदा होते हैं। दो देशों के बीच युद्ध होने से इसका प्रभाव दूसरे देशों पर भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। युद्धों से किसी भी देश को कुछ भी हासिल नहीं होता है इसके विपरीत उनकी अर्थव्यवस्था इस प्रकार के युद्धों से डगमगा जाती है एवं देश की शांति को खतरा पहुँचता है। हिंसक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है एवं आतंक फैलता है।

विभिन्न राष्ट्रों में कुछ अच्छे लोग भी होते हैं तो कुछ बुरे लोग भी होते हैं। बुरे लोग दंगा–फसाद, आगजनी आदि हिंसक गतिविधियों का सहारा लेकर शांति भंग करके विरोध प्रदर्शन करते हैं। इस प्रकार की घटना में कई निर्दोष लोगों की जानें जाती हैं। हिंसक गतिविधि से जान, संपत्ति आदि की हानि भी होती है।

हड़तालें अहिंसात्मक अथवा सत्याग्रही प्रवृत्ति के लिए होती हैं तो भी इसमें बल प्रयोग आदि कार्यवाहियों का समावेश होने लगता है। कभी वे उग्र रूप धारण कर लेती है। पीड़ा, रक्तपात और यहाँ तक कि कभी–कभी मृत्यु तक के रास्ते भी उनमें अंगीकार कर लिये जाते हैं। उपद्रव में निहित विचारहीन आसक्ति सार्वजनिक संपत्ति की तोड़फोड़ के रूप में शांतिप्रिय नागरिकों के लिए परेशानी का कारण बन जाती हैं। हड़ताल से शांति समाप्त हो जाती है।

fo'o 'kkfr LFkkiuk d mik;% विश्व शांति एवं अहिंसा के मार्ग को भंग करने के लिए अनेक चुनौतियां विद्यमान हैं लेकिन फिर भी इसको बरकरार रखने के लिए निम्न उपाय किये जा सकते हैं:–

- **0;fDrxr Lrj ij ç;Ru%** विश्व शांति बनाए रखने के लिए प्रत्येक देश के, प्रत्येक नागरिक को, अपने व्यक्तिगत स्तर पर प्रयत्न करना होगा। हिसंक गतिविधियों से समस्या सुलझाने के बजाय उसे अहिंसा के द्वारा समस्या का समाधान निकालना चाहिए।
- **;)k ij jkd%** किसी भी बात का धैर्य से समाधन निकालने की बजाय हिंसा करने से शांति नहीं बन जाती है। युद्धों से तो केवल जनहानि एवं हिंसा ही फैलती है। शांति बनाये रखने के लिए अहिंसा के सिद्धांतों को ही व्यवहार में लाना चाहिए तभी शांति और परस्पर समता स्थापित की जा सकती है। इसी वातावरण के अन्तर्गत राष्ट्र खुशहाल व प्रगति की ओर अग्रसर हो सकता हैं।

निष्कर्ष के रूप में हम इतना ही कह सकते हैं कि हमें चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जरूरत है एकता की और प्रतिबद्धता की न केवल किसी दल विशेष या व्यक्ति के लिए बल्कि समूचे राष्ट्र के लिए। इस समय जरूरी है कि दुनिया अधिकाधिक सहयोग तथा समझदारी की। ✿

विश्व शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके लिए कई सिद्धांतों का प्रस्ताव किया गया है। इनमें से कई नीचे सूचीबद्ध हैं। विश्व शांति हासिल की जा सकती है जब संसाधनों को लेकर संघर्ष नहीं हो। उदाहरण के लिए, तेल एक ऐसा ही संसाधन है और तेल की आपूर्ति को लेकर संघर्ष जाना-पहचाना है।

युद्ध मानव प्रकृति का हिस्सा नहीं

◈ xkjh Mh- rEih 10वीं
चिन्मय विद्यालय, बेल्ली एरिया
जैड–ब्लॉक, अन्नानगर, चेन्नई,
तमिलनाडु

foश्व शांति सभी देशों या लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति और खुशी का एक आदर्श है। विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है, जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की एक प्रणाली के जरिये इच्छा से सहयोग करते हैं, ताकि युद्ध को रोका जा सके। हालांकि कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग विश्व शांति के लिए सभी व्यक्तियों के बीच सभी तरह की दुश्मनी के खात्मे के सन्दर्भ में किया जाता है।

IHkkouk विश्व शांति सैद्धांतिक रूप से संभव है। कुछ का मानना है कि मानव प्राकृति स्वाभाविक तौर पर इसे रोकती है। यह विश्वास इस विचार से उपजा है कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से हिंसक है या कुछ परिस्थितियों में तर्कसंगत कारक हिंसक कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे। तथापि दूसरों का मानना है कि युद्ध मानव प्रकृति का एक सहज हिस्सा नहीं है और यह मिथक वास्तव में लोगों को विश्व शांति के लिए प्रेरित होने से रोकता है।

fo’o 'kkfr d fl)kr% विश्व शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके लिए कई सिद्धांतों का प्रस्ताव किया गया है। इनमें से कई नीचे सूचीबद्ध हैं। विश्व शांति हासिल की जा सकती है, जब संसाधनों को लेकर संघर्ष नहीं हो। उदाहरण के लिए, तेल एक ऐसा ही संसाधन है और तेल की आपूर्ति को लेकर संघर्ष जाना–पहचाना है। इसलिए पुनः प्रयोज्य ईंधन स्त्रोत का उपयोग करने वाली प्रौद्योगिकी विकसित करना विश्व शांति हासिल करने का एक तरीका हो सकता है।

fofHkUu jktuhfrd fopkj/kkjk,% दावा किया जाता है कि कभी–कभी विश्व शांति किसी खास राजनीतिक विचारधारा का एक अपरिहार्य परिणाम होती है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश के मुताबिक ‘लोकतंत्र का प्रयाण (मार्च) विश्व शांति का नेतृत्व करेगा। एक मार्क्सवादी विचारक लियोन त्रोत्सकी का मानना है कि विश्व क्रांति कम्युनिस्ट विश्व शांति का नेतृत्व करेगी।

ykdrkf=d 'kkfr fl)kr% विवादास्पद डेमोक्रेटिक शांति सिद्धांत के समर्थकों का दावा है कि इस बात के मजबूत अनुभवजन्य साक्ष्य मौजूद हैं कि लोकतांत्रिक देश कभी नहीं या मुश्किल से ही एक–दूसरे के खिलाफ युद्ध छेड़ते हैं। जैक लेवी (1988) बार–बार जोर देकर यह सिद्धांत बताते हैं कि चाहे कुछ भी हो, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में हमें एक व्यावहारिक कानून की आवश्यकता है। औद्योगिक क्रांति के बाद से लोकतांत्रिक बनने वाले देशों में वृद्धि हो रही है। एक विश्व शांति इस प्रकार संभव है, अगर यह रूझान जारी रहे और अगर लोकतांत्रिक शांति सिद्धांत सही हो, हालांकि इस सिद्धांत के कई संभव अपवाद हैं।

i:thoknh 'kkfr fl)kr% अपनी ‘कैपिटलिज्म पीस थ्योरी’ पुस्तक में आयन रैंड मानती है कि इतिहास के बड़े युद्ध उस समय के अपेक्षाकृत अधिक नियंत्रित अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों के खिलाफ़ लड़े गए और उस पूंजीवाद ने मानव जाति को इतिहास में सबसे लंबे समय तक शांति प्रदान की। इस अवधि में पूरी सभ्य दुनिया की भागीदारी में 1815 में नेपोलियन युद्ध के अंत से 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के छिड़ने तक युद्ध नहीं हुए।

यह याद रखा जाना चाहिए कि उन्नीसवीं सदी की राजनीतिक प्रणालियां युद्ध पूंजीवादी नहीं थीं, बल्कि मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं वाली थीं। हालांकि पूंजीवाद के तत्व का प्रभुत्व था, पर यह पूंजीवाद की एक सदी के उतने ही करीब था, जितना मानव जाति के आने तक था। लेकिन पूरी उन्नीसवीं सदी के दौरान राज्यवाद के तत्व फलते–फूलते रहे और 1914 में पूरी दुनिया में इसके विस्फोट के समय तक शामिल सरकारों पर राज्यवाद की नीतियों का बोलबाला रहा।

dkCMfuTe% कोब्डेनिज्म के कुछ समर्थकों का दावा है कि टैरिफ हटाने और अंतर्राष्ट्रीय मुक्त व्यापार शुरू करने से युद्ध असंभव हो जाएंगे, क्योंकि मुक्त व्यापार एक राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनने से रोकता है, जो लंबे युद्धों की एक आवश्यकता है। उदाहरण के लिए यदि एक देश आग्नेयास्त्रों का उत्पादन और दूसरा गोला बारूद का उत्पादन करता है तो दोनों एक–दूसरे से ही लड़ेंगे क्योंकि पहला गोला–बारूद हासिल करने में असमर्थ होगा और दूसरा हथियार हासिल करने में।

Lo& lxfBr 'kkfr% विश्व शांति को स्थानीय, स्व–निर्धारित व्यवहार के एक परिणाम के रूप में दर्शाया गया है, जो शक्ति के संस्थनीकरण को रोकता है और हिंसा को बढ़ावा देता है। समाधान बहुत कुछ सहमति वाले एजेंडे या उच्च प्राधिकार वह दैवीय हो या राजनीतिक में निवेश पर उतना आधारित नहीं है, जितना आपसी सहमति वाले तंत्रों का स्व–संगठित नेटवर्क, जिसका परिणाम एक व्यवहार्य राजनीतिक–आर्थिक सामाजिक ताने बाने के रूप में निकलता है। अभिसरण के उत्प्रेरण के लिए प्रमुख तकनीक विचारों का प्रयोग है, जिसे बैंक कािस्टिंग कहते हैं और इससे कोई भागीदारी में सक्षम हो सकता है भले ही वह किसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धार्मिक सिद्धांत, राजनीतिक संबंद्धता या जनसांख्यिकीय उम्र का हो।

fo’o 'kkfr dk /kkfed fopkj%

- **cgkbl /ke%** विश्व शांति के लक्ष्य विशिष्ट संबंध में, बहाई विश्वास के बहाउल्ला ने स्थाई शांति की स्थापना के लिए पूरी दुनिया की ओर से समप्रित सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का सुझाव दिया है। ‘युनिवर्सल

हाउस ऑफ जस्टिस ले द प्रोमिज ऑफ वर्ल्ड पीस' में इस प्रक्रिया के बारे में लिखा है।

- **ck() /ke%** कोई धर्म धर्मावलंबी मानते हैं कि विश्व शांति तभी हो सकती है, जब हम अपने मन के भीतर पहले शांति स्थापित करें।
- **fgn /ke%** परंपरागत रूप से हिंदू धर्म में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारण गृहीत की गई है।
- **bLyke /ke%** इस्लाम धर्म के अनुसार केवल एक खुदा में यकीन और ईश्वर के समान माता–पिता का होना मनुष्यों का शांति के साथ रहने का सबसे बड़ा कारण है।

आज की दुनिया में बहुत समस्याएं हैं। इनमें से आतंक एक बहुत बड़ी समस्या है। इसको हटाने के लिए हमें विश्व शांति को समझना है और अहिंसा का पालन करना है। विश्व शांति और अहिंसा, दोनों अगर हर एक व्यक्ति अपने जीवन में लाए तो हम सब सुखी जीवन बिता सकते हैं। ✿

विश्व शांति हासिल की जा सकती है जब संसाधनों को लेकर संघर्ष नहीं हो। उदाहरण के लिए-तेल एक ऐसा ही संसाधन है और तेल की आपूर्ति को लेकर संघर्ष जाना-पहचाना है। इसलिए ईंधन स्त्रोत का उपयोग करने वाली तकनीक विकसित करना विश्व शांति हासिल करने का एक तरीका हो सकता है।

संसाधनों के लिए संघर्ष न हो

◈ Hkkouk jktkfj;k 7वीं
देव समाज विद्या निकेतन सी.सै. स्कूल
गुड़गांव, हरियाणा

foश्व शांति सभी देशों और लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति और खुशी का एक आदर्श है। विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है, जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की एक प्रणाली के जरिये इच्छा से सहयोग करते हैं, ताकि युद्ध को रोका जा सके। हाँलाकि कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग विश्व शांति के लिए सभी व्यक्तियों के बीच सभी तरह की दुश्मनी के खात्मे के संदर्भ में किया जाता है।

जबकि विश्व शांति सैद्धांतिक रूप में संभव है, कुछ का मानना है कि मानव प्रकृति स्वाभाविक तौर पर इसे रोकती है। यह विश्वास इस विचार में उपजा है कि मनुष्य प्राकृतिक रूप में हिंसक है या कुछ परिस्थितियों में तर्कसंगत कारक हिंसक कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे। तथापि दूसरों का मानना है कि युद्ध मानव प्रकृति का एक सहज हिस्सा नहीं है और यह मिथक वास्तव में लोगों को विश्व शांति के लिए प्रेरित करेंगे।

विश्व शांति हासिल की जा सकती है जब संसाधनों को लेकर संघर्ष नहीं हो। उदाहरण के लिए–तेल एक ऐसा ही संसाधन है और तेल की

आपूर्ति को लेकर संघर्ष जाना–पहचाना है। इसलिए ईंधन स्त्रोत का उपयोग करने वाली तकनीक विकसित करना विश्व शांति हासिल करने का एक तरीका हो सकता है।

विभिन्न राजनीतिक विचारधाराएं दावा दिया जाता है कि कभी–कभी विश्व शांति किसी राजनीतिक विचारधारा का एक अपरिहार्य परिणाम होती है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश के मुताबिक ''लोकतंत्र का प्रयाण (मार्च) विश्व शांति का नेतृत्व करेगा।'' एक मार्क्सवादी विचारक लियोन त्रोत्सकी का मानना है कि विश्व क्रांति कम्युनिस्ट विश्व शांति का नेतृत्व करेगी।

जैक लेवी (1988) बार–बार जोर देकर यह सिद्धांत बताते हैं कि ''चाहे कुछ भी हो, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में हमें एक व्यावहारिक कानून की आवश्यकता है।'' औद्योगिक क्रांति के बाद से लोकतांत्रिकता बनने वाले देशों में वृद्धि हो रही है। एक विश्व शांति इस प्रकार संभव है, अगर यह रुझान जारी रहे और अगर लोकतांत्रिक शांति सिद्धांत सही हो।

यह याद रखा जाना चाहिए कि उन्नीसवीं सदी की राजनीतिक प्रणालियाँ शुद्ध पूंजीवादी नहीं थीं, बल्कि मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं वाली थीं। हांलाकि पूंजीवाद के तत्व का प्रभुत्व था, पर यह पूंजीवाद की एक सदी के उतने ही करीब था, जितना मानव जाति के आने तक था। लेकिन पूरी उन्नतीसवीं सदी के दौरान राज्यवाद की नीतियों का बोलबाला रहा।

हांलाकि, इस सिद्धांत ने यूरोप के बाहर के देशों, साथ ही साथ एकीकरण के लिए जर्मनी और इटली में हुए युद्धों, फ्रांकोपर्सयन युद्ध द्वारा छेड़े गये क्रूर औपनिवेशिक युद्धों की अनदेखी की। यह युद्ध के अभाव को शांति के पैमाने को पेश करता है, जब वास्तविक रूप में वर्ग संघर्ष मौजूद रहा।

कोब्डेनिज्म के कुछ समर्थकों का दावा है कि टैरिफ हटाने और अंतर्राष्ट्रीय मुक्त व्यापार शुरू करने से युद्ध असंभव हो जायेंगे, क्योंकि मुक्त व्यापार एक देश आत्मनिर्भर बनने से रोकता है, जो लंबे युद्धों की एक आवश्यकता है। उदाहरण के लिए यदि एक देश आग्नेश्यास्त्रों का उत्पादन और

दूसरा गोला–बारूद का उत्पादन हासिल करने में असमर्थ होगा और दूसरा हथियार हासिल करने में।

आलोचकों का तर्क है कि मुक्त व्यापार एक देश को युद्ध के मामले में आत्मनिर्भर बनने की आपात योजना बनाने से नहीं रोक सकता या एक देश साधारण तौर पर अपनी जरूरत एक–दूसरे देश से पूरी कर सकता है। इसका एक अच्छा उदाहरण पहला विश्व युद्ध है। ब्रिटेन और जर्मनी दोनों युद्ध के दौरान आंशिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में कामयाब हो गये। ✿

करना ही होगा युद्ध का बहिष्कार

◈ fgekuh ijkfgr 11वीं,
आलोक संस्थान, राजसमंद, राजस्थान

पंचशील के सिद्धान्तों में सर्वप्रथम 'आक्रमण न करना' है। आक्रमण न करने का रूपान्तर अहिंसा ही होता है। 'शील' का अर्थ है कि मैं अहिंसा की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध और नेहरू दोनों के पंचशील की यही पुकार थी कि संसार में अहिंसा होनी चाहिए, तभी विश्व-शांति संभव है।

fiछले दो महायुद्धों एवं वर्तमान की आतंकवादी घटनाओं को देखकर आज के विश्व का मानव युद्ध की विभीषिकाओं से संत्रस्त होकर अपनी रक्षा के लिए शरण ढूँढ़ रहा है। बड़े–बड़े राष्ट्रों के कर्णधार युद्ध न करने के लिए योजनाएँ बना रहे हैं और उन्हें कार्यान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं, परंतु बीच–बीच में कुछ ऐसी चिंगारियाँ फूट पड़ती हैं, जिससे युद्ध की संभावना फिर से वृद्धि पा जाती है और युद्ध–विराम योजनाएं असफल दिखलाई पड़ती हैं।

आज विश्व उसी स्थिति में है, जिस स्थिति में महाराजा अशोक कलिंग विजय के उपरान्त थे। अशोक ने मगध साम्राज्य की पूर्णता के लिए कलिंग पर आक्रमण किया था। कलिंगवासी लड़े भी परंतु विजय प्राप्त नहीं कर सके। कलिंग पर विजय प्राप्त तो हो गई, परंतु अशोक का हृदय चीत्कार कर उठा, उसके ऊपर खिन्नता छा गई। कलिंग–विजय में कितना भीषण नरसंहार हुआ, कितने घर वीरान हुए, कितनी सधवा माँ–बहनों ने अपनी माँग का सिन्दूर सदैव–सदैव के लिए पोंछ डाला, बालक अनाथ हो गए। देश की हरी–भरी भूमि शमशान जैसी भयानक दिखाई पड़ती थी।

सम्राट अशोक की आँखों के आगे हिंसा की व्यर्थता नाचने लगी। उसी दिन से अशोक ने हिंसा के स्थान पर अहिंसा को अपना लिया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह कभी शस्त्र धारण नहीं करेगा, संसार को हिंसा के बजाय प्रेम, करुणा और अहिंसा से जीतेगा। इस घटना के बाद अशोक ने जो विजय प्राप्त की वह आज भी भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। हिटलर और नेपोलियन जैसे भी इतनी महान् विजय प्राप्त नहीं कर सके जितनी अशोक ने की। चीन, जापान, जावा, बाली, स्याल और सिंहल आदि देशों में आज भी बौद्ध धर्म छाया हुआ है, यह अशोक के प्रेम–अभियान का ही परिणाम है।

भगवान बुद्ध का सबसे बड़ा धर्म अहिंसा ही था। प्रेम और करुणा ही उनके सबसे बड़े मंत्र थे। मन, वाणी और कर्म से किसी भी प्राणी को कोई कष्ट न देना ही अहिंसा का मूल रूप है। अशोक ने जीवमात्र को सुख पहुँचाने के लिए जितने भी उपाय संभव हो सकते थे, किए। आधुनिक युग में महात्मा गाँधी ने भगवान बुद्ध, महावीर के सत्य, प्रेम और अहिंसा का प्रचार किया, जिससे विश्व में शांति और सद्भावना स्थापित हो सके।

एक समय होता था जब यह कहा जाता था कि युद्ध के बहुत से लाभ होते हैं। प्रथम तो यही माना जाता था कि युद्ध में मर जाने से सीधा स्वर्ग प्राप्त होता है, जैसा कि इस श्लोक में कहा गया है–

''हत्रो वा प्रप्स्यसि स्वर्ग, जित्वा वा मोक्ष्य से महीम्।''

इस श्लोक के अनुसार अपने वास्तविक अर्थों में क्षत्रिय युद्ध करके प्रजा की आततायियों से रक्षा करता था, इसीलिए इसे क्षात्र–धर्म कहा जाता था। भारतीय क्षात्र–धर्म रक्षा प्रधान होता था। हमने पहले किसी पर आक्रमण नहीं किया, परंतु विदेशी विचारक आक्रमण–प्रधा क्षात्र–धर्म को अधिक श्रेष्ठ मानते थे। हीगल और नित्शे जैसे विद्वानों ने युद्ध को विकासवाद का जन्म माना है।

युद्ध में अशक्त, असमर्थ, अनुपयुक्त और मूर्ख समाप्त हो जाते हैं और अधिकतम उपयुक्त प्राणी ही विजयी होकर अपनी वंश वृद्धि करते हैं। साथ ही उनका विचार यह भी था कि युद्ध में अन्याय भी समाप्त हो जाता है।

हो सकता है कि ये विचार किसी काल में सत्य रहे हों, परंतु आजकल तो युद्ध में सशक्त और बलिष्ठ नवयुवक ही युद्ध की अग्नि में स्वाहा होते हैं। अशक्त, असमर्थ और अनुपयुक्त तो घरों में बैठे रह जाते हैं।

विदेशियों की भांति भारत में भी राजे–महाराजे अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए युद्ध का आह्वान किया करते थे। कोई दिग्विजय के लिए निकलता था, तो कोई राजसूर्य यज्ञ करने में व्यस्त होता था, परंतु ये सब पुरानी बातें हैं। तब न इतने वैज्ञानिक प्रयोग थे और न विनाशकारी युद्ध। आज का युद्ध सम्पूर्ण मानव–सभ्यता और समाज का विनाश कर देगा, इसीलिए विश्व के सभी राष्ट्र एक स्वर से शांति की याचना कर रहे हैं।

विश्व के सभी राष्ट्र देख चुके हैं पिछले दोनों विश्व–युद्धों में धन, जन और शक्ति की कितनी क्षति हुई थी। पिछले द्वितीय विश्व–युद्ध में जापान के दो प्रमुख नगर हिरोशिमा और नागासाकी इस महा विध्वंस के साक्षी हैं। आज का युद्ध और विज्ञान मानव विकास के साधन न बनकर विनाश के साधन बने हुए हैं।

पिछले दो विश्व–युद्ध तक तो केवल अणु बमों का ही आविष्कार हुआ था, परंतु अब तो रूसी और अमरीकी वैज्ञानिकों ने उससे भी कई गुना अधिक विध्वंसकारी हाइड्रोजन बम का निर्माण कर लिया है। अब स्थिति यह है कि यदि युद्ध का सभी राष्ट्रों ने एकदम बहिष्कार न किया तो परिणाम इतना भयंकर होगा कि विजय के साथ–साथ विजेता भी सर्वनाश की आँधी में उड़ जाएगा। इसलिए विश्व के सभी राष्ट्र किसी न किसी रूप में युद्ध विराम की योजनाएं बना रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संगठन तथा बांडुंग सम्मेलन में एशिया तथा अफ्रीका के देशों का जो सम्मेलन हुआ, उसका लक्ष्य यही था कि विभिन्न देशों के मध्य तनाव कम हो और युद्ध की भावी आशंकाओं को रोका जाये। विश्व में शांति स्थापित करने के लिए चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चाउ–एन–लाई तथा भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने पंचशील को जन्म दिया, जिसकी प्रतिष्ठा राजनीतिक शक्ति तथा सिद्धान्त के रूप में बांडुंग सम्मेलन के उनतीस राष्ट्रों की स्वीकृति द्वारा हुई। पंचशील के सिद्धान्तों में सर्वप्रथम

'आक्रमण न करना' है। आक्रमण न करने का रूपान्तर अहिंसा ही होता है। 'शील' का अर्थ है कि मैं अहिंसा की शिक्षा ग्रहण करता हूँ। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध और नेहरू दोनों के पंचशील की यही पुकार थी कि संसार में अहिंसा होनी चाहिए, तभी विश्व–शांति संभव है।

यदि हम पिछले युद्धों की पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करें तो हमें निःसंदेह यह विदित हो जायेगा कि युद्ध के मूलभूत कारण क्या हैं। विचार–विमर्श के बाद इसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है कि पूँजीवाद, वर्ण–भेद, जाति–भेद, साम्राज्यवाद आदि विचारधाराएँ ही युद्ध की अग्नि को भड़काती हैं।

धरातल से युद्ध की विभीषिका को सदा–सदा के लिए समाप्त करने के लिए गाँधी जी ने विश्व को अहिंसा रूपी अस्त्र प्रदान किया। गाँधी जी कहा करते थे कि ''प्रेम और अहिंसा द्वारा विश्व के कठोर से कठोर हृदय को भी कोमल बना सकते हैं।'' उन्होंने इन सिद्धान्तों का परीक्षण भी किया और ये नितान्त सफल सिद्ध हुए। हिंसा से हिंसा बढ़ती है, घृणा से घृणा और प्रेम से प्रेम की अभिवृद्धि होती है, इसलिए प्रत्येक राष्ट्र पारस्परिक द्वेष–भाव के स्थान पर प्रेम की भावना जाग्रत करें।

विश्व बन्धुत्व और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना में वृद्धि किए बिना शांति स्थापित नहीं हो सकती। संयुक्त राष्ट्र संघ ने कोरिया और मिस्र युद्ध को रोककर विश्व–शांति को भंग होने से बचाया। ईराक में क्रांति द्वारा प्रजातंत्र की स्थापना की गई। साम्राज्यवादी राष्ट्र ब्रिटेन और अमेरिका ने इसका विरोध किया और अपनी सेनायें लेबनान और जोर्डन में भेज दी। विश्व–शांति तृतीय विश्व–युद्ध के रूप में भंग होने वाली थी, परंतु पं. नेहरू और रूस के तत्कालीन प्रधानमंत्री खुश्चेव ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सहायता से अहिंसा के द्वारा युद्ध रोकने का पूर्ण प्रयास किया और उन्हें अपने प्रयासों से पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई।

पंचशील और अहिंसा के सिद्धान्तों पर ही लगभग दो दशकों के अन्तराल के बाद भारत सरकार के विदेश मंत्री ने 12 फरवरी, 1978 से 20 फरवरी, 1979 तक चीन यात्रा करके पारस्परिक सीमा विवादों को स्नेह और सौहार्दपूर्ण वातावरण में सुलझाने के प्रयत्नों का सूत्रपात किया।

17 फरवरी, 1979 को सहसा चीन ने वियतनाम पर आक्रमण कर दिया, यह आक्रमण 2 मार्च, 1979 तक रहा। इस बीच भारत ने अहिंसा के आधार पर विश्वशांति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् में 25 फरवरी, 1979 को शांतिपूर्वक आपसी मतभेदों को दूर करने का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार अहिंसा से विश्व–शांति के मार्ग को प्रशस्त किया।

अतः यह निश्चित है कि बिना प्रेम और अहिंसा के विश्व में शांति स्थापित नहीं हो सकती। शांति के अभाव में मानव जाति का विकास संभव नहीं, विनाश संभव है, क्योंकि समय–समय पर युद्ध की चिंगारियों का विस्फोट कहीं न कहीं होता ही रहता है। प्रत्येक राष्ट्र का स्वर्णिम युग वही कहा जाता है जिसमें वहाँ पूर्ण शांति और सुख रहा हो। शांति काल में ही उत्कृष्ट कला–कौशल और श्रेष्ठ साहित्य का सृजन संभव होता है, उत्तमोत्तम रचनात्मक कार्य किये जाते हैं। भौतिक दृष्टि से व्यापार और कृषि की उन्नति भी शांति काल में ही संभव होती है।

अतः यदि विश्व का कल्याण चाहते हैं, तो हमें युद्ध का बहिष्कार करना ही होगा, अहिंसा और प्रेम की भावना से विश्व में शांति स्थापित करनी होगी, तभी विश्व में एक सुखमय एवं शांतिमय राज की स्थापना संभव होगी। ✿

महापुरुषों ने इस हिंसा वृत्ति के शमन का उत्तम उपाय 'प्रेम करना' बताया है। प्रेम का आधार और स्त्रोत परमात्मा है। प्रभु से प्रेम करने वाला इंसान किसी से द्वेष नहीं कर सकता। वह द्वेष का भाव भी मन के कोने में उत्पन्न नहीं होने देता।

मानवता को सुंदर बनाती है अहिंसा

◈ **fleju dkj** 10वीं
आर्य गर्ल्स पब्लिक स्कूल
पानीपत, हरियाणा

ekनव जीवन की सफलता या असफलता उसकी निर्णय शक्ति पर निर्भर करती है। निर्णय करने की योग्यता बुद्धि में है। दुनिया बेशक छोटी है परंतु आज भी वही ईर्ष्या–द्वेष, लूट–पाट, मारकाट, छीना–झपटी का दौर जारी है। वर्तमान हालात बयाँ कर रहे हैं कि चारों तरफ स्याह अँधेरा है। कहीं भी, कोई सुरक्षित नहीं है।

संसद से सड़क तक एक असुरक्षा, एक अविश्वास, एक खौफ व्याप्त है। खबरें छपती हैं कि दोस्त ने दोस्त की पीठ में छुरा घोंप दिया। पति–पत्नी के रिश्ते भी अविश्वास का कफन ओढ़ दफन हो रहे हैं। इतना ही नहीं, भाई–बहिन, पिता–पुत्री जैसे पाक रिश्तों पर भी प्रश्नचिन्ह लगने लगे हैं। समाचार पत्र देखते ही मानवता शर्म से तार–तार हो गयी लगती है।

हिंसा, बर्बरता, वैर, नफरत के गहन अंधकार में अहिंसा, करुणा, दया व सत्य का दीप जलाकर प्रकाश उत्पन्न करना आज की दुनिया में अत्यंत आवश्यक है। किसी प्राणी को मन, वचन, कर्म से दुःख न देना अहिंसा कहलाता है और प्राणी की हत्या करके उसके जीवित रहने का अधिकार छीन लेना हिंसा है। लेकिन मन, वचन कर्म से किसी को पीड़ा पहुँचाना भी हिंसा है।

हिंसा का सबसे बड़ा पोषक कारण है तनाव। वही आदमी हिंसा करता है जो तनाव से ग्रस्त हो। हिंसा का दूसरा पोषक कारण है रासायनिक असंतुलन। हिंसा केवल बाहरी कारणों से नहीं होती, इसके भीतरी कारण भी होते हैं। हमारी कोशिकाओं में जो रसायन बनते हैं उन रसायनों में जब असंतुलन पैदा होता है तब व्यक्ति हिंसक बन जाता है।

मन चंचल है। भटकता है, बहकता है, उड़ता है, बिखरता है। इसकी लहरों को रोकना वायु के वेग को रोकने के समान कठिन है। चक्षु आदि इन्द्रियों के माध्यम से चित्त सांसारिक पदार्थों में भटकता रहता है। यह पक्ष है आज के इंसान का जो वीभत्स है।

भारतीय चिंतन में भगवान महावीर और भगवान बुद्ध अहिंसा के प्रखर प्रेरक व पोषक रहे हैं। महावीर ने सत्य, अहिंसा, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंच महाव्रत के रूप में अपनाकर आदर्श नागरिक आचार संहिता का रूप समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। बौद्ध चिंतन में भी नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य व नशाबन्दी को पंचशील सिद्धान्त के रूप में अंगीकार किया गया।

वर्तमान परिवेश पर नजर डालें तो यही पाएंगे कि अत्यधिक हिंसा के कारण आज संसार की स्थिति बहुत भयावह हो चुकी है। भौतिक प्रगति और वैज्ञानिक उन्नति के नाम पर इन्सान ने मानवता के महाविनाश का ठोस इन्तजाम कर लिया है। प्रेम, दया, करुणा और क्षमा का स्थान क्रोध, हिंसा, नफरत और क्रूरता ने ले लिया है। अत्याचार, अनाचार और अनैतिकता को मानों मान्यता प्रदान कर दी गई है। जिन वैज्ञानिक अन्वेषणों का लक्ष्य मानव जीवन की रक्षा होना चाहिए था, वे मानव विनाश के उपकरण तराशने में तल्लीन हैं। हिंसा मानवीय व्यवहार में गहराई तक रच–बस गई है।

महापुरुषों ने इस हिंसा वृत्ति के शमन का उत्तम उपाय 'प्रेम करना' बताया है। प्रेम का आधार और स्त्रोत परमात्मा है। प्रभु से प्रेम करने वाला इंसान किसी से द्वेष नहीं कर सकता। वह द्वेष का भाव भी मन के कोने में उत्पन्न नहीं होने देता। प्रख्यात कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द जी

ने कहा है–''जिससे प्रेम हो गया, उससे द्वेष नहीं हो सकता, चाहे वह हमारे साथ कितना ही अन्याय क्यों न करे।''

महात्मा गांधी कहते हैं–''प्रेम से भरा हृदय अपने प्रेमपात्र की भूल पर दया करता है और खुद घायल हो जाने पर भी उससे प्यार करता है।'' महात्मा गाँधी ने तो बुद्ध और महावीर के अहिंसा सूत्र को देश की आजादी प्राप्त करने का मूल आधार ही बना लिया, जिससे विश्व के अनेकों जननायकों ने भी व्यावहारिक रूप से अपनाया। आज तो जनसाधारण अहिंसा को महात्मा गाँधी के हथियार के रूप में ही जानता है, तभी उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर को 'विश्व अहिंसा' के रूप में प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

बारूद के ढेर पर बैठी दुनिया ने अपने बैठने की जगह बदल ली है। बारूद के विस्फोट से विनाश में फिर भी कुछ समय लगता है लेकिन परमाणु बमों के जो जखीरे इन्सान ने आत्म सुरक्षा और शांति स्थापना के नाम पर बनाए हैं, वे महाविनाश को कुछ घंटों में ही सम्पन्न करने में सक्षम हैं। सारी दुनिया पर आधिपत्य जमाने का इन्सानी शौक नया नहीं है। सिकन्दर ने सारी दुनिया पर शासन करने की आकांक्षा में घोर हिंसा का सहारा लिया तो बाद में बौद्ध धर्म के शीर्ष समर्थक बने सम्राट अशोक ने भी कलिंग युद्ध में कम खून नहीं बहाया।

'यथा राजा तथा प्रजा' जैसा शासक वैसा ही जनमानस जैसा व्यवहार बन जाता है। राजा जब प्रभु के आगे नत होकर राज्य चलाने की शक्ति माँगता है, तब भगवान उसे शांति और अहिंसा का मार्ग ही मानते है जो जन–जन के कल्याण में सहायक भी होता है और कल्याणकारी भी। हिंसा का क्रूर प्रहार वर्षों तक इंसान को स्तब्ध रखता है।

दुनिया में जुनून और सनकपन में जहाँ–जहाँ भी बम गिराए गए, वहाँ–वहाँ उसका कुप्रभाव व वीभत्स रूप आज वर्षों बाद भी देखा जा सकता है लेकिन जहाँ शांति और अहिंसा को अपनाया गया, वहाँ मानवता का सुंदर दृश्य भी देखने योग्य है।

मनुष्य–जीवन में अनेकों बार ऐसा होता है कि हम किसी निराश अवस्था

में होते हैं तो लगता है कि आत्महत्या ही बस एकमात्र समाधान बचा है। इसमें प्रायः हम 'कोशिश' शब्द से दूर भागते हैं। कोशिश व मेहनत करने वाले निराश के अँधेरे में नहीं भटकते बल्कि लगातार कर्म करते हुए कर्मयोग का अध्याय लिखते हैं।

इतनी प्रगति होते हुए भी आज तनाव, असन्तोष एवं भय का वातावरण है। विकसित देशों की चिंता का कारण आतंकवाद है। उन्हें जैविक हथियारों के दुरुपयोग की आशंका रहती है तो विकासशील देशों को अपनी विकास की चिंता रहती है कि किस प्रकार विकसित राष्ट्रों की बराबरी करें और अपनी सुरक्षा करने के लिए आधुनिक हथियारों का जखीरा एकत्रित करें।

आज मानव के भीतर मानवीय मर्यादाएँ जैसे टूट सी गई हैं। दूसरी तरफ यही इंसान बेशुमार तरक्कियाँ कर रहा है। तेज–से–तेज वाहनों पर वह सवार है। हर हाथ में सेलफोन है। गाँव विकसित हो रहे हैं। सड़कें लम्बी–चोड़ी हो रही हैं। गगनचुम्बी इमारतें आकाश से बातें कर रही हैं। ऐसा लगता है समय और दूरी इंसान की मुठ्ठी में आ गयी है परंतु यह खुद बेकाबू हो गया है।

उसे खुद पर भी विश्वास नहीं रहा। कहने को तो ये आर्य संतान हैं परंतु आचरण पशुओं से भी बदतर है। ऋषि–मुनियों की धरती आज कलंकित है। हमें अपनी इस गलती का अहसास करना चाहिए। विश्व में भारत को एक शक्ति के रूप में जाना जाता है परंतु लोगों की आपसी सहनशीलता घटी है जिसके कारण अपराध बढ़े हैं।

पदार्थवाद ने इंसानियत को जैसे ढक लिया है। विलासिता की चाह और उसके लिए कुछ भी कर गुजरने की प्रवृत्ति ने एक परम्परा का रूप ले लिया है। विशालता दिलो–दिमाग में जैसे लुप्त हो चली है, जिससे लगभग हर कोई अपने घर में कैद हो गया है। सत्ता जनसेवा का माध्यम नहीं बल्कि धन कमाने का अति सम्मानित व्यवसाय बनकर रह गयी है। राजनीति से देश–भक्ति गायब हो चली है, जिससे वहाँ सभ्यता, सहयोग, सौहार्द आदि का प्रवेश जैसे निषेध हो गया है।

हमें इन सब परेशानियों का समाधान करना चाहिए जैसे अपने नागरिक कर्तव्य अर्थात् मताधिकार का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। जाति–बिरादरी, धर्म, मजहब आदि के संकीर्ण दायरों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को ही महत्ता देनी चाहिए। किसी भी प्रकार के लालच से बचकर, अपने विवेक का प्रयोग करके सही दल व व्यक्ति के पक्ष में मत देना चाहिए। हमें विद्यार्थियों को सही दिशा देकर समाज के स्वरूप को सुंदर बनाने का प्रयास करना चाहिए। ✿

भाईचारा नहीं तो शांति भी नहीं

◈ fMEiy 'kekl 11वीं
गवर्नमेंट सी.सै. स्कूल
कल्होग, सोलन, हिमाचल प्रदेश

सहयोग शांति का चौथा आधारभूत तत्व है। जब तक किसी क्षेत्र विशेष या राज्य विशेष की जनता में सहयोग की भावना विद्यमान नहीं होगी तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती है। यह सहयोग आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों का होना आवश्यक है। सहयोग के द्वारा बड़े से बड़ा कार्य आसानी से सम्पन्न हो सकता है।

vkधुनिक युग अंतर्राष्ट्रीयवाद का युग है। इसमें शांति और व्यवस्था को बनाए रखना एवं उसका प्रसार करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। किसी भी विकासात्मक कार्य को करने के लिए शांति की आवश्यकता पड़ती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र के द्वारा अथवा किसी भी व्यक्ति के द्वारा जो विकास किया गया है वह शांतिकालीन परिस्थितियों में ही संभव हो सका है। विकास के लिए शांतिपूर्वक प्रयत्न की आवश्यकता होती है। शांतिकालीन में हुए विकास चिरस्थाई होते हैं, उनमें कल्याण का तत्व भी विद्यमान रहता है।

शांति के अर्थ के विषय में विद्वानों में एकमतता नहीं है। विभिन्न विद्वानों द्वारा इसके संबंध में अलग–अलग मत प्रकट किए गए हैं। शांति का साधारण अर्थ शाश्वत् होना या स्थिर होना होता है। अर्थात् कोई भी ऐसा कार्य जिसमें किसी के भी हस्तक्षेप को अनुमति प्राप्त न हो वह शांति कहलाती है। मनु के शब्दों में ''शांति मन को स्थिर रखने की एक प्रक्रिया है।'' महाभारत के विषय में कहा गया है ''शांति के माध्यम से हम अपनी स्नायु और अपने मन पर नियंत्रण कर सकते

है।'' भगवान श्री कृष्ण ने गीता में उपदेश देते हुए शांति का उल्लेख किया है कि 'शांति से हमारा अभिप्राय अपने मन की इन्द्रियों पर व्यक्ति के नियंत्रण से है। यह एक शाश्वत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से स्वयं पर विजय पाई जा सकती है। जिसके जाने पर व्यक्ति स्वयं ही हार जाता है।''

शांति के अर्थ के समान ही, इसके तत्वों के विषय में भी विद्वानों में एकमतता नहीं है, फिर भी कुछ ऐसे तत्व हैं जिन पर वह अपनी साझा सहमति प्रकट करते हैं। उनमें से कुछ तत्व इस प्रकार से हैं:

- अहिंसा अथवा हिंसा का त्याग एक आधारभूत तत्व है। हिंसा के अस्तित्व में शांति की आशा नहीं की जा सकती। जहां पर अहिंसा पाई जाएगी, शांति स्वतः ही वहां आ जाएगी। अनेक महापुरुषों यीशू मसीह, हजरत मोहम्मद साहब, महावीर जैन, गौतम बुद्ध, गुरुनानक देव आदि ने शांति की स्थापना के लिए किसी भी तरह की हिंसा पर रोक लगाई है। उनका मत है कि यदि आप किसी व्यक्ति को बुरा–भला कहते हैं, गाली देते हैं या कटु वचन कहते हैं तो वह भी हिंसा की श्रेणी में आएगा और ऐसे में शांति की कामना नहीं की जा सकती है।

- शांति का दूसरा आधारभूत तत्व है धर्म। प्रत्येक धर्म शांतिपूर्वक रहने और उसके नियमों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने की अनुमति देता है। कोई भी धर्म दूसरे व्यक्ति को धोखा देने, उसे शारीरिक व मानसिक पीड़ा पहुंचाने और किसी भी तरह की हिंसा की अनुमति नहीं देता है। प्रत्येक धर्म 'अहिंसा परमो धर्म' की धारणा में विश्वास रखता है। धर्म को शांति के प्रमुख तत्व के रूप में देखा जाता है।

- विश्वास शांति का तीसरा आधारभूत तत्व है। जब सभी व्यक्तियों के मन में श्रद्धा और विश्वास पाया जाएगा तो वह कभी भी अहिंसक और अविश्वासी नहीं होंगे। अविश्वास की भावना मनुष्य में हिंसा को प्रोत्साहन देती है। प्राचीनकाल में अराजक स्थिति विद्यमान थी। इसका मुख्य कारण यह था कि मनुष्य को एक दूसरे पर विश्वास नहीं था। जब मनुष्य द्वारा आपस में विश्वास व्यक्त किया गया तो इसके कारण अनेक

सामाजिक और राजनीतिक संगठनों का निर्माण हुआ था। विश्वास व्यक्त करने का मुख्य कारण समाज में शांति की स्थापना था।

- सहयोग शांति का चौथा आधारभूत तत्व है। जब तक किसी क्षेत्र विशेष या राज्य विशेष की जनता में सहयोग की भावना विद्यमान नहीं होगी तब तक शांति स्थापित नहीं हो सकती है। यह सहयोग आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों का होना आवश्यक है। सहयोग के द्वारा बड़े से बड़ा कार्य आसानी से सम्पन्न हो सकता है। सहयोग की भावना ने ही प्राचीनकाल में आदि मानव को एकत्र होने और मिलजुल कर रहने के लिए प्रेरित किया था।

- भाईचारा, शांति का मुख्य पांचवां आधारभूत तत्व है। भाईचारा परस्पर सहयोग, विश्वास और प्रेम को बढ़ाता है। भाईचारे से समाज में अपनत्व की भावना पैदा होती है। भाईचारे का अभाव पाया जाता है, वहां पर अविश्वास, असहयोग, हिंसा, अधर्म का बोलबाला होता है। जब समाज में भाईचारा नहीं होगा तो वहां शांति भी नहीं हो सकती। यदि शांति की स्थापना करनी है तो सबसे पहले भाईचारे का होना आवश्यक है।

अहिंसा शांति का एक आधारभूत तत्व है जिसके अभाव में शांति की स्थापना कठिन हो जाती है, परंतु यह कहना कि शांति प्रायः अहिंसा चाहती है अथवा उसका समर्थन करती है, एक बहस का विषय बन जाता है। अहिंसा से हमारा अभिप्राय किसी को भी हिंसा न पहुंचाना होता है। इसमें हम शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा को शामिल कर सकते हैं।

गांधीजी का मत है कि ''किसी भी व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक पीड़ा पहुँचाना, उसे अपशब्द बोलना तथा किसी व्यक्ति के विरुद्ध बुरा सोचना भी हिंसा का ही रूप है।'' महात्मा गांधी को शांति का पुजारी माना जाता है जिन्होंने अपने अहिंसा के शस्त्र से सर्वप्रथम प्रिटोरिया की सरकार को अश्वेत लोगों को अधिकार व स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए बाध्य किया था।

भारत में जहाँ 'अहिंसा परमो धर्म' को स्वीकार किया जाता है, वहीं युद्ध को भी राजनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। संयुक्त राष्ट्र की

स्थापना विश्व शांति को और सुरक्षा को स्थिर रखने के उद्देश्य से की गई है। विश्व शांति और अहिंसा को स्थिर रखने का दायित्व संयुक्त राष्ट्र संघ के एक महत्वपूर्ण अंग सुरक्षा परिषद् पर डाला गया है। इसके साथ ही महासभा भी इस दायित्व की पूर्ति के लिए अपना योगदान देती है।

अंतर्राष्ट्रीय संगठन का मुख्य उद्देश्य विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करने के लिए विश्व को संभावित युद्धों से बचाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम 1919 में प्रयास किया गया था। यह प्रयास था राष्ट्र संघ की स्थापना।

संयुक्त राष्ट्र का मुख्य उद्देश्य और दायित्व विश्व शांति और सुरक्षा को स्थिर बनाए रखना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण साधनों द्वारा हल निकाला जाता रहे। शस्त्रीकरण जहां विश्व शांति के लिए एक बड़ा खतरा है, वहीं यह विश्व शांति को प्रोत्साहित करने का सशक्त माध्यम भी है जिसके द्वारा स्थायी शांति के प्रयासों को बल दिया जा सकता है। ✿

भारत विश्व शांति का पक्षधर

◈ xftrk luoky 6ठी
होली एंजिल्स कॉन्वेंट स्कूल
सांगुड़ी गार्डन, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

हमारी सभी प्रार्थनाएं 'ऊँ विश्ववानी देव' से शुरू होकर 'ऊँ शांतिः शांतिः' पर समाप्त होती है। 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' वाली सूक्ति इसी शांति को प्रकट करती है। कवि जयशंकर प्रसाद के अनुसार 'औरों को हँसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ। अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओ।'

ईश्वर ने प्रकृति, जीव–जन्तु तथा मानव सभी को विलक्षण शक्तियों से सुशोभित, अहिंसक तथा स्वार्थ रहित बनाया है। इस समाज में रहकर मानव स्वार्थी होकर अपनी सुविधाओं के लिए किसी भी हद तक गिरता जा रहा है जो समाज, देश और विश्व के लिए हानिकारक है।

आज हमारा विश्व सामाजिक–राजनैतिक आदि अशांतियों से घिरा हुआ विनाश की कगार पर खड़ा है। अपनी अपार शक्तियों का परिचय देने के लिए वह अणुबम, परमाणु बम आदि बनाकर विश्व को भयानक तथा अशान्तमय वातावरण दे रहा है।

आज विश्व में सर्वत्र अशांति तथा द्वेष आदि की भावनाएं फैली हुई हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि शक्तिमान देश निर्बल देश को उकसा कर सबको विरोधी बना लेता है। विश्व दो हिस्सों में बंट गया है शोषक और शोषित। ईर्ष्या, द्वेष और प्रतिशोध की ऐसी आग भी जल रही है, जो ईंधन जैसी उपेक्षित दिखने पर भी भयानक दावानल भड़का देने के लिए काफी है। पूरा विश्व भागों में बंटकर विनाश के गर्त में जाने का नित्य प्रयास करते दिखाई देता है।

सच है कि आज विश्व बारूद के ढेर पर खड़ा है। और कोई भी सिरफिरा न जाने कब इस ढ़ेर को पलीता लगाने की मूर्खता कर सकता है, इसलिए इस अशांति को दूर करने लिए हमें विश्व शांति की नितान्त आवश्यकता है। विश्व शांति आज हमारे सामने एक चुनौती बनकर प्रकट हुई है। आखिर क्या है ये शांति? शांति का अर्थ है चुपचाप अन्याय या अत्याचार सहन न करना और न ही निष्क्रियता। इसका अर्थ है कि हम जान बूझकर ऐसे कार्य न करें जिनसे शांति भंग होने का अंदेशा हो।

हमारा देश भारत सदैव विश्व शांति के पक्ष में रहा है। उसने कभी भी किसी को पीड़ा नहीं पहुंचाई है बल्कि उसने तो आक्रमणकारियों को भी गले से लगाया है। कवि जयशंकर प्रसाद के अनुसार 'विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम। भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर–घर घूम।'

हमारी सभी प्रार्थनाएं 'ऊँ विश्ववानी देव' से शुरू होकर 'ऊँ शांतिः शांतिः' पर समाप्त होती है। 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' वाली सूक्ति इसी शांति को प्रकट करती है। कवि जयशंकर प्रसाद के अनुसार 'औरों को हँसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ। अपने सुख को विस्तृत कर लो सबके सुखी बनाओ।'

अतः हम कह सकते है कि भारत सदैव विश्व शांति के पक्ष में रहा है। इसके लिए उसने गुटनिरपेक्षता, निशस्त्रीकरण आदि को विशेष महत्व दिया। सरदार पटेल के अनुसार लोहा कितना भी गर्म हो जाए परंतु लोहार का हथौड़ा ठंडा रहना चाहिए।

विश्व शांति और अहिंसा का गहरा सम्बंध है क्योंकि जहाँ अहिंसा है। अहिंसा विश्व धर्म की धुरी है। मानवता आज भी उग्रवाद से घिरी है पर विश्व की महानतम शक्तियों को अब अहसास होने लगा है कि विश्व के अस्तित्व की रक्षा हिंसा से नहीं अपितु अहिंसा से ही सम्भव है। अहिंसा अपरिग्रह और अनेकांत नामक दो हाथों से घिरी है। इसमें पहला निर्वस्य न करके रोटी कपड़ा और मकान की व्यवस्था करता है और दूसरा डिब्बाबंद जिंदगी जीने के लिये मजबूर मानव के लिए पंथ परम्परा और कदा ग्रहों की रुद्र परतों से बाहर निकलता है।

अहिंसा की चर्चा होने पर गौतम बुद्ध, वर्धमान महावीर आदि का नाम लिया जाता है। अहिंसा उनके लिये सत्य समान है। अहिंसा का अर्थ ''किसी प्राणी का मन कर्म और वचन से किसी के भी प्रति हिंसा न करना है। महावीर वर्धमान कहते हैं कि ''यदि कोई आदमी अपने मन में किसी के प्रति बुरी भावना रखता है, बुरे व कटुवचन बोलता है तो भी वह हिंसा है। अहिंसा सर्वश्रेष्ठ है।

ऐसा कोई धर्म नहीं है जो अहिंसा का उपदेश न देता हो। यह अहिंसा क्या है? महात्मा गांधी जी कहते हैं कि अहिंसा को मानने वाले परम धर्म है कि उस युद्ध को रोके जो शोषित का अहित करता हो। उसे ध्यान रखना होगा कि वह देश और सम्पूर्ण जगत को उबारने की प्राणपण से कोशिश करता रहे। अतः हम कह सकते हैं कि शांति के लिए अहिंसा का विशेष महत्व है क्योंकि प्रेम और अहिंसा द्वारा कठोर से कठोर हृदय भी कोमल बनाया जा सकता है।

विश्व शांति कैसे और किस प्रकार से हम कायम रख सकते हैं, इसके लिए सबसे पहले हमें एक–दूसरे के प्रति सद्भावना, प्रेम, विश्वास, रखकर घृणा की भावना को त्यागना होगा। शक्ति भी इसका आधार है। दूसरे के सुख–दुःख का ध्यान रखना और भाईचारे की भावना रखना आदि। यदि इन्हें समस्त भावना से प्रत्येक मनुष्य अपना ले तो विश्व में शांति होने से काई नहीं रोक सकता।

मानव कल्याण समारोह स्थापित करके समस्त दुर्भावनाओं को दूर किया जा सकता है। हमें भौतिकवादता छोड़ प्रकृतिवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। विश्व शांति के लिए पुरातनकाल के ऋषियों, दार्शनिक और श्रेष्ठ पुरुषों के जीवन सिद्धांतों को समझकर उन पर अमल करना चाहिए। यदि संसाधनों को लेकर संघर्ष न किया जाए तो भी इसे रोका जा सकता है जिसमें तेल प्रमुख है। इसलिए पुनः प्रयोज्य ईंधन स्त्रोत का उपयोग करने वाली प्राद्यौगिकी विकसित करके इस विश्व शांति को प्राप्त किया जा सकता है।

अतः कहते हैं कि विश्व शांति की आज परम आवश्यकता है। सौभाग्य

से सभी बड़े–बड़े राष्ट्र इसमें प्रयासरत है। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम भी इसमें सहायक है। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना इसी का परिणाम है। गुटनिरपेक्षता इसी दिशा में काफी सफल प्रयास है। मार्ग में भले ही कोई कितनी रुकावटें पैदा करे पर यह शांति आएगी और मानव तथा समस्त विश्व इस विश्व शांति को पाकर चैन की सांस ले पाएगा अन्यथा तृतीय महायुद्ध समस्त राष्ट्रों को समरस्थल में बुला रहा है। ✿

विश्व शांति की दिशा में कुछ बढ़ते कदम

◈ ok; çxfr jko 10वीं
भारतीय विद्या भवन
टेडपल्ली, वेस्ट गोदावरी, आंध्रप्रदेश

आज यह सौभाग्य का विषय है कि विश्व के कई बड़े राष्ट्र विश्व शांति के प्रयास की दिशा में प्रयत्नशील दिखाई दे रहे हैं। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के भयंकर परिणामों और इससे प्रभावित आज के जीवन स्वरूपों पर भी विचार किए जा रहे हैं और इसके लिए कई ठोस और प्रभावशाली कदम उठाए गए हैं।

fdसी कवि ने आज विश्व की गम्भीर और अशांत स्थिति पर विचार करते हुए लिखा है:

जान पड़ता है सब संकट विसार कर,
मानव है नाश के कगार पर
जागी है उसमें पाशविकता, बधिकता,
देखता नहीं है, कुछ वृद्ध बाल,
सबके लिए है काल,
दस्यु सम घात में है खड़ा,
लज्जा नहीं आती है, आत्मा के हनन की।

सचमुच में आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा मृत्यु की गोद में धड़ाधड़ चला जा रहा है। मनुष्य ने मनुष्य को अपने स्वार्थों से जकड़ लिया है। उसे आज कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा है। उसे केवल स्वार्थ दिखाई दे रहा है। वह इस स्वार्थ की पूर्ति के लिए आज भयानक और कठिन से कठिन अस्त्र–शस्त्रों की होड़ लगाए जा रहा है।

आज इसीलिए मनुष्य सर्वविनाश के लिए अणुबम–परमाणु बम बना–बनाकर अपनी अपार शक्ति का परिचय दे रहा है। वह प्रतिदिन इसी प्रयत्न में लगा हुआ है। आज अशांतमय और भयानक वातावरण का निर्माण करने में एकजुट होकर सब कुछ भूल चुका है कि क्या उचित है और क्या अनुचित है। इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व एक बहुत बड़ी अशांति के दौर में पहुंच चुका है।

इसे देखते हुए विश्व शांति की आवश्यकता और तेज हो गयी है। इस अशांति के कारण कई हैं लेकिन इनमें से मुख्य कारण यह भी है कि विश्व के अनेक सबल राष्ट्र एक–दूसरे निर्बल और शक्तिहीन राष्ट्र को अपने चंगुल में फंसाए रखने के लिए भारी उद्योग किया करते हैं। इसके लिए वे अपनी निजी शक्ति और आवश्यकताओं को बढ़ाते ही जा रहे हैं। इसके साथ ही अपने सम्पर्कों अन्य शक्तिहीन और छोटे राष्ट्रों को भी अपनी शक्तियों की सहायता प्रदान करते हुए उन्हें दूसरे राष्ट्रों के प्रति उकसाने या उभारने की कोशिश में बराबर लगे रहते हैं। इस प्रकार से आज पूरा विश्व कई भागों में बंटा हुआ परस्पर विनाश के गर्त में पहुंचने के लिए दिखाई देता है।

विश्व शांति कैसे और किस प्रकार से हो सकती है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। इस विषय के लिए हम यह कह सकते हैं कि विश्व शांति के लिए भाईचारे की भावना सबसे पहले जरूरी है। भाईचारे, मेल–मिलाप की भावना और परस्पर हित–चिंतन की भावना विश्व शांति की दिशा में महान् कदम और सार्थक कार्य होगा। परस्पर दुःख–सुख की भावना और कल्याण की स्थापना की भावना विश्व शांति के लिए ठोस कदम होगा।

विश्व शांति के लिए अपने ही समान समझना और अपने ही समान आचरण करना एक प्रभावशाली विचार होगा। अगर इस तरह की सद्भावना और श्रेष्ठ विचार प्राणी–प्राणी के मन में उत्पन्न हो जाएगा तो किसी भी प्रकार से विश्व में अशांति और अव्यवस्था की भावना नहीं हो सकती है और दुर्भावनाएं समाप्त हो सकती हैं।

विश्व शांति और विश्व को समान दशा में लाने के लिए हमें मानव कल्याण समारोह का आयोजन करना चाहिए। इसके द्वारा जन–जन में यह प्रेरणा जगानी चाहिए कि हम किस प्रकार से अमानवीय और पाशविक दुर्भावनाओं से बचें। इस प्रकार के विचार हमें विभिन्न प्रकार की योजनाओं और कार्यक्रमों के द्वारा अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। यह तभी संभव है जब हम भौतिकवादी दृष्टिकोणों का परित्याग करें। इसके स्थान पर हमें प्रकृतिगामी और प्रकृतिवादी दृष्टिकोणों को अपनाना चाहिए।

विश्व शांति के लिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम भौतिकता के घने जंगल से आध्यात्मिकता के सपाट मैदान की ओर लौट आएं। इस अर्थ में हमें अपने पुरातन काल के ऋषियों और मुनियों के अलौकिक और दिव्य जीवन संदेश को समझना होगा। उनका हमें अनुसरण करना होगा। विश्व शांति के प्रयास में हमें महान् दार्शनिकों और महात्माओं के जीवन सिद्धांतों और आचरणों को अपनाना होगा, उनके अनुसार चलना होगा। इसके परिणामों को हमें समझ करके दूसरे को इससे प्रभावित करना होगा तभी विश्व शांति का सार्थक और ठोस प्रयास होगा।

आज यह सौभाग्य का विषय है कि विश्व के कई बड़े राष्ट्र विश्व शांति के प्रयास की दिशा में प्रयत्नशील दिखाई दे रहे हैं। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के भयंकर परिणामों और इससे प्रभावित आज के जीवन स्वरूपों पर भी विचार किए जा रहे हैं और इसके लिए ठोस और प्रभावशाली कदम उठाए गए हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना इसी दृष्टिकोण का परिणाम है जिससे पारस्परिक झगड़े और संघर्षों को हल किया जाता है, इसी तरह का कुछ और प्रयास विश्व स्तर पर होने चाहिए। विश्व के जो पिछड़े और दुःखी राष्ट्र हैं, उनको हर पाकर की सुविधाएं प्रदान करने के लिए हमें विश्व स्तर पर कोई संयुक्त संस्था की स्थापना अवश्य करनी चाहिए। गुट निरपेक्ष संस्था इस दिशा में सफल और उचित प्रयास है। ✿

इस अहिंसा रूपी संजीवनी बूटी के प्रयोग के परिणाम को विभिन्न देशों ने माना भी है और जाना भी है। यही कारण है कि भारत ही नहीं अपितु विश्व के कई ऐसे देश हैं जिनमें अहिंसा के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं और उनमें दिनों-दिन वृद्धि होती जा रही है।

आतंकवाद के खिलाफ सभी एकजुट हों

◈ **vf'ofu** 8वीं
बाल मंदिर सी. सै. स्कूल
कॉलेज रोड, ब्यावर, राजस्थान

foश्व में शांति होना मनुष्य के लिए उतना ही आवश्यक है जितना जीवित रहने के लिए अन्न–जल। इसलिए विश्व में शांति की आवश्यकता है। सभी देश इस बात से पूर्ण रूप से सहमत हैं कि विश्व में शांति बनी रहे। पर यह शांति कैसे हो, इस बात पर सभी देशों के विचार भिन्न–भिन्न हैं। इन देशों का मानना है कि शक्ति संतुलन अर्थात् बराबर की सैन्य शक्ति के कारण विश्व में शांति बनी रहेगी। कुछ देशों का मानना है कि अत्यधिक सैन्य शक्ति के कारण विनाश का खतरा मंडराता रहेगा। इस तरह वैचारिक मतभेद के कारण विश्व में शांति का कोई स्थायी हल अभी तक यदि नजर आ रहा तो वह है अहिंसा।

vfgl k dh mi;kfxrk% मानव जाति सदियों से हिंसा और अहिंसा के मार्ग को अपनाती रही है। हिंसा विनाश को जन्म देती है और विनाश से पृथ्वी पर बहुत–सी सभ्यताएँ नष्ट हो जाती हैं। मानव जाति अनेक भागों में बँट जाती है तथा सदियों तक संघर्ष होते रहते हैं। ऐसे में हमें हिंसा त्याग कर अहिंसा का मार्ग ही अधिक उपयोगी सिद्ध लगता है। इसमें कोई संदेह नहीं है। हमें इस मार्ग को अपनाना अत्यंत आवश्यक है।

vfgalk ij la;Dr jk"V" la?k dk fopkj% अहिंसा एक ऐसा शस्त्र है जिसके द्वारा बिना रक्तपात के सभी लोगों द्वारा अपनी बात सभी देशों के सामने रखी जा सकती है। इस विचार को संयुक्त राष्ट्र संघ ने पूरी तरह बिना किसी विवाद के स्वीकार कर लिया है। जब विश्व पंचायत इस विचार से सहमत है तो इसे लागू करने पर विश्व में शांति बनी रहे, यह निश्चित है।

vefjdk dk vfgalk ls çHkkfor gkuk% विश्व में सर्वशक्तिमान राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने गाँधी जी को अपना आदर्श माना और वह भी सिर्फ इस कारण से की गाँधी जी ने अहिंसा के सहारे भारत को आजादी दिलाई। विश्व में शक्तिशाली राष्ट्र के राष्ट्रपति द्वारा अहिंसा की शक्ति को स्वीकार करना अपने आप में यह सिद्ध करता है कि यदि मानव जाति को शांति से रहना है तो अंहिसा का सहारा सर्वाधिक उपयुक्त है।

ol/ko dVEcde% आज के पश्चिमी सभ्यता की जीवन शैली के कारण हम भारतीय लोग विश्व बन्धुत्व (वसुधैव कुटुम्बकम्) के विचार से इतने परे होते जा रहे हैं कि छोटे से लालच में भाई को भाई मार रहा है। जो भारत में होना मुश्किल था वह आज हमारे अहिंसा के विचार को त्यागने के कारण पारिवारिक कलह के रूप में सामने आ रहा है।

हमारे पूर्वजों ने अहिंसा के विचार के कारण ही विश्व को अपना परिवार समझने का सिद्धान्त विकसित किया। इस सिद्धान्त को जब हमारे पूर्व प्रधानतंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने विश्व के सामने अपने संयुक्त राष्ट्र संघ के भाषण में वर्णित किया तो पूरे विश्व के नेता इस विचार को ध्यान से सुनने व मानने के लिए विवश हो गए, अतः जो सिद्धान्त सर्व स्वीकार्य हो, वही विश्व में शांति स्थापित कर सकता है और वह है अहिंसा।

ijek.k 'kfDr dk lgh mi;kx% आज विश्व के हर देश में बिजली जैसी शक्ति की लगातार आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इसे परमाणु बिजली द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। शांति के काल में परमाणु विद्युत का निर्माण सुगमता से सभी देश आपस में मिलजुल कर करते हैं

और अशांति के काल में परमाणु बम बनाकर एक–दूसरे देश पर गिराते हैं। यह अहिंसा के सिद्धांत के पूर्णतया विरुद्ध है, अतः हमें विश्व में शांति स्थापित रखने के लिए अंहिसा का विचार अपनाना होगा तथा हिंसा को त्यागना होगा।

/ke o fl)krk dk mn;% विश्व शांति के लिए अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए अनेक धर्मों ने अपने आप में कुछ संसोधन किए हैं जैसे इसाईयों में जो कट्टर कैथोलिक थे, उनमें प्रोटोस्टेन्ट होगा। दूसरा हिन्दुओं में बौद्ध व जैन मतों का उदय होना। इस्लाम में अहमदिया समुदाय का उदय होना इस बात को सिद्ध करता है कि मनुष्य शांति के लिए अंहिसा के सिद्धान्त को मानना व अपनाना चाहता है।

vfglk ijek/ke% भारत शुरू से ही शांतिप्रिय देशों की श्रेणी में सबसे अग्रणीय रहा है और यह ताज हमेशा बरकरार रखेगा। अहिंसा का जीता–जागता उदाहरण राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की कथा है जिन्होंने काले–गोरे के मतभेद एवं अफ्रीका जैसे देशों में जाकर के भी लोहा लिया।

vkradokn vkj vefjdk% वैश्विक अशांति का मुख्य कारण आज आतंकवाद है। आतंकवाद के कारण आज छोटे से छोटे राष्ट्र से लेकर बड़े से बड़ा राष्ट्र भी ग्रस्त है। अमेरिका जैसा आधुनिक हथियारों से लैस देश भी आतंकवाद की मार अभी भी झेल रहा है। वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर किया गया आतंकी हमला अमेरिका के सीने को चीर कर अलग कर गया। उसकी कराह के कारण अमेरिका भी आतंकवाद से निपटने के लिए बेताब हो उठा और उसने भी शांति का जीवन स्थापित करने के लिए जो शपथ ली, उसे ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान की धरा पर मार कर ही पूरी की।

eEcb&gkVy rkt ij vkradokn geyk% अहिंसा के पुजारी और शांतिप्रिय देश की संसद में जब आतंकवादी घुस कर आये तो भारत की जनता के मन में भय पैदा हो गया था कि आज आतंक ने हमारे सबसे सुरक्षित लोकतंत्र को भी हिला दिया। इसके बाद तो जैसे भारत को आतंकवाद का ग्रहण लग गया। जयपुर साइकिल सिरियल बम ब्लास्ट

हो या अहमदाबाद या मुम्बई, इस प्रकार के सब हमलों के बाद मुम्बई होटल ताज पर जो आतंकवादी हमले हुए, उनसे पूरा विश्व हिल गया। भारत, चीन, ईरान, इराक, अमेरिका आदि देश पूरे विश्व में इस प्रकार की समस्याओं से निपटने तथा विश्व में शांति का पाठ कायम करने के लिए लालायित हो रहे हैं।

vfgalk gh ,dek= mik;% अहिंसा आज के इस व्यस्ततम जीवन में इस प्रकार भी अमोघ औषधि है जिसके माध्यम से क्रूरता के अपराधी को भी अहिंसा के माध्यम से पुनः शांति के पथ पर लाया जा सकता है। इस अहिंसा रूपी संजीवनी बूटी के प्रयोग के परिणाम को विभिन्न देशों ने माना भी है और जाना भी है। यही कारण है कि भारत ही नहीं अपितु विश्व के कई ऐसे देश हैं जिनमें अहिंसा के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं और उसमें दिनों–दिन वृद्धि होती जा रही है।

अहिंसा का यह अमोघ रामबाण हमें मानव प्रेम, भाईचारे और सहयोग का पाठ पढ़ाता है आपस में शांतिमय वातावरण पैदा करने के लिए मूल मंत्र है। अतः उपयुक्त तत्थों के आधार पर आज हम इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि यदि विश्व में शांतिमय जीवन प्राप्त करना है और मारधाड़–लूटपाट जैसी घटनाओं से निपटारा पाना है तो सब देशों को मिलकर काम करना होगा तथा पूरे विश्व को इस प्रकार का ऐतिहासिक कदम उठाते हुए फैसला लेना होगा कि आपस में कहीं पर भी आतंकवाद की कोई घटना होगी तो उस देश के साथ समूचा विश्व साथ होगा। ✿

समस्त विश्व आज शांति चाहता है। दुःख मिटाने के रास्ते खोज रहा है। इसी खोज में मानस ने जन्म दिया पदार्थ प्रधान संस्कृति को, 'थ्रो अवे' जीवन शैली को। बनाओ, भोगो और फेंको। इस धारा में उपज रही है विश्व में अशांति, अतृप्ति व मानसिक तनाव।

पदार्थों का विस्तार है हिंसा का आधार

◈ ehr fot; vkpfy;k 6ठी
कार्मल कॉन्वेन्ट स्कूल
उज्जैन, मध्यप्रदेश

foश्व के सभी दर्शनों में अहिंसा की अवधारणा मिलती है। भगवान महावीर ने कहा है–''प्राणी मात्र के प्रति जो संयम है, वही अहिंसा है।'' महात्मा गांधी ने कहा है–''समस्त जीवों के प्रति दुर्भावनापूर्ण तिरोभाव ही अहिंसा है।''

अहिंसा केवल ऋषि–मुनियों व संतों के लिए ही नहीं है, यह सर्वसाधारण जनता के लिए है। यह कायरों की चादर नहीं अपितु वीरों का भूषण है। उपरोक्त सभी कथनों का तत्व एक ही है कि ''मैं समूचे संसार को मित्र की दृष्टि से देखूं।'' अहिंसा व शांति इन दोनों में तादात्मय संबंध है 'अहिंसा शांति है, शांति अहिंसा है।'

आज का आदमी विश्व शांति की बात तो बहुत सोचता है परंतु सच्चाई को विस्मृत कर देता है। अहिंसा के बिना विश्व शांति असंभव है। साधन के बिना साध्य को पाने की आकांक्षा अपने आप में एक आश्चर्य है जो वर्तमान में घटित हो रहा है। विश्व में प्रत्येक व्यक्ति शांति की चाह लिए हुए है लेकिन उसके लिए सही साधन का चुनाव करने की ललक उसमें नहीं है।

क्या अहिंसा के बिना शांति संभव है? असंभव को संभव बनाने की धुन में आदमी लगा है, हिंसा को बढ़ावा दे रहा है और शांति के लिए कस्तूरी मृग की तरह चक्कर लगा रहा है। आज की वैश्विक समस्या है अशांति। अर्थ का अभाव है तो भी अशांति और अर्थ है तो भी अशांति। जिसके पास पैसा नहीं है उसके सामने सुबह उठते ही प्रश्न आता है रोटी–कपड़े आदि का। जिसके पास पैसा है या जो धनी है, उसके सामने भी प्रश्न है कि धन को सुरक्षित कैसे रखा जाए? करों से कैसे बचा जाए? इन्हीं प्रश्नों के हल खोजते–खोजते आदमी का मन अशांत रहता है और हिंसा को जन्म देता है।

व्यक्ति के इच्छा–भोग व सुख–सुविधावादी दृष्टिकोण ने हिंसा को बढ़ावा दिया है जबकि अहिंसा का सिद्धांत आत्मशुद्धि का सिद्धान्त है। पदार्थ सीमित हैं, उपभोक्ता अधिक हैं और इच्छा असीम है। अहिंसा का सिद्धान्त है इच्छा का संयम करना, उसकी काटछांट करना। जो इच्छा पैदा हो, उसे उसी रूप में स्वीकार न करना बल्कि उसका परिष्कार करना।

आज के वैज्ञानिक व उद्योगपति मनुष्य के सामने अधिक से अधिक सुविधा के साधन प्रस्तुत करना चाहते हैं, जो पहले कभी नहीं बने। वैसे पदार्थों का निर्माण कर उन्हें जनसाधारण के लिए सुलभ करना चाहते हैं। एक ओर जनता का सुविधावादी दृष्टिकोण बन गया है, दूसरी ओर सुविधा के साधनों के निर्माण की होड़ लगी हुई है।

जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं गौण बन गई हैं। सुविधा के साधन और प्रसाधन सामग्री ये मुख्य बन गये हैं। इस स्थिति में अनावश्यक हिंसा बढ़ी है और विश्व शांति का संतुलन बिगड़ा है। पृथ्वी का अतिरिक्त मात्रा में दोहन किया जा रहा है। ऊर्जा के स्त्रोत समाप्त होते जा रहे हैं। खनिज भंडार खाली होते जा रहे हैं। पानी का अतिमात्रा में प्रयोग किया जा रहा है। आशंका है एक दिन पीने का पानी दुर्लभ हो जायेगा।

जंगलों व पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के परिणाम सम्पूर्ण विश्व भुगत रहा है। इन समस्याओं पर प्रकाश डालें तो ज्ञात होगा की हिंसा को मान्यता मिलती जा रही है। हिंसा है पर इसका अनुभव भी नहीं किया जा रहा

है। समस्त विश्व आज शांति चाहता है। दुःख मिटाने के रास्ते खोज रहा है। इसी खोज में मानस ने जन्म दिया पदार्थ प्रधान संस्कृति को, 'थ्रो अवे' जीवन शैली को। बनाओ, भोगो और फेंको। इस धारा में उपज रही है विश्व में अशांति, अतृप्ति व मानसिक तनाव।

अहिंसा वास्तविक सच्चाई है। अहिंसा की दृष्टि को विकसित किए बिना इस समस्या से मुक्त नहीं हुआ जा सकता क्योंकि पदार्थों का अधिक विस्तार हिंसा के विस्तार को जन्म देता है, अर्थात् अशांति का जन्म। अहिंसा के बिना अशांति का विराम कहां होगा। आज विश्व विनाश के कगार पर खड़ा है। इसका कारण है अर्थशास्त्र का अनसोचा, अनसमझा सिद्धांत 'जितनी इच्छा बढ़ेगी, उतना उत्पादन बढ़ेगा, उतनी ही समृद्धि बढ़ेगी।' अहिंसा की दृष्टि से देखें तो उतनी ही हिंसा बढ़ेगी, उतनी ही अशांति बढ़ेगी। क्योंकि उत्पादन में वृद्धि के लिये सृष्टि के संतुलन से छोड़छाड़ और वनस्पति जगत की हिंसा ही होगी।

प्रत्येक राष्ट्र विश्व में अपनी प्रभुसत्ता बनाए रखना चाहता है। अपनी सत्ता का विस्तार व दूसरे राष्ट्र को अपने अधीन करने के लिए शस्त्रीकरण को बढ़ावा देता है। यहाँ शस्त्र निर्माण की होड़ में विश्व में शांति की बात एक आश्चर्य है। यानि बात शांति की और काम शस्त्र निर्माण का। यह कैसा विरोधाभास है? यदि सत्ता व प्रभुता के विस्तार से शांति स्थापित होती तो सम्राट अशोक अहिंसा का पुजारी नहीं बनता, शांति का संदेशवाहक नहीं बनता। हजारों बच्चों व महिलाओं की चीत्कार, रुदन का स्वर उसके कानों में पड़ा तब उसका हृदय अहिंसा के प्रति जागृत हुआ और अहिंसा में आस्था तटस्थ करके लड़ाकू योद्धा से शांति का दूत बनकर अमर हो गया।

तैमूरलंग जैसा क्रूर शासक हिंसक व्यक्ति एक कवि के प्रत्युत्तर से अपना हृदय परिवर्तन कर अहिंसा को अपनाता है। महात्मा गांधी ने अहिंसा का अस्त्र अपनाया तो भारत की आजादी जैसा दुःसाध्य लक्ष्य प्राप्त किया अर्थात् जो कार्य पचास हजार सैनिक नहीं कर सकते थे, वह कार्य गांधी जी ने अहिंसा के शस्त्र से कर दिखाया।

आज सारा विश्व उखड़ा हुआ है, अशांत है, चिन्तित है। भगवान महावीर का अहिंसा दर्शन विश्व को शांति के लिए लुभावना लग रहा है। अहिंसा की बात विश्व शांति के लिए उफनते दूध पर ठण्डे पानी का छींटा है। अहिंसा के सह–अस्तित्व के सिद्धांत का सतत् प्रशिक्षण बच्चों को दिया जाए, इसके बिना विश्व शांति, व समृद्धि नहीं मिल सकती फिर चाहे कितनी ही योजनाएं चलें, कितना ही औद्योगिक विकास हो जाए। ✿

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का घोष करने वाले भारतीय थे। सबसे पहले भारतीय ऋषियों ने विश्व ग्राम की कल्पना की थी। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का संदेश हमने दिया था। मनुष्य मात्र में ही नहीं, पूरी सृष्टि में एक ही ईश्वर तत्व को स्थित मानकर उसकी पूजा की बात हमने की थी।

संत समाज आगे आए

◈ **r|tLouh if.Mr** 9वीं
दयानंद आदर्श विद्यालय
कण्डाघाट, सोलन, हिमाचल प्रदेश

tासा कि हम जानते हैं कि तत्व की मूल इकाई मानव है। प्रत्येक वस्तु छोटे से छोटे अव्यवों से मिलकर बनती है। विश्व भी राष्ट्रों के समूह से बनता है और राष्ट्र प्रदेशों के समूह से। इन सभी की मूल इकाई मानव है। शांति शब्द में श का अर्थ सुख, न का नो, त का अर्थ त्राहि दर्शाता है। सीधा अर्थ है:*सुख हो, हो, हो। त्राहि नो, नो, नो।*

उपरोक्त से स्पष्ट हो जाता है कि सुख–शांति व त्राहि मनुष्य के हाथ में है। सकारात्मक सोच व सुन्दर विचार, अहिंसा से विश्वशांति सम्भव है। इसके विपरीत नकारात्मक सोच व नीच विचारों से व्यक्ति अपना संतुलन खो बैठता है और आतंकवादी बन जाता है। संगठन बनाकर आतंकवादी जगह–जगह पर आतंक व हिंसा फैलाकर राष्ट्र और विश्व की शांति व अहिंसा को भंग कर रहे हैं। अफगानिस्तान, पाकिस्तान में तालिबान, काबुल, इराक, इग्लैंड में आपसी हिंसाओं से दंगा फसाद हो रहे हैं।

आतंकवाद विश्व को ऐसे गंदा कर रहा है जिस प्रकार एक मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है या कहें कि एक खराब सेब, सेब की सारी टोकरी को खराब कर देता है। आतंकवादी संगठन विश्व की शांति के

लिए खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं। भारतवर्ष जो एक शांतिप्रिय देश है और विश्वशांति के लिए पूरा योगदान देता है, इस पर भी इन आतंकवादियों का खतरा मंडराता हुआ दिखाई दे रहा है।

सभी राष्ट्रों को मिलकर आतंकवाद को जड़ से उखाड़ना होगा तभी विश्वशांति होगी। जैसे कि अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा द्वारा ओसामा बिन लादेन को 2 मई, 2011 को पाकिस्तान में मौत के घाट उतारा और समुद्र में दफना डाला। विश्व के सभी राष्ट्र मिल–बैठकर सबके हित और सबको साथ लेकर चलें। यह विश्वशांति के लिए अच्छा प्रयास है। संयुक्त राष्ट्र संघ की अवहेलना करके अमेरिका और इंग्लैंड ने अपने आर्थिक हितों के लिए सद्दाम हुसैन के इराक को नष्ट किया। इस से स्पष्ट है कि अब किसी विश्व की किसी संस्था को डरा धमाका कर, लालच देकर छोटे देशों को अपने अधीन नहीं कर सकते।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का घोष करने वाले भारतीय थे। सबसे पहले भारतीय ऋषियों ने विश्व ग्राम की कल्पना की थी। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का संदेश हमने दिया था। मनुष्य मात्र में ही नहीं, पूरी सृष्टि में एक ही ईश्वर तत्व को स्थित मानकर उसकी पूजा की बात हमने की थी। पश्चिम के राष्ट्र चाहते हैं कि पूरे विश्व के देश उनके रंग में रंग जाएं तथा उनके विचारों और उनकी वस्तुओं को अपनाएं ताकि उनका व्यापार विकसित हो सके। इक्कीसवीं सदी सूचना प्रौद्योगिकी का संदेश लेकर आई है। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से जोड़ा जाएगा। निर्धन और अमीर राष्ट्रों में परस्पर निर्भरता हो जाएगी। आर्थिक दृष्टि से तानाशाही नहीं होगी बल्कि सभी राष्ट्रों का सहयोग बनेगा।

सूचना प्रौद्योगिकी विश्व को विश्व ग्राम में बदल सकेगी। वर्तमान विश्व व्यवस्था एक ध्रुवीय संसार को जन्म देगा। ऊँच–नीच का भेदभाव नहीं होगा। सभी के लिए एक सा ग्राम बाज़ार होगा। एक जैसा ही व्यापारीकरण होगा। Make Love Not War: विश्व युद्ध 28 जुलाई, 1914 को हुआ था। अब का युद्ध विश्व शांति का होगा।

आज के युग में गांधीजी की अहिंसावादी विचारधारा का और अधिक महत्व

बढ़ जाता है। आज हमारे देश में चारों तरफ हिंसा, भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, साम्प्रदायिकता और विषमता आदि की समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। बढ़ती हुई महंगाई और बेरोजगारी ने तो लोगों की कमर तोड़ कर रख दी है। ऐसी स्थिति में यदि हम अहिंसावादी विचारधारा का पालन करते हैं तो हमारी बहुत सी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

देश में हिंसा और अनुशासनहीनता की प्रवृत्तियां फैल रही हैं। उन्हें अहिंसावादी विचारधारा द्वारा रोका जा सकता है। धीरे–धीरे संसार के सभी राष्ट्र इस बात को स्वीकार करते जा रहे हैं कि हम सत्य और अहिंसा का पालन करके ही समाज व विश्व को नई दिशा की ओर ले जा सकते हैं और विश्वशांति स्थापित कर सकते हैं। अंत में, भगवान से यही प्रार्थना करूंगी कि संत समाज समुदाय ही आगे आए और विश्वशांति के लिए पूजा, पाठ, हवन करके आवाज उठाए। ✿

विश्व के लिए अहिंसा जरूरी नहीं, मजबूरी भी

◈ **x|tu vxoky** 12वीं
एस.एस. जैन कन्या वरिष्ठ
माध्यमिक विद्यालय
सिरसा, हरियाणा

> *आज अगर हमारा देश विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में आगे होगा तो भी अहिंसा के कारण। अगर हमारा देश अहिंसा के साथ चलकर उन्नति करता तो शायद आज हम विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में सबसे आगे होते। इतनी अधिक हिंसा भारत के इतिहास में पहले कभी नहीं रही। हिंसा का मुख्य कारण हमारे समाज का अंधविश्वासों में जकड़े रहना है।*

vkचार्य श्री तुलसी जी कहते हैं ''आस्था करने में तथा उसका निर्माण करने में अहिंसा सार्वभौम की अच्छी भूमिका हो सकती है। अतः अहिंसा की स्थापना किसी एक ही शहर–गाँव में नहीं, स्थान–स्थान में नहीं, बल्कि घर–घर होनी चाहिए।'' आज आज़ाद देश को अत्यंत कर्त्तव्य परायणता एवं ईमानदारी से सजाने, सँवारने के लिए अहिंसा की बहुत जरूरत है। कटु सत्य यह भी है कि हम उतनी कर्त्तव्य परायणता व जज़्बा अपने अंदर नहीं ला सके। जो देश के लिए अति आवश्यक था, शायद वह नहीं दिखला सके। समय के साथ–साथ हम अपने वास्तविक उद्देश्य से भटक कर मात्र अपने–अपने स्वार्थों के जाल में भटक कर रह गए।

लोग कहते थे कि गांधी जी नहीं रहे पर गाँधीवाद रहेगा, अहिंसा रहेगी। उनके अहिंसा के मार्ग पर हर व्यक्ति चलेगा। यदि हमारे नेतृत्व में यह जज़्बा कहीं कायम रहता तो देश की स्थिति आज ऐसी नहीं होती। कुछ लोग पूछते हैं ''अहिंसा ने क्या किया? क्या कहीं शांति का साम्राज्य स्थापित किया?'' इस बात को एक बार छोड़ देते हैं।

मैं पूछती हूँ–''क्या कहीं हिंसा ने शांति का साम्राज्य स्थापित किया?'' हिंसा पर कितनी शक्ति लग रही है। कितने वैज्ञानिकों ने उसके लिए अपना जीवन खपा दिया। सदियों का समय लगा। अपार धन व अर्थ व्यय हुआ और मूल्यवान श्रम लगा। इसकी निष्पत्ति क्या हुई? विध्वंसक अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण हुआ। एक और शांति प्राप्त करने की चाह, दूसरी ओर घातक अस्त्र–शस्त्र।

हिंसक हथियार सबको चाहिए। बंदूक सबको चाहिए। नागरिक को चाहिए अपनी सुरक्षा के लिए, सरकार को चाहिए लोकतंत्र चलाने के लिए, नेता को चाहिए चुनाव जीतने के लिए। अहिंसा नहीं है तो हिंसा का राज़ होगा। मनुष्य जितना बुद्धिमान है, उतना ही अदूरदर्शी भी। सम्पदा को सब कुछ मान बैठने और चेतना की उत्कृष्ठता को उपेक्षित रखने की भूल निश्चित रूप से अदूरदर्शिता है। उनका वैभव असंख्यों के लिए अभिशाप बना है। मनुष्य की बहिरंग उपलब्धियाँ हिंसा को बढ़ावा दे रही हैं।

कुछ लोग हिंसा को अनिष्ट जानते हुए भी अहिंसा में विश्वास नहीं कर पाते। यह वह स्थिति है जहाँ ज्ञान है पर दृष्टि की दुष्टता है, दृष्टि की शुद्धि नहीं है। हिंसा व अहिंसा का माप छोटा–बड़ा आकार नहीं है। यह राग द्वेषात्मक प्रवृत्ति के भाव और अभाव में मापी जाती है। अहिंसा आत्मा की सहज पवित्रता होती है।

प्रत्येक व्यक्ति मोक्ष चाहता है, सुख चाहता है। उसका साधन अहिंसा है। कोई भी व्यक्ति दुःख नहीं चाहता। दुःख का कारण हिंसा है। वह हिंसा से होता है। अब सोचने की बात यह हे कि हिंसा से विश्व की शांति कैसे होगी? हमारा देश उन्नति कैसे करेगा? हम उदाहरण दे सकते हैं अभी कुछ दिनों पहले हुए कई विस्फोटों कितने ही निर्दोष व निरपराध व्यक्ति उसमें खत्म हो गए। यह सब परिणाम किसका है? क्यों आदमी, आदमी के खून का प्यासा है? यह कारण है हिंसा का। इससे पता चलता है कि हमारे विश्व में कितनी हिंसा व अशांति फैली हुई है।

इतनी अधिक हिंसा भारत के इतिहास में पहले कभी नहीं रही। हिंसा का मुख्य कारण हमारे समाज का अंधविश्वासों में जकड़े रहना है।

अपने धर्म के स्थान पर किसी और के धर्म के व्यक्ति को देखकर लोग तिलमिला उठते हैं, उत्तेजना फैल जाती है, साम्प्रदायिकता का वातावरण बन जाता है।

हमारे देश में शांति नहीं है। यह तो मानना पड़ेगा कि विकास तो हमारे देश के कई क्षेत्रों में हुआ लेकिन अहिंसा व शांति को साथ लेकर नहीं। आज अगर हमारा देश विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में आगे होगा तो भी अहिंसा के कारण। अगर हमारा देश अहिंसा के साथ चलकर उन्नति करता है तो शायद हम विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में सबसे आगे होंगे।

क्या आप जानते हैं दुनिया में दो सौ सात देश दो सौ अस्सी करोड़ रुपये प्रतिवर्ष हथियारों की खरीद और सेना के रख–रखाव पर खर्च कर रहे हैं। अगर यही करोड़ों रुपये गरीब देशों पर खर्च किया जाए, तो तकरीबन आधी अफ्रीकन आबादी न केवल भरपूर भोजन कर सकती है, अपितु स्वास्थ्य व शिक्षा भी ग्रहण कर सकती है।

दुनिया के तमाम लोग जब युद्ध व भय के ऐसे वातावरण में जी रहे हों तब शांति संदेश न केवल संपूर्ण विश्व की जरूरत बन जाता है, अपितु वर्तमान समस्याओं का समाधान भी। हम अपने दुश्मनों पर विजय एकमात्र बल प्रयोग से नहीं पा सकते। दूसरा रास्ता है गाँधीगिरी। गाँधी और अहिंसा दोनों साथ–साथ चलते हैं। जब सारी दुनिया इस पर विचार करेगी तब यह जरूर सामने आएगा कि शांति का कोई विकल्प नहीं। शांति और अहिंसा न केवल जरूरी है अपितु मजबूरी भी है।

अणुव्रत द्वारा अहिंसा का विस्तार किया जा सकता है। अणुव्रत को स्वीकार करने के लिए हर व्यक्ति को संकल्प लेना पड़ेगा कि वह निरपराध व्यक्ति की हत्या नहीं करेगा। किसी पर आक्रमण नहीं करेगा। विश्व–शांति व निःशस्त्रीकरण के लिए काम करेगा। हिसात्मक उपद्रवों व तोड़फोड़ वाली प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेगा। अनेक जैन धर्मी आचार्यों ने हिंसा को खत्म करने के उपाय किए हैं। अणुव्रत नियम व विद्यार्थी अणुव्रत के अंतर्गत हिंसा रोकने व शांति बनाने के नियम बनाए हैं। अणुव्रत नियम द्वारा हिंसा को रोकर अहिंसा का प्रचार–प्रसार किया जा सकता है। ✿

निर्गुट आंदोलन के संचालन में भारत की प्रमुख भूमिका रही है। आज भी भारत इस आंदोलन का प्रमुख व्याख्याता है और इसके प्रयास से क्यूबा तथा दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न देशों की समस्याओं का निराकरण हुआ है। विश्व में शांति स्थापित करने के लिए और अहिंसा को अपनाये जाने के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है।

युवा शक्ति का सही उपयोग हो

◈ : ch pjk;k 11वीं
गुप्ता बाल भारती विद्यालय
श्रीगंगानगर, राजस्थान

0र्तमान काल में यद्यपि मानव– सभ्यता भौतिक उन्नति और विकास की ओर अग्रसर है, फिर भी विश्व में सर्वत्र अशांति, अव्यवस्था और साम्राज्यवादी प्रवृत्ति बढ़ रही है। विश्व के देश एक ओर भौतिक सुविधाएँ बढ़ा रहे हैं, तो दूसरी ओर अन्य कमजोर राष्ट्रों को दबाने की भरसक चेष्टा कर रहे हैं। अणु–आयुधों एवं राकेटों के प्रसार से युद्ध की आशंका और भी भयानक रूप धारण कर रही है। वैसे देखा जाये तो सारा विश्व आज तीन–चार खेमों में बँटा हुआ है और अन्दर ही अन्दर विश्व युद्ध की तैयारियाँ चल रही हैं। सब अपना वर्चस्व स्थापित करने की चेष्टा कर रहे हैं। इससे भी विश्व शांति पर खतरे के बादल मँडरा रहे हैं।

विश्व में शांति स्थापित करने के लिए मेरे मन में अनेक विचार उठते रहते हैं, अनेक कामनाएँ व सपने सजते रहते हैं। मैं कभी–कभी अपनी कल्पनाओं के पंख फैलाने लगती हूँ तथा अपनी कल्पनाओं से विश्व में शांति स्थापित करने व हिंसा को दूर भगाने की सोचती रहती हूँ। मैं सोचती हूँ कि यदि भ्रष्टाचार, काले धन्धे, लड़ाई–झगड़े ये सब बंद हो जाएँ तो विश्व पुनः समृद्ध व खुशहाल बन सकता है और विश्व में शांति स्थापित हो सकती है।

वर्तमान समय में विश्व में अशांति के अनेक कारण हैं। सर्वप्रथम कारण साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद हैं। पूँजीवादी विचारधारा वाले राष्ट्र कमजोर देशों का शोषण करना चाहते हैं, इसलिए वे उनको आपस में लड़ाने की नीति अपनाते हैं और उन्हें अस्त्र–शस्त्रों की सहायता देकर विश्व के वातावरण को अशांत बनाये रखना चाहते हैं। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन आदि देश भौतिकवादी प्रवृत्तियों से ग्रस्त हैं; वे अपनी समृद्धि के लिए पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का प्रसार कर रहे हैं।

दूसरा कारण यह है कि विश्व में समाजवादी तथा साम्यवादी विचारधारा संघर्ष को बढ़ावा दे रही है। संक्षेप में पूँजीवाद, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, समाजवाद और साम्यवाद के कारण आज विश्व में चारों ओर अशांति फैली हुई है और भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, काले–धन्धे, लड़ाई–झगड़े इतने बढ़ रहे हैं कि सभी ओर अशांति फैल गई है।

भारत प्राचीन काल से ही विश्व में शांति का अग्रदूत रहा है। वर्तमान समय में भी भारत के द्वारा विश्व शांति के लिए जो प्रयास हो रहे हैं, उन्हें सारा विश्व जानता है। स्वतंत्रता प्राप्त होने पर यहाँ लोकतंत्र की स्थापना हुई। उस समय हमारे नेताओं ने तटस्थ विदेश नीति अपनायी। यह तटस्थ विदेश नीति विश्व शांति तथा विश्व–बन्धुत्व की भावना पर आधारित है। उस प्रयास से विश्व के अनेक राष्ट्र निर्गुट आंदोलन में सम्मिलित हुए और यह निर्गुट आंदोलन विश्व में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

निर्गुट आंदोलन के संचालन में भारत की प्रमुख भूमिका रही है। आज भी भारत इस आंदोलन का प्रमुख व्याख्याता है और इसके प्रयास से क्यूबा तथा दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न देशों की समस्याओं का निराकरण हुआ है। विश्व में शांति स्थापित करने के लिए और अहिंसा को अपनाये जाने के लिए सरकार निरंतर प्रयास कर रही है और लड़ाई–झगड़े को मिटाकर भाईचारे को बढ़ावा देकर विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है और हिंसा को दूर भगाकर अहिंसा को अपनाये जाने पर बल दिया जा रहा है।

विश्व में शांति की स्थापना के लिए और हिंसा को दूर भगाकर अहिंसा

को अपनाने के लिए भारत ने निरस्त्रीकरण तथा सह–अस्तित्व की नीति का प्रचार–प्रसार किया है। हिंसा पर रोक लगाने के लिए तरह–तरह के कानून बनाये गये हैं जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति हिंसा से दूर रह सके और अहिंसा का पालन करे।

राजनीतिक क्षेत्रों में भाई–भतीजावाद, स्वार्थपरता व भ्रष्टाचार पनप रहा है। कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी आदि बुराइयों के साथ ही कर्त्तव्यहीनता बढ़ रही है और विश्व में अशांति व हिंसा पनप रही है। अणु निरस्त्रीकरण और सहअस्तित्व के सम्बन्ध में अणु–आयुधों के निर्माण पर सर्वथा रोक लगाने, अन्य घातक अस्त्रों को समाप्त करने तथा शीतयुद्ध की समस्या का समाधान करने पर भारत ने विशेष बल दिया। साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ में कई देशों को प्रवेश दिलाया और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शांतिपूर्ण प्रयासों से सुलझाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। भारत सदा ही अहिंसा व शांति का समर्थक तथा मानवता का पक्षधर रहा है।

इन सिद्धांतों के आधार पर भारत ने रूस, मिस्र, पोलैंड, बर्मा (म्यांमार), इण्डोनेशिया आदि देशों से मैत्री सम्बन्ध स्थापित किये। गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाते हुए भारत ने अनेक विकासशील एवं नव–स्वतंत्र राष्ट्रों से सहयोग की नीति अपनायी तथा दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति और सर्वदलीय सरकार के गठन के लिए जोरदार प्रयास किये हैं। विभिन्न निर्गुट शिखर सम्मेलनों में भारत ने सामयिक परिस्थितियों का ध्यान रखकर विश्व शांति एवं अहिंसा के लिए अनेक प्रयास सुझाये।

आर्थिक क्षेत्र में युवा–शक्ति अपव्यय को रोकने, चोर–बाजारी और कालाबजारी पर नियंत्रण रखने और आर्थिक शोषण के विरुद्ध, अहिंसा का पालन करने, शांति स्थापित करने के लिए सशक्त आंदोलन चलाकर बहुत बड़ा कार्य कर रही है। चोरी, रिश्वतखोरी, शराबखोरी आदि कई बुराइयों से दूर रहकर अपनी शक्ति का सदुपयोग विश्व में शांति व अहिंसा स्थापित करने में करना चाहिए।

विश्व के सभी राष्ट्रों में सद्भावना, सह–अस्तित्व, शांति व अहिंसा की

स्थापना करने के लिए भारत सदैव अग्रणी रहा है। हमारे समाज को आज रचनात्मक कार्यों की अधिक आवश्यकता है, इसलिए युवकों को अपने तुच्छ स्वार्थों और राजनीतिक कुचक्रों से दूर रह कर समाज को सुखमय और शांतिमय बनाने का प्रयास करना चाहिए। इस तरह युवाशक्ति का सही उपयोग होने पर समाज और समग्र राष्ट्र का हित हो सकता है।

अपने देश भारत व पूरे विश्व को समुन्नत एवं वैभवशाली देखने के लिए सभी भारतीयों को एकजुट होकर राष्ट्रोन्नति के कार्य में परिश्रम करना पड़ेगा। यदि ऐसा हुआ तो वह सुदिन अवश्य आएगा जब पूरे विश्व में प्रत्येक व्यक्ति शांति व अहिंसा का पालन करते हुए खुशी से अपना जीवन–यापन करेगा। ✿

अशांति के लिए हम खुद जिम्मेदार

◈ Hkfedk 'kekZ 10वीं
बख्शीज स्प्रिंग्डेल्स स्कूल
कोटा, राजस्थान

इस बात का दोष हम किसी को भी नहीं दे सकते क्योंकि हमारे इस देश की ऐसी स्थिति के लिये और कोई नहीं अपितु हम ही लोग जिम्मेदार हैं। इसी प्रकार विश्व के विभिन्न देशों के बीच हुई उनकी आपसी दुश्मनी, जो सालों से चलती आ रही है, उसके जिम्मेदार वह देश खुद हैं। परिणामस्वरूप आज पूरे विश्व में से शांति का माहौल लुप्त होता जा रहा है।

'fo'श्व शांति एवं अहिंसा' इस वाक्य को सुनते ही हमारे मस्तिष्क में विश्व की एक ऐसी तस्वीर बनती है जहाँ सभी लोग आपस में प्रेम भाव के साथ रह रहे हैं, चारों ओर शांति का माहौल है, न कोई भेदभाव है और न ही कोई सामाजिक दुविधाएं। परंतु आज भी हमारे इस विश्व में कुछ ऐसे देश हैं जिन्हें बदलने की हमें सख्त जरूरत है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी को उन दुविधाओं और परेशानियों का सामना न करना पड़े जिनका हमें करना पड़ा था।

आज भी विश्व में कुछ ऐसे देश हैं जो सन् 1900 से लेकर आज तक आपस में एक गलतफहमी, दुश्मनी और विरोध की एक दीवार कायम किये हुए है। हमारा देश अच्छाई का सबसे बड़ा उदाहरण है। हमारा खुद का देश हिंदुस्तान जिसके लिये गायिका लता मंगेशकर ने बहुत ही खूबसूरत पंक्तियाँ गाई हैं:–

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा,
हम बुलबुलें हैं इसके ये गुलिस्तां हमारा।

हिंदुस्तान कभी एक ऐसा देश था जिसकी एकता का लोग दुनियाभर में उदाहरण देते थे। आज वही लोग इसी देश के लिए तरह–तरह की बातें करते हैं क्योंकि दुर्भाग्यवश 1947 में दो हिस्सों में विभाजित हो गया था और आज तक भी बँटा हुआ है। पूरे विश्व के लोग इस बात को लेकर काफ़ी चिंतित एवं दुःखी थे परंतु किसी ने भी यह नहीं सोचा कि ऐसा क्यों हुआ? इस बँटवारे को करने की क्या जरूरत पड़ी? इस बँटवारे का क्या कारण था?

किसी ने यह नहीं सोचा कि वह देश जिसे पूरा विश्व ''सोने की चिड़िया'' के नाम से जानता था, आज उसी देश के लोग आपस में लड़–झगड़ रहे हैं। क्या देशवासी यह भूल गए थे कि यह एक ऐसा देश है जिसको स्वतंत्र कराने के लिए भगत सिंह और सुखदेव जैसे महान् क्रांतिकारी फाँसी पर चढ़ गए, जिसको स्वतंत्र करवाने के लिए रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी जान कुर्बान कर दी थी।

इस बात का दोष हम किसी को भी नहीं दे सकते क्योंकि हमारे इस देश की ऐसी स्थिति के लिये और कोई नहीं अपितु हम ही लोग जिम्मेदार हैं। इसी प्रकार विश्व के विभिन्न देशों के बीच हुई उनकी आपसी दुश्मनी जो सालों से चलती आ रही है, उसके जिम्मेदार वह देश खुद हैं। परिणामस्वरूप आज पूरे विश्व में से शांति का माहौल लुप्त होता जा रहा है।

कुछ देश तो ऐसे भी हैं जो विश्व के बाकी देशों पर अपनी हुकूमत कायम करना चाहते हैं ताकि वे इस विश्व पर विजय पाकर यहाँ के शहंशाह बन सकें। उन देशों के नेता, प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति यह नहीं जानते कि आगे चलकर कभी भी उनका अगर मदद की जरूरत पड़ेगी तब कोई भी देश उनका साथ नहीं देगा। ऐसे ही कुछ अन्य कारण हैं जिसके परिणामस्वरूप पूरे विश्व में अशांति का माहौल है। शायद इस विश्व की भविष्य की स्थिति को जानने के कारण ही किसी कवि ने यह दो पंक्तियाँ बहुत खूब लिखी थीं किः–

देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान,
कितना बदल गया इंसान, कितना बदल गया इंसान।

दूसरी ओर अगर हम अहिंसा की बात करते हैं तो अहिंसा शब्द सुनते ही हमारे मस्तिष्क में सबसे पहले भगवान महावीर का नाम आता है जिन्होंने अहिंसा का मार्ग दिखाया। उनका अनुसरण महात्मा गांधी ने किया। उन्होंने पूरे विश्व को सत्य एवं अहिंसा का मार्ग दिखलाया। लोगों को समझाया की सत्य में कितनी ताकत होती है। शांत एवं चुप रहकर भी लोगों को लड़ना और लड़ाई को जीतना सिखाया। प्यार और आदर से लोग उन्हें 'बापू' कहने लगे।

अहिंसा का मार्ग बहुत ही कठिन होता है परंतु नामुमकिन नहीं। अहिंसा की परिभाषा लोग अलग–अलग रूपों एवं शब्दों में जानते हैं परंतु इसके पीछे का भाव एक ही है। अहिंसा में एक ऐसी ताकत होती है जिससे हम शांति से अपनी लड़ाई लड़ और जीत सकते हैं। आज विश्व के लोग अहिंसा में नहीं, हिंसा में विश्वास रखते हैं और हिंसा का सबसे बड़ा उदाहरण है–अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराये गए परमाणु बम जिसके कारण जापान में रहने वाले कई लोग मौत की नींद सो गए थे। दूसरा हिंसक उदाहरण है प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध। और भी ऐसे कई हिंसक हादसे हैं जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो विश्व के लोगों के मन में जो एक–दूसरे के लिये प्रेम भावना थी, वह खत्म ही हो गई है।

आज भी विश्व में अशांति का माहौल है। संसार के किसी भी कोने में लोग अपने आप को सुरक्षित नहीं महसूस कर रहे हैं। क्या यही वह संसार है जिसके लिये लोग अपनी जान देने ओर लेने के लिये पल भर में तैयार हो जाते थे? क्या कभी हमारे इस संसार में से भ्रष्टाचार खत्म हो पायेगा? क्या कभी इस संसार के लोग अपने आप को छोड़कर दूसरे के लिये कुछ करने की कभी सोच पायेंगे? क्या कभी इस संसार में शांति एवं अहिंसा का वातावरण बन पायेगा? क्या कभी इस संसार के लोग अहिंसा के मार्ग पर चलकर अपनी लड़ाई लड़ना सीख पायेंगे? प्रश्न कई सारे हैं परंतु जवाब किसी के पास नहीं और यदि है भी तो कारगर ढंग से शांति के सिद्धांतों पर अमल करे कौन? ✿

शांति समुदाय बनाए जाएं जगह–जगह

◈ ;'k feŸky 9वीं
वैश्य मॉडल सी. सै. स्कूल
भिवानी, हरियाणा

कारणों का मूल्यांकन करके, वर्तमान परिस्थितियों को देखकर और प्रस्तावों पर विचार करके हम वह पा सकते हैं जो हम चाहते हैं। हिंसा से छुटकारा पाने के लिए हम शांति समुदायों की स्थापना और व्यक्ति के नैतिक मूल्यों व आचरण में सुधार कर सकते हैं।

आज का हर सदस्य एक ही मिट्टी से बना है और उसका बराबर महत्व है। हालांकि हर एक के बीच में एक बड़ा अंतर है, फिर भी वे मिलकर एक समाज का निर्माण करते हैं जब एक–दूसरे में उनकी आपसी समझ हो। लेकिन आज समय के बीतने के साथ, उनका आपसी तालमेल धुलता जा रहा है। ''इस पृथ्वी के हर इंसान में हिंसा भरी पड़ी है जिसे अगर देखा और समझा नहीं गया तो यह युद्ध और पागलपन में बाहर आ जाएगा।''

किसी आम धागे के बिना जिस प्रकार मोती माला नहीं बना सकते, उसी प्रकार विश्व शांति और अहिंसा के बिना इस हिंसक दुनिया में कोई परिवर्तन नहीं होगा और विश्व बंधुत्व का तो सवाल ही पैदा नहीं होता है। इसलिए, आपसी तालमेल रूपी धागे की जाँच करना बहुत महत्वपूर्ण है।

महात्मा गांधी के अनुसार हम इतने मजबूत कभी नहीं हो सकते कि हम पूरी तरह अहिंसक हो जाएं लेकिन हमें अपने लक्ष्य के रूप में अहिंसा रखनी चाहिए और सही दिशा में मजबूत प्रगति करनी चाहिए। लेकिन आजकल प्रगति करने के बजाय लोग सिर्फ अपने ही बारे में सोच रहे

हैं जो लड़ाइयों को जन्म देता है। आज के युग में विश्व शांति कहीं खो सी गई है।

जब हर देश हर संभव साधन से अपनी जरूरतों को पूरा करने में लगा है, तब वह दूसरे देशों के साथ युद्ध गलतफहमी और उनके बुरे संबंधों को जन्म दे रहा है। अब विश्व शांति और अहिंसा एक प्रमुख आवश्यकता बन चुकी है। यह स्वतंत्रता, शांति और सभी राष्ट्रों के लोगों के भीतर का एक आदर्श है। यह एक विचार है जिससे राष्ट्र स्वेच्छा से सहयोग करते हैं। यह रुकावट या ठहराव है, सभी व्यक्तियों के बीच दुश्मनी का।

आज की स्थिति यह है कि प्रियजनों या खुद को नहीं खोना चाहता है, लेकिन अगर शांति वहां नहीं है तो वहां बहुत ज्यादा उथल–पुथल होगी और लोग मरते जाएंगे। संसार पूरी तरह से अव्यवस्था में होगा। सभी देश एक–दूसरे से नफरत करेंगे और विश्व युद्ध होंगे। सेनाएं संसार को टुकड़ों में नष्ट कर देगी जब तक की संसार बर्बाद नहीं हो जाता।

संसार में हिंसा के बारे तें बड़े–बड़े चर्चे हो रहे हैं। आजकल प्रमुख प्रश्न है ''हिंसा का क्या कारण है? क्यों प्यारे बच्चे हाथों में बंदूक लिए फिरने वाले हत्यारों में बदल जाते हैं?'' पहला कारण तो यह है कि व्यक्ति को आंतरिक चोट लगी है। यौन शोषण, भावनात्मक उपेक्षा और छोटे तनाव का संचय, हिंसा का कारण बन सकते हैं। दूसरा कारण यह है कि जिस व्यक्ति को ठेस पहुंची है, उसके मन में जो भावनाएं हैं, उन्हें व्यक्त नहीं किया जा सकता जो उसने अनुभव किया है।

''जो शांति दिल से नहीं, डर से आती है, वहीं अशांति है।''

आज आर्थिक संकट, परिवार में शिथिलता, दवाओं की लत के कारण कहीं भी और कभी भी लोगों के हिंसक आचरण के नतीजे देखे जा सकते हैं। वे हिंसा का आचरण इसलिए करते हैं ताकि वे सम्मान, सत्ता और पैसा कमा सकें लेकिन इस चीज से इन जरूरतों की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

भेदभाव आजकल बढ़ता जा रहा है जो अवैध समूहों के गठन को जन्म

दे रहा है। आज हर एक देश लोकतांत्रिक है लेकिन सिर्फ देखने–देखने में ही। ये समूह सत्तारूढ़ का सबसे क्रूर रूप शुरू करते हैं जो कि 'अधिनायकत्व' है। इसका सबसे बड़ा आश्चर्यजनक उदाहरण इस्लामी आतंकवाद है। यह एक शब्द है जो मुसलमानों द्वारा प्रतिबद्ध आतंकवाद का वर्णन करता है जिसका उद्देश्य विभिन्न राजनैतिक व धार्मिक मूल्यों को समाप्त करना है। इसका अस्तित्व मध्य–पूर्व में अफ्रीका में, दक्षिण पूर्व एशिया में और यू. एस. में 1970 से माना जा रहा है।

सबसे विख्यात आतंकवादी संगठनों में से एक है 'अलकायदा' जो 'ओसामा बिन लादेन' द्वारा निर्मित है जिसका मुख्य उद्देश्य अमेरिकी सेना को मध्य–पूर्वी एशिया व अरब प्रायद्वीप से हटाकर नष्ट कर देना है। जो अरब शासन भ्रष्ट और अपर्याप्त धार्मिक है, उन्हें भी बाहर निकालना, इज़राइल के लिए अमेरिकी समर्थन समाप्त करना और मुस्लिम शासन को पूर्वी तिमोर व कश्मीर वापस लौटाना भी उनके मुख्य उद्देश्यों में से थे।

ऐसे संगठन अपहरणों के मामलों में शामिल होने के कारण विख्यात हैं और इन्होंने पूरे देश को दंग कर दिया जब ये 9/11 न्यूयार्क और 26/11 मुंबई हमलों में दोषी पाए गए थे। ''व्यक्ति हफ्ते भर के लिए अहिंसक बनने की कोशिश करते हैं लेकिन जब यह काम नहीं आता तो वह हिंसा की तरफ फिर से लौट जाते हैं जो कभी भी काम नहीं आया है।''

हाल ही के वर्षों में, लोगों की संख्या में एक बहुत तेजी से वृद्धि हुई है जो राजनैतिक अहिंसक कारवाई में भाग ले रहे हैं। यह स्पष्ट है, पर अभी भी अहिंसा के सही अर्थ पर बहस चल रही है। कुछ के लिए तो यह एक समीचीन संघर्ष से निपटने के बारे में सामाजिक परिवर्तन लाने की तकनीक है और कुछ एक के लिए यह नैतिक अनिवार्यता या जीवन जीने का सही मार्ग है।

युद्ध के बिना संसार को बनाने के लिए 'दुनिया मार्च' ने शांति और अहिंसा फैलाने की पहल की है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो 1995 में स्थापित हुआ और जिसे मानवतावादी आंदोलन ने बनाया। यह 2008 में शुरू हुआ और कई हस्तियों द्वारा समर्थित हुआ। आज दुनिया

भर में अनेक सम्मेलन आयोजित कराए जा रहे हैं जिससे दुनिया भर में अहिंसा के प्रति जागरूकता फैलाई जा रही है, परमाणु हथियारों के उपयोग को खत्म किया जा रहा है, कब्जा किए हुए क्षेत्रों से सैनिकों को बाहर निकाला जा रहा है, देशों के बीच अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर किए जा रहे हैं, इत्यादि।

''एहतियात बरतना, इलाज से बेहतर है।'' हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हम निम्नलिखित उपयोगों का पालन करके आज के बहस के मुख्य विषय 'हिंसा' को कम कर सकें। किसी भी मुश्किल को सुलझाने के लिए अगर हम पहले उसके बारे में जानकारी इकट्ठा करें और फिर उसे स्पष्ट करें, तो वह बहुत अच्छा रहेगा। कारणों का मूल्यांकन करके, वर्तमान परिस्थितियों को देखकर और प्रस्तावों पर विचार करके हम वह पा सकते हैं जो हम चाहते हैं। हिंसा से छुटकारा पाने के लिए हम शांति समुदायों की स्थापना और व्यक्ति के नैतिक मूल्यों व आचरण में सुधार कर सकते हैं।

''हिंसा के माध्यम से शांति हासिल नहीं की जा सकती है, यह केवल समझ के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।'' उपरोक्त चर्चा से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विश्व शांति ही हिंसा की समस्या को रोकने और दुनिया के विभिन्न देशों के बीच आपसी विश्वास बनाने का एकमात्र रास्ता है। इसलिए अब के बाद हमें क्रूरता कम करने के लिए पूरी कोशिश करनी है जिससे हम हिंसा मुक्त पृथ्वी पर रह सकें। ✿

आपसी विश्वास से ही विश्व में शांति संभव

◈ **ç{kk t|u** 12वीं
श्री दिगम्बर जैन बालिका उ.मा. विद्यालय
खेरादीवाड़ा, उदयपुर, राजस्थान

इस संसार से हिंसा कभी समाप्त नहीं होगी, इस सच्चाई को सामने रखकर भी अहिंसा के प्रशिक्षण पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता है। हिंसा समाप्त हो या ना हो, उसमें कमी की जा सकती है। यही मानवता के हित में होता है। यही विश्व शांति का एक सुदृढ़ मार्ग है।

foश्व शांति का मूलमंत्र है—अहिंसा। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं विचार और आचार की समानता। सामान्यतः व्यक्ति के विचार तो बहुत ऊँचे और अच्छे होते हैं, किन्तु उन पर अमल नहीं कर पाते हैं। यदि मनुष्य सार्वभौम नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा में समप्रित हो जाएंगे, विलासी मनोवृत्ति से मुंह मोड़ लेंगे और भोगवाद के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण निर्मित कर लेंगे तो विश्व शांति के मार्ग की बाधाएं स्वयं दूर हो जायेगी।

अहिंसा को समग्रता से समझने की आवश्यकता है। संकीर्ण मनोवृत्ति, हीनता का मनोभाव, किसी के विकास में बाधा पहुंचाने का दृष्टिकोण, बलात् अनुशासन करना, किसी को पराधीन बनाना, किसी को अस्पश्श्य मानना ये सब हिंसा के अन्तर्गत आते हैं। अपने—पराये का भेदभाव न रखकर सबके प्रति मैत्री—भाव का विकास करना अहिंसा का विधेयात्मक पक्ष है। विधि और निषेध दोनों की समन्विति अहिंसा की परिपूर्णता है।

कैसे लाएं जीवन में अहिंसाः अहिंसा का उपदेश तो बहुत हुआ है, आगे भी होता रहेगा। किसी को मत मारो, किसी को मत सताओ, किसी पर हुकूमत मत चलाओ, किसी को बलात् अपने अनुशासन में मत रखो,

किसी का अंग–भंग मत करो, किसी का हक मत छीनो–यह सब अहिंसा का नकारात्मक रूप है।

सबके प्रति समदृष्टि रखेंगे, सहिष्णुता का विकास करेंगे, सद्भावना की वृद्धि करेंगे, इन सभी बिन्दुओं का वैयक्तिक या सामूहिक रूप में अभ्यास किया जाएगा या कराया जाएगा और प्रत्येक परिस्थिति में संतुलन रखा जाएगा तो प्रशिक्षण का रूप प्रभावी बन जाएगा। यह सब अहिंसा के सकारात्मक रूप हैं। इन्हें अपना कर हम अपने जीवन में अहिंसा ला सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर, सैनिकों के प्रशिक्षण शिविर चलते रहते हैं। उन शिविरों में सैनिकों को शस्त्र का प्रयोग करना सिखाया जाता है। साथ–साथ यह भी सिखाया जाता है कि मारने का प्रसंग उपस्थित होने पर भी पीछे नहीं हटना है। यह बात उनके रोम–रोम में रमा दी जाती है। यह प्रशिक्षण समाज एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए दिया जाता है जबकि अहिंसा का प्रशिक्षण आत्मरक्षा, अध्यात्मरक्षा अथवा मानवीय मूल्यों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। 'मरण धार सुध मग लियो', 'मार सके मारै नहीं ताको नाम मरद' आदि वाक्य हमारे लिए आदर्श होते हैं।

शांति और समभाव से मरना भी एक प्रकार की तपस्या होती है। इस आस्था के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों का मुकाबला करना अहिंसा के प्रशिक्षण का एक प्रयोग होता है। इसी श्रृंखला में प्रयोग की कुछ और कडियां जुड़ जाती हैं पर यह प्रयोग तभी सफल होगा जब अहिंसा के प्रति प्रबल आस्था हो जाएगी और जीवन की आसक्ति क्षीण हो जाएगी। तभी हम अहिंसक बन सकेंगे।

पूरे विश्व में हिंसा के बादल मंड़रा रहे हैं। अधिक प्रयासों के बाद भी युद्ध को रोका नहीं जा सकता। युद्ध की समाप्ति के बाद भी युद्ध की स्थिति को बनाए रखने की कशमकश चलती रहती है। दूसरी ओर हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाकर अहिंसा के प्रशिक्षण की चर्चा करते रहते हैं। वर्तमान विश्व की परिस्थितियों में सम्मेलन पत्र की कोई प्रांसगिकता है क्या? जब तक हम स्वयं को अहिंसक न बना लेंगे, जब तक हम नहीं

बदलेंगे तब तक विश्व में शांति नहीं हो सकेगी। हमें विश्व में शांति लाने के लिए अहिंसा को अपनाना होगा तभी विश्वभर में शांति हो सकती है।

युद्ध तो सामयिक परिस्थिति की देन होती है। सामान्यतः कोई भी राष्ट्र युद्ध करना नहीं चाहता पर अधिकार की भावना जब आवेश का रूप धारण करती है तो उसका परिणाम युद्ध के रूप में होता है। युद्ध के संदर्भ में अहिंसा की बात अप्रासंगिक हो सकती है। पर अहिंसा की चेतना सब सन्दर्भों से दूर रहने के बाद भी सदा प्रासंगिक रहती है। जीवन का प्रत्येक पक्ष अहिंसा से जुड़ा होता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सभी स्तरों पर अहिंसा की प्रासंगिकता आवश्यक है।

हिंसा की शक्ति अहिंसा की शक्ति से अधिक है मैं ऐसा नहीं मानती हूँ पर इतना अवश्य मानती हूँ कि हिंसा को प्रशिक्षण और प्रयोग की भूमिका प्राप्त है। आतंकवाद को ही लिया जाए तो यह हिंसा का एक रूप है। मुट्ठीभर आतंकवादी प्रशासन और जनता सबके छक्के छुड़ा रहे हैं। क्या अहिंसक शक्ति के पास इसका कोई प्रतिकार नहीं है? निःसंदेह अहिंसा की शक्ति को मापा नहीं जा सकता है। यदि उसके प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था हो जाए तो इसका विश्व शांति में अद्‌भुत काम हो जाएगा।

अहिंसा के प्रशिक्षण से पहले उसके प्रति पूर्ण विश्वास होना आवश्यक है। आपसी विश्वास के बिना विश्व में शांति नहीं हो सकती है। हिंसा के प्रशिक्षण और प्रयोग में हम जितनी शक्ति लगा रहे हैं, उसकी आधी शक्ति भी अहिंसा पर लगायी जाए तो उसका महत्व अधिक बढ़ता है परंतु अहिंसा में अपनी शक्ति लगाए कौन? धार्मिक लोग भी अहिंसा की दिशा में अपना योगदान नहीं दे सकते हैं, फिर आम आदमी इसकी चिंता क्यों करेगा?

भगवान महावीर ने गृहस्थ को निरपराध प्राणी की हत्या न करने का निर्देश दिया, यह भी अहिंसा का एक प्रयोग है। मनुष्य इस छोटे से प्रयोग को स्वीकार कर ले तो भी हिंसा में बहुत कमी जा जाएगी। इस संसार से हिंसा कभी समाप्त नहीं होगी, इस सच्चाई को सामने रखकर

भी अहिंसा के प्रशिक्षण पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता है। हिंसा समाप्त हो या ना हो, उसमें कमी की जा सकती है। यही मानवता के हित में होता है। यही विश्व शांति का एक सुदृढ़ मार्ग है।

अहिंसा का आचरण वही कर सकता है जिसका हृदय बदल जाए। अहिंसा का आचरण किया जा सकता है किन्तु कराया नहीं जा सकता है। अहिंसक वही हो सकता है जो अपने आप को हिंसक प्रवृत्ति से दूर रख सके। मनुष्य की आत्मा हिंसा करने से नहीं बच सकती है। मनुष्य हिंसा को रोकने में तभी सफल हो सकता है जब हम मनुष्य का हृदय परिवर्तित कर दें तो वह हिंसा करने की प्रवृत्ति को छोड़ देगा।

अहिंसा का अंकन जीवन या मरण से नहीं होता, उसकी अभिव्यक्ति हृदय परिवर्तन से होती है। हिंसा करने वाले व्यक्ति को समझा–बुझाकर हिंसा छुड़वाना अहिंसा का मार्ग है। वध करने वाले लोगों को बल प्रयोग से रोका जा सकता है परंतु अहिंसा को नहीं रोका जा सकता है। अहिंसा तभी होती है जब हिंसा करने वाले समझ बूझकर स्वयं हिंसा को छोड़ते हैं।

बल प्रयोग के माध्यम से किसी जीव को बचाना धर्म का रास्ता नहीं होता है अपितु उसके हृदय को परिवर्तित कर विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। जैसे एक व्यक्ति जो हमेशा माँस खाता है, यदि हम उसे माँस नहीं खाने की सलाह देते हैं फिर भी वह माँस खाने की आदत को नहीं छोड़ पाएगा। यदि हम उसके हृदय को परिवर्तित करके उसको माँस खाने के नुकसान बताएंगे तब वह माँस खाना छोड़ देगा। उसकी हिंसा करने की प्रवृत्ति छूट जाएगी। तब वह अहिंसक बन जाएगा। इसी प्रकार हम लोगों को हिंसा से होने वाले नुकसान बताएंगे और अहिंसा के फायदे बताएंगे तो वे हिंसा की प्रवृत्ति छोड़ कर अहिंसक बन जाएंगे। यह हिंसा को रोकने का सुदृढ़ मार्ग है जो विश्व में शांति बनाए रखने में सहायक है।

अहिंसा यात्रा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा 5 दिसम्बर, 2001 को सुजानगढ़ से प्रारम्भ की गई। इसका कुशल नेतृत्व वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी

कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा का मूल उद्देश्य लोगों के हृदय में अहिंसा चेतना का जागरण करना एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना था।

महात्मा गांधी ने स्वाधीनता आंदोलन में अहिंसा का सफल प्रयोग किया। उनका लक्ष्य था राष्ट्र की स्वतन्त्रता प्राप्त करना। उनके मन में लक्ष्य–प्राप्ति के लिए मर–मिटने का संकल्प था। हँसते–हँसते मर जाना परंतु मरने वाले पर अंश मात्र भी आक्रोश नहीं करना, यह उनकी कितनी बड़ी साधना थी। उनका मानना था कि हिंसा के माध्यम से जो कार्य नहीं हो सकता वह अहिंसा के माध्यम से आसानी से पूरा हो जाता है। इस आंदोलन में विजय अहिंसा की ही हुई थी। ✿

प्रतिशोध भाव हो लेकिन सुधार के लिए हो। हमें मर्यादाओं, संविधान और धर्म के अनुरूप ही चलना चाहिए जिससे विश्व में शांति बनी रहेगी। गौतम बुद्ध ने कहा था, ''स्वयं प्रकाशवान बनो और अपनी समस्याओं का स्वयं हल करो।'' यदि देश को हिंसा, आतंक और देशद्रोहियों से बचाना है तो सभी नागरिकों को चाक चौबंद रहना ही होगा तभी हमारे देश में शांति बनी रह सकती है।

उदार व सहयोगी बनें सभी देश

◈ uhr; kno नौवीं बी
सरस्वती ज्ञानपीठ हायर सैकेंडरी स्कूल, गोमती नगर, देवास, मध्यप्रदेश

foश्व शांति व अहिंसा पूरे विश्व में होनी चाहिये अर्थात् विश्व में सभी लोगों को मिल–जुलकर रहना चाहिये। अहिंसा के माध्यम से विश्व में शांति बनाई जा सकती है। महात्मा गांधी ने अहिंसा के माध्यम से हमारे भारत देश को आजाद कराया था। हम कह सकते हैं कि अगर आज अहिंसा का उपयोग करें तो विश्व शांति कायम रह सकती है। इससे सभी सुखी रहेंगे। अगर सभी सुखी से रहेंगे तो देश में भी शांति बनी रहेगी। हम धीरे–धीरे पूरे विश्व को शांति एवं अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेंगे। आतंकवाद अगर खत्म हो जाए तो हमारे देश में शांति बनी रहेगी। अतः हमें ज्यादा से ज्यादा प्रयास करने हैं कि आतंकवाद खत्म हो जाए। विश्व शांति व अहिंसा के पाने में सबसे बड़ा रोड़ा तो आतंकवाद ही है।

जहां भी सन्यनिष्ठा के साथ आग्रह है वहां हिंसा को बढ़ावा नहीं मिलेगा। जो आग्रह मिथ्या धारणाओं पर आधारित है, वह समस्या को बढ़ाने वाला ही होगा। हमारा दृष्टिकोण अनेकांत का बने। हम अनाग्रही बनें। सारे विवाद समाप्त हो जाएंगे। इससे देश में शांति बनी रहेगी। जब देश स्वतंत्र हुआ, तब किसी ने गांधीजी से कहा कि देश में तानाशाही की जरूरत है।

गांधीजी ने जवाब दिया, यह मैं भी मानता हूँ लेकिन जो लोग दस साल तानाशाही चला लेंगे, वे फिर लोकतंत्र को कभी नहीं आने देंगे।

देश में भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं रही, शर्मोहया का पर्दा पूरी तरह से फट चुका है। भ्रष्टाचार विश्व में अशांति फैलाने का काम कर रहा है। भ्रष्टाचार केवल काले धन्धों में ही नहीं बल्कि अनेक कामों में हो रहा है। उन्हें कड़ी सजा मिलनी चाहिए। विश्व में अशांति व हिंसा का कारण भेदभाव है। आपस के विवाद, मतभेद, कलह से विश्व में अशांति हो रही है। लोग आपस में लड़ाई–झगड़े करके खुद भी परेशान होते हैं और देश में भी अशांति फैलाते हैं। आपस के विवाद–भेदभाव आजकल इतने बढ़ गए हैं कि कुछ लोग छोटी–छोटी बातों पर लड़ाई व कत्ल कर देते हैं।

प्रतिशोध भाव हो लेकिन सुधार के लिए हो। हमें मर्यादाओं, संविधान और धर्म के अनुरूप ही चलना चाहिए जिससे विश्व में शांति बनी रहे। गौतम बुद्ध ने कहा था, ''स्वयं प्रकाशवान बनो और अपनी समस्याओं का स्वयं हल करो।'' हमें विश्व शांति के लिए स्वयं प्रकाशवान बनकर, सबको प्रकाशवान बनाना होगा यदि देश को हिंसा, आतंक और देशद्रोहियों से बचाना है तो सभी नागरिकों को चाक–चौबंद रहना ही होगा तभी हमारे देश में शांति बनी रह सकती है।

fo'o 'kkfr d fy, ç;kl%

- **jSyh%** विश्व शांति व अहिंसा के लिए हर जगह रैलियां निकालनी होंगी। इससे विश्व में शांति रहेगी। लोग इस रैली को देखेंगे और समझेंगे और हमारा साथ देंगे। हर जगह हमें फिल्मों के पोस्टर्स की जगह अहिंसा के पोस्टर लगाने होंगे। इससे जो लोग गलत काम करेंगे अहिंसा के पोस्टर्स को देखकर नहीं करेंगे।
- **ijLij n'kksa e okrkZyki%** परस्पर देशों या सारे देश आपस में मिल–जुलकर समाधान निकालें तो हल जल्दी निकल जाएगा। सारे देशों को मिलकर पूरे विश्व को शांति व अहिंसा के बारे में कोई ठोस उपाय निकालने होंगे। जिस देश में आर्थिक तंगी आ जाए दूसरे देशों को उनकी मदद करनी चाहिए जिससे उनकी खुशहाली बनी रहे।

बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प आ जाए तो हमें पूरा सहयोग करना चाहिए। सभी देशों को उदार व सहयोगी बनाना होगा।

vU; mik;%

- आतंकवाद के खिलाफ कठोर कानून बनाएँ तथा कठोरतापूर्वक लागू करें।
- आतंकवादियों को शरण देने वालों पर कड़ी कार्यवाही की जाए।
- राजनीति से बाहुबलियों को अलग किया जाए।
- सीमाओं पर अत्याधुनिक यंत्रो के साथ सुरक्षा व्यवस्था को दुरूस्त किया जाए।
- आतंकवाद के विरुद्ध विश्व स्तर पर जनमत तैयार किया जाएं।
- आतंकवाद को समर्थन देने वाले देशों से सम्बंध विच्छेद किया जाए।
- आर्थिक व सामाजिक विषमता को दूर किया जाए।
- आतंकवाद के खिलाफ अपने देशवासियों से सहयोग की अपील तथा सरकारी सहयोग की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- आतंकवाद के खिलाफ प्रभावित क्षेत्र की जनता को जगाना, उन्हें सैनिक प्रशिक्षण व सुविधाएं प्रदान करना।
- आत्मसमप्रण करने वाले आतंकवादियों को सरकारी संरक्षण की व्यवस्था तथा जीवकोपार्जन की व्यवस्था की गारण्टी।
- जो व्यक्ति आतंकवादियों से अलग होकर राष्ट्र की मुख्यधारा में जुड़ना चाहते हैं, उन्हें सामाजिक सम्मान दिया जाना चाहिए।

पूरे विश्व में शांति रहने से आपस के पारस्परिक संबंध अच्छे बने रहेंगे। विश्व शांति के लाभ निम्न प्रकार हैं:

- **vkfFkd ykHk%** विश्व शांति स्थापित होने से आर्थिक लाभ भी है। देश में गरीबों के पास धन, खाने की व्यवस्था न होने से उन्हें आर्थिक

समस्या का सामना करना पड़ता है। जो अमीर रहता है उसे आर्थिक समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है लेकिन जो गरीब रहता है वह इस समस्या के कारण कभी भी सुखी नहीं हो पाता है। गरीबों को पेट भरने के लिए जगह–जगह भटकना पड़ता है। अतः जो गरीब है उसके लिए हमें खाने, निवास की व्यवस्था करनी चाहिए। यह व्यवस्था हमें पूरे देश में बनानी ही होगी। इससे हमारे पूरे देश व पूरे विश्व में शांति बनी रहेगी।

- **lkekftd ykHk%** विश्व शांति से सामाजिक लाभ भी है। समाज मिल–जुलकर रहेगा तो विश्व में शांति बनी रहेगी। समाज के लोग मिल–जुलकर रहेंगे तो वह अशांति को फैलने ही नहीं देंगे। जो लोग दिन–रात कलह और तनाव से भरा जीवन जी रहे हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं बनाया। हर व्यक्ति का भाव अपना–अपना है। पिता का अपना, और पति व पत्नी का अपना। जहां संवेगों का इतना बड़ा भेद है, वहां एकरूप होना बड़ा कठिन काम है। पहले से अगर लक्ष्य हो कि हमें शांति के साथ रहना है तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः ही होता चला जाएगा। इससे विश्व में शांति बनी रहेगी।

- **vkradokn [kRe%** आतंकवाद अगर खत्म हो जाएगा तो विश्व में शांति ही शांति होगी। पाकिस्तान को आतंकवाद का रास्ता छोड़कर अच्छे व सच्चे रास्ते पर चलना चाहिए, क्योंकि आतंक की राह उसे केवल तबाह करेगी। पाकिस्तान के परमाणु हथियारों तक आतंककारियों के हाथ पहुंच सकते हैं और इससे विश्व के सभ्य समाज को खतरा पहुंच सकता है। अतः हमें यह जरूर कोशिश करनी है कि पाकिस्तान के परमाणु हथियार आतंकवादियों के हाथ न पहुंचे। आतंकवाद को खत्म करने के लिये सभी नागरिकों को चाक–चौबंद रहना ही होगा।

अतः देश के देशवासियों को विश्व शांति के प्रति अपने दायित्वों व कर्तव्यों के प्रति संकल्पित रहना होगा। विश्व शांति एवं अहिंसा में योगदान करने के लिए सदैव समप्रित होना होगा। स्वभूमि, स्वसंस्कृति स्वभाव से प्यार करना चाहिए तभी विश्व में शांति बनी रह सकती है। ✿

आजकल जो समस्या शांति और अहिंसा को खतरा बनी हुई है वह है आतंकवाद जिसका कोई भी देश तोड़ नहीं निकाल पाया है। आतंकवाद किसी भी क्षेत्र में बम ब्लास्ट कर वहाँ की शांति और अहिंसा व्यवस्था को बिगाड़ सकता है। आतंकवाद आज हर देश की शांति और अहिंसा व्यवस्था को दीमक की तरह चाट रहा है। आतंकवाद विश्व शांति का सबसे बड़ा शत्रु है। आतंकवाद के खात्मे के लिए कोई कारगर प्रयास करना आवश्यक है।

आतंकवाद विश्व शांति का सबसे बड़ा शत्रु

◈ **fufru fl?ky** 12वीं ए
एस.एस.एल.टी. गुजरात सी.सै. स्कूल,
1, राजनिवास मार्ग, दिल्ली

oर्तमान युग में शांति और अहिंसा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कहा जाता है कि शांति और अहिंसा के बल पर ही दुनिया जीती जा सकती है। महापुरुषों ने विश्व को सदैव शांति और अहिंसा का ही पाठ पढ़ाया है। शांति और अहिंसा के बल पर ही आज दुनिया कायम है। आज की भ्रष्ट दुनिया में वही व्यक्ति श्रेष्ठ है जो शांति और अहिंसा का पालन करे। शांति और अहिंसा को ही खुशी का मूल मंत्र माना जाता है।

विश्व में शांति और अहिंसा को बनाए रखने के लिए सन् 1945 में संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई जिसने विश्व में विभिन्न शांति स्थापना अभियान चलाए तथा कई संभावित युद्धों को होने से रोका। आज विश्व में शांति और अहिंसा को बनाए रखने में संयुक्त राष्ट्रसंघ की भूमिका को नहीं भुलाया जा सकता। विश्व में शांति और अहिंसा को बनाए रखने के लिए प्रत्येक देश एक–दूसरे का परस्पर सहयोग कर रहे हैं जिस कारण विश्व में युद्ध तथा गृहयुद्ध की स्थिति कम ही उत्पन्न होती है।

Hkkjr dh Hkfedkk प्राचीन काल से ही भारत शांति और अहिंसा का समर्थक रहा है। महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, महावीर,

गौतम बुद्ध ये सभी महापुरुष भारत में जन्मे हैं तथा इन्होंने सदैव शांति और अहिंसा का ही उपदेश दिया है। भारत ने सदैव अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान और चीन के साथ सदैव शांति वार्ता कर दोस्ती का हाथ बढ़ाया है। जब श्रीलंका में जातीय संघर्ष भड़का और गृहयुद्ध की स्थिति उत्पन्न हुई तब सन् 1987 में भारत ने अपनी ओर से 'शांति सेना' भेजकर वहाँ शांति बनाए रखने की कोशिश की।

भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ हमेशा शांति और अहिंसा के माध्यम से ही वार्ता की है। भारत ने सदैव संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन किया है ताकि वह विश्व में शांति और अहिंसा बनाए रखने में अपना योगदान देता रहे।

/kkfeZd xzaFkksa dk ;ksxnku% प्राचीनकाल से ही विश्व में शांति और अहिंसा बनाए रखने में हमारे धार्मिक ग्रंथों जैसेः गीता, बाईबल, कुरान शरीफ आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन ग्रंथों में शांति और अहिंसा का महत्व इसलिए दिया गया है क्योंकि इन्हीं के कारण व्यक्ति श्रेष्ठ कहलाता है। शांति और अहिंसा के बल पर ही लड़ाई और झगड़ों का निपटारा किया जा सकता है।

राजा अशोक ने भी बौद्ध धर्म के विभिन्न ग्रंथों, स्तूपों, अभिलेखों आदि में शांति और अहिंसा के संदेशों का विस्तार तथा फैलाव किया है। गौतम बुद्ध ने भी अपने अनुयायियों को शांति और अहिंसा का संदेश दिया। महावीर ने भी केवल शांति और अहिंसा को महत्व दिया है। गाँधी जी ने भी आजादी के संघर्ष के दौरान शांति और अहिंसा का सहारा लिया था।

अब्राहम लिंकन का कहना है कि ''मैंने यह आभास किया कि जब लोग खुशी दर्शाते हैं तो वे अपने दिमाग को उसी प्रकार ढाल लेते हैं।'' किसी महापुरुष ने कहा कि ''आज के समय में आप यदि किसी व्यक्ति को शांति प्राप्त कराने में सहायता करते हैं तब आप यह जग सुधार रहे हैं।''

आज विश्व में शांति और अहिंसा बनाए रखने के लिए विभिन्न देशों की सरकारें हर तरह का प्रयास कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व में

शांति और अहिंसा व्यवस्था कायम करने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का गठन किया है।

D;k t:jh g 'kkfr o vfgalk% इंसान और जानवर सभी ईश्वर की संतान हैं। सभी को इस पृथ्वी पर रहने का अधिकार है। किसी को भी एक–दूसरे की जान लेने का अधिकार नहीं है। यदि हम एक–दूसरे की जान लेते हैं तो हम विश्व में घृणा का पात्र बन जाते हैं। अहिंसा उन लोगों के लिए एक हथियार है जो अपने या दूसरों के अधिकारों के लिए लड़ते हैं। आज विश्व में शांति और अहिंसा बहुत महत्वपूर्ण हो गई है।

vko';d rRo% शांति और अहिंसा बनाए रखने के लिए आपसी भाईचारा, प्रेम, मिलन, विश्वास, सहयोग, सहारा अति आवश्यक है। इनके बिना शांति और अहिंसा की कल्पना करना निरर्थक है।

'kkfr vkj vfgalk dk [krjk% विश्व में शांति और अहिंसा को होने वाले खतरे हैं।

देशों के बीच युद्ध, गृहयुद्ध, सीमा–विवाद, जातीय संघर्ष, पानी और प्राकृतिक संसाधनों को लेकर संघर्ष व आतंकवाद। इन खतरों के कारण शांति और अहिंसा की कल्पना तक नहीं की जा सकती। इन खतरों से निपटने के लिए विभिन्न देशों की सरकारें प्रयास कर रही हैं।

आजकल जो समस्या शांति और अहिंसा को खतरा बनी हुई है वह है आतंकवाद, जिसका कोई भी देश तोड़ नहीं निकाल पाया है। आतंकवाद किसी भी क्षेत्र में बम ब्लास्ट कर वहाँ की शांति और अहिंसा व्यवस्था को बिगाड़ सकता है। आतंकवाद आज हर देश की शांति और अहिंसा व्यवस्था को दीमक की तरह चाट रहा है। आतंकवाद विश्व शांति का सबसे बड़ा शत्रु है। आतंकवाद के खात्मे के लिए कोई कारगर प्रयास करना आवश्यक है।

vkradokn ls fuiVus dh rjhd% आतंकवाद से तभी निपटा जा सकता है जब सभी देश विश्व मंच पर आपसी सहयोग करें तथा अपने–अपने क्षेत्र में सुरक्षा का दायरा बढ़ाएँ। आतंकवाद से तभी निपटा

जा सकता है जब सभी नागरिक चौकन्ने रहकर आतंकवादी–संबंधी घटनाओं का मुँहतोड़ जवाब देंगे।

'kkfr çkfIr d ey e=% शांति और अहिंसा को संयम से भी प्राप्त किया जा सकता है। मेरा यह मानना है कि युद्ध के बिना शांति और अहिंसा के कोई मायने नहीं हैं। शांति और अहिंसा तभी प्राप्त की जाती है जब आपसी सहयोग हो। शांति और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न देशों द्वारा विभिन्न मुहिम चलाई जा रही है, जैसेः नागरिकों को शिक्षित करना, भ्रष्टाचार, गरीबी को कम करना। शांति और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए विश्व में 'शांति दिवस' और 'अहिंसा दिवस' भी मनाया जाता है।

आज विश्व में शांति और अहिंसा को बनाए रखने के लिए हर तरह के प्रयास करने चाहिए। यह हमारे लिए तथा आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए आवश्यक है। शांति और अहिंसा प्रगति, अच्छाई और इंसानियत के लिए बेहद आवश्यक है। शांति और अहिंसा के बिना धरती पर जीवन की कल्पना करना निरर्थक है। शांति और अहिंसा को अपनाने वाला व्यक्ति ही सबसे श्रेष्ठ है। ✿

युद्ध की बात सोचना भी खतरनाक

पिछले दो महायुद्धों में भयानक नरंसहार को देखकर सारा विश्व यही प्रयास करता है कि कठिन से कठिन स्थिति में भी युद्ध न करना पड़े। आज विश्व उसी स्थिति में पहुंच चुका है जिस स्थिति में युधिष्ठिर युद्ध करने के बाद थे और अशोक कलिंग विजय के उपरान्त थे।

◈ 'kHke 'kek 9वीं
इटमा विद्या निकेतन
इंदौर, मध्यप्रदेश

Vहिंसा का सामान्य अर्थ है हिंसा न करना। इसका व्यापक अर्थ है–किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना। मन में किसी का अहित न सोचना, किसी को कटुवाणी आदि के द्वारा भी नुकसान न देना तथा कर्म से भी किसी भी अवस्था में, किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, यह अहिंसा है। हिन्दू धर्म में अहिंसा का बहुत महत्व है। अहिंसा परमो धर्म अर्थात अहिंसा सबसे बड़ा धर्म कहा गया है।

आधुनिक काल में महात्मा गाँधी ने भारत की आजादी के लिये जो आन्दोलन चलाया वह काफी सीमा तक अहिंसात्मक था। इतिहास साक्षी है कि किसी भी युग में किसी भी समस्या का समाधान युद्ध से नहीं होता। युद्ध हिंसा है और यदि हिंसा से समस्याएं हल होतीं तो आज सारा विश्व शांतिमय होकर सुख की नींद सोता। किंतु यह भी सत्य है कि प्रकृति ने यदि मनुष्य को देवता बनाया है तो राक्षस भी बनाया है। पुण्य के साथ पाप को भी रचा है। दिन का प्रकाश है तो रात्रि का अन्धकार भी और सृजन के साथ अंत भी। फिर भला अहिंसा के साथ हिंसा कैसे नहीं होगी। मनुष्य की

सद्वृत्ति एवं दुष्वृत्ति का सदैव संघर्ष रहा ही है। प्रश्न उठता है कि फिर क्या यूं ही संघर्ष को चलने दें! कदापि नहीं।

अहिंसा का धर्म केवल ऋषियों और संतों के लिए नहीं है। यह सामान्य लोगों के लिए भी है। अहिंसा उसी प्रकार से मानवों का नियम है, जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। पशु की आत्मा सुप्तावस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति के नियम को ही जानता है। मानव की गरिमा एक उच्चतर नियम आत्मा के बल के नियम के पालन की अपेक्षा करती है। जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा की खोज की, वे न्यूटन से अधिक प्रतिभाशाली थे। वे स्वयं बेलिंग्टेन से भी बड़े योद्धा थे। शस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान होने पर भी उन्होंने उसकी व्यर्थता को पहचाना और शांत संसार को बताया कि उसकी मुक्ति हिंसा में नहीं अपितु अहिंसा में है।

साधारण अर्थ में अहिंसा का तात्पर्य हिंसा न करने से लगाया जाता है परंतु अहिंसा तो एक नकारात्मक शब्द हुआ। उसे विलोम शब्द भी कह सकते हैं। अहिंसा का वास्तविक अर्थ है निडर होना। मानव का निडर होना उसका सबसे बड़ा गुण है। ऋग्वेद की एक सूक्ति में आता हैः हे प्रभु ! आप हमें अभय प्रदान करें। निडर व्यक्ति ही स्वतंत्र हो सकता है। जिसके पैरों में जंजीर बंधी हुई है, वह स्वतंत्र नहीं है कैसे हो सकता है और जो स्वतंत्र नहीं है, वह निडर पुरुष से दूर–दूर भागती है। विश्व के मजहबों में मंत–मंतातर होने पर भी अहिंसा पर सभी एकमत हैं। इसलिए अहिंसा को बहुत ही विचार एवं विवेक से समझ लेने की आवश्यकता है।

मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है। ईश्वर ने उसे अद्भुत क्षमताएं प्रदान की हैं। उसने ऊँचे–ऊँचे पर्वतों को काटकर बस्तियां बनायीं, सड़के बनायीं, सेतु बनाये। मानव सभ्यता की गाथा उपलब्धियों की गाथा है। मनुष्य के अपरिमित पराक्रम की गाथा है। फिर भला वह क्यों नहीं समझ पाता कि युद्ध से किसी भी समस्या का निराकरण सम्भव नहीं।

एक समय था जब युद्ध करना मनुष्य की विवशता थी, क्योंकि मानव मात्र की संसार में यह धारणा है कि युद्ध करते हुए यदि मृत्यु होगी तो सीधे स्वर्ग जाएंगे और संसार कहेगा कि उसने वीरगति प्राप्त की। एक

स्थान पर कहा गया है कि ''हतो वा प्राप्स्यमि स्वर्ग जित्वा मौक्ष्यते महीम।'' अर्थात् क्षत्रिय युद्ध करके आततायियों से प्रजा की रक्षा करते हैं, इसलिए उसे क्षात्रधर्म कहा जा सकता है और शत्रु से युद्ध करके यदि उसकी मृत्यु होती है तो उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

भारत ने युद्ध को कभी महत्व नहीं दिया। रामायण और महाभारत के युद्धों के बाद भारतीयों की ओर से कभी कोई युद्ध शुरू नहीं हुआ। भारत के इतिहास में कोई भी काल ऐसा नहीं है जब भारत ने किसी दूसरे देश पर आक्रमण किया हो, किन्तु आततायियों से अपने देश की रक्षा के लिए यदि युद्ध करना पड़ता है तो यह विवशता है। अतः युद्ध चाहे हो, या न हो युद्ध के लिए सैनिकों को हमेशा तैयार रहना आवश्यक है। इसे किसी भी तरह हिंसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आत्मरक्षा का अधिकार जैसे प्रत्येक व्यक्ति को है वैसे ही देश का है।

रहा सवाल विश्व शांति का। यदि विश्व का प्रत्येक देश इस सिद्धांत को समझ ले तो स्वयं ही सर्वत्र अहिंसा का साम्राज्य होगा। निस्संदेह विश्व के प्रत्येक देश को यह प्रयास करना चाहिए कि वह युद्ध से बचे। आज के युग में युद्ध की बात सोचना भी भयानक परिणामों को न्यौता देना है। क्योंकि मनुष्य के हाथ में विज्ञान ने ऐसे–ऐसे अस्त्र पकड़ा दिये हैं, जिनसे वह स्वयं को और समूची मानव जाति को पलभर में तहस–नहस कर सकता है। यदि नन्हें से बच्चे के हाथ में मशाल पकड़ा दी जाए, तब जो परिणाम होगा वही वर्तमान समय में युद्ध का परिणाम हो सकता है।

पिछले दो महायुद्धों में भयानक नरंसहार को देखकर सारा विश्व यही प्रयास करता है कि कठिन से कठिन स्थिति में भी युद्ध न करना पड़े। आज विश्व उसी स्थिति में पहुंच चुका है जिस स्थिति में युधिष्ठिर युद्ध करने के बाद थे और अशोक कलिंग विजय के उपरान्त थे। धर्म की रक्षा के लिए यदि युद्ध होता है तो वह धर्म कैसे हो सकता है। इसलिए हिंसा को विश्व शांति का आधार नहीं माना जा सकता है। अहिंसा ही विश्व शांति का आधार बन सकता है। ✿

विश्व बंधुत्व की भावना से होती है तरक्की

◈ **gf"k/rk vku:n** 9वीं ए
के. वि. नं. 3 ओ.एन.जी.सी
सूरत, गुजरात

सच बात तो यह है कि विश्व बंधुत्व की भावना लोगों की प्रगति को और तेज करती है। वह सब मनुष्यों को एक समान समझती है और उनके रंगों के कारण भेदभाव नहीं करती है। कोई भी ऐसा देश नहीं है जो स्वयं को पूर्ण रूप से चला पाए। सभी देशों को किसी भी वस्तु के लिए दूसरे देशों पर निर्भर होना पड़ता है।

vाधुनिक युग को अंतर–राष्ट्रवाद का युग भी कहा जा सकता है। आज इस वर्तमान स्थिति में पूरा विश्व एक राजनैतिक ईकाई के रूप में कार्य कर रहा है। लोगों में फैलती अहिंसा की धारणा के कारण विश्व शांति को बढ़ावा दे रहे हैं। अहिंसा की भावना ने हममें भाईचारे की भावना को पैदा किया है। अब हम जहाँ अपनी मानसिक शांति चाहते हैं, वहीं पारिवारिक कलह से दूर रहना चाहते हैं। हम देश ही नहीं पूरे विश्व में अमन–चैन पैदा करना चाहते हैं।

प्रथम विश्व युद्ध, जो 1914 से 1918 तक चला, के बाद सभी विवेकशील लोगों ने ऐसे किसी युद्ध से बचने के लिए और विश्व शांति को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई। धीरे–धीरे लोगों को मिल्टन की कही गई बात सच लगने लगी कि ''शांति की चमक युद्ध की चमक से कहीं ज्यादा होती है।''

राष्ट्रसंघ का एकमात्र मकसद था विश्वबंधुत्व को कायम रखना। पर राष्ट्रसंघ ज्यादा देर तक युद्ध को रोक अथवा दबा नहीं पाया और विश्व एक बार फिर से द्वितीय विश्व युद्ध की चपेट में आ गया जो 1939 से

1945 तक चला। इस युद्ध के बाद एक नया संघ, जो संयुक्त संघ के नाम से जाना गया, स्थापित हुआ। वह राष्ट्रसंघ की तरह काम करता है, पर वह थोड़ा ज्यादा लोकतांत्रिक अथवा प्रजातांत्रिक है।

सच बात तो यह है कि विश्व बंधुत्व की भावना लोगों की प्रगति को और तेज करती है। वह सब मनुष्यों को एक समान समझती है और उनके रंगों के कारण भेदभाव नहीं करती है। कोई भी ऐसा देश नहीं है जो स्वयं को पूर्ण रूप से चला पाए। सभी देशों को किसी भी वस्तु के लिए दूसरे देशों पर निर्भर होना पड़ता है।

विश्व सन्धि एक ऐसा शब्द है जो सारी दुनिया को एकमात्र देश के रूप में देखता है। यह एक देश–दुनिया के सारे भेदभाव से मुक्त है, फिर भी कुछ ऐसे तत्व हैं जो विश्व बंधुत्व की भावना को ठेस पहुँचाते है। वे तत्व हैं:–

- सबसे बड़ी बाधा विश्व सन्धि की भावना में यह है कि विश्व सन्धि राष्ट्र भक्ति का उपाय है। हम हमेशा लोगों को यह कहते हैं कि, ''मेरा देश महान'' या ''मेरी जन्मभूमि सबसे ऊंची व महानतम् है।'' ऐसी सोच अंतर–राष्ट्रवाद के कट्टर विरोध में जाती है।

- सबसे बड़ा व सुप्रिमो बनने की प्रतियोगिता भी सबसे बड़ी अड़चन पैदा करने वाली सोच है। यह अंतर–राष्ट्रवाद की भावना को ठेस पहुँचाती है।

- तीसरी सोच यह है कि सारे देश अपने–अपने फायदे देखते हैं और इस कार्य से कभी–कभार दूसरे देशों को नुकसान उठाना पड़ता है। ऐसी छोटी सोच भी विश्व बंधुत्व की भावना के विरुद्ध जाती है।

- पूंजीवाद भी अंतर–राष्ट्रवाद का सबसे बड़ा शत्रु है। पूंजीपतियों से भरे हुए देश हमेशा छोटे व नीचे देशों के ऊपर अपनी अकड़ दिखाते हैं। वे कोई भी उन्हें नीचा दिखाने का मौका नहीं छोड़ते हैं।

- साम्राज्यवाद की सोच भी इस भावना का अपमान करती है। साम्राज्यवाद अंतर–राष्ट्रवाद के बिल्कुल विपरीत है। इस सोच में बड़े व ताकतवर देश छोटे और गरीब देशों को अपने साम्राज्य में शामिल कर लेते हैं।

विश्व शांति व अहिंसा अपनाने के कई तरीके हैं। ऐसा तरीका गांधीजी का भी था। गांधी का राष्ट्रवाद संकीर्ण एवं उग्र राष्ट्रवाद न होकर व्यापक एवं सहिष्णु राष्ट्रवाद है। गांधीजी को राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय पोशाक, राष्ट्रीय शिक्षा में अटूट आस्था थी, पर वे कट्टर राष्ट्रवादी नहीं थे। वे अंतराष्ट्रवाद में राष्ट्रवाद को शामिल करना चाहते थे।

गांधीजी विश्व को एक परिवार बनाकर सच्चे अंतर्राष्ट्रीयतावादी बन जाते हैं। सार रूप में, गांधी औचित्यपूर्ण राष्ट्रवाद व व्यापक अंर्तराष्ट्रीयतावाद के समर्थक थे। गांधी के राष्ट्रवाद व अंतर्राष्ट्रीयतावाद सम्बंधी धारणा काफी महत्वपूर्ण है और हर दृष्टिकोण से सराहनीय है।

अहिंसा सम्बन्धी गांधीजी की धारणा काफी व्यापक है। गांधीजी का मानना है कि अहिंसा का अर्थ किसी प्राणी को न मारना या चोट न पहुंचाना ही नहीं है, बल्कि उससे बहुत ज्यादा है। हर बुरे विचार, अवांछित जल्दीबाजी, झूठ, घृणा जैसी बुराइयों से अपने आप को कोसों दूर रखना है। अहिंसा प्रेम से जुड़ा है। गांधीजी का मानना है कि प्रेम ही अहिंसा है। लेकिन गांधीजी की कुछ व्यावहारिक बातें भी थीं, अगर जान पर शामत आए तो उसका प्रतिरोध करना चाहिए, चाहे वह हिंसा के रूप में ही क्यों नहीं हो।

गांधीजी की अहिंसा संबंधी धारणा काफी महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। गांधीजी ने अहिंसा को व्यापक अर्थ में लिया है। इसे सर्वोच्च मानवीय गुण प्रेम से जोड़ते हुए महत्व प्रदान किया। गांधीजी की अहिंसा सम्बन्धी धारणा इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने अहिंसा को कायरता नहीं माना है। प्राण जाने की स्थिति में प्रतिरोध करना हिंसा है। प्राण जाने की स्थिति में प्रतिरोध कराना हिंसा नहीं है। यह गांधीजी का विचार महत्वपूर्ण, प्रासंगिक एवं व्यावहारिक है।

विश्व शांति सभी देशों और लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति व खुशी का एक आदर्श है। विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है, जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की प्रणाली के जरिए इच्छा से सहयोग करते हैं ताकि युद्ध को

रोका जा सके। हालांकि कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग विश्व शांति के लिए सभी व्यक्तियों के बीच दुश्मनी के खात्मे के संदर्भ किया जाता है।

fo’o 'kkfr d /kkfeld fopkj% कई धार्मिक नेताओं ने हिंसा खत्म करने या विश्व शांति की इच्छा व्यक्त की है।

ck) /ke% कई बौद्ध धर्मावलंबी मानते हैं कि विश्व शांति तभी हो सकती है, जब हम अपने मन के भीतर शांति स्थापित करें। विचार यह है कि गुस्सा और मन की अन्य नकारात्मक अवस्थाएं युद्ध व लड़ाई के कारण हैं। बौद्धों का विश्वास है कि लोग केवल तभी शांति और सद्भाव के साथ जीते है, जब वे अपने मन के क्रोध को त्याग न दें और प्यार और करुणा पैदा करें।

;gnh /ke% यहूदी धर्म पारंपरिक रूप से सिखाता है कि भविष्य में किसी समय एक महान् नेता का उदय होगा और वह इजराइल के लोगों को एकजुट करेगा, जिसके परिणामस्वरूप विश्व में शांति व अहिंसा आएगी।

fgn /ke% परंपरागत रूप से हिन्दू धर्म में ‘‘वसुधैव कुटुम्बकम्’’ की अवधारणा गृहीत की गई है जिसका अनुवाद है ‘पूरा विश्व एक परिवार है’। हम जितना अधिक ज्ञान की तलाश करेंगे, उतने ही समावेशी होंगे और सांसारिक भ्रम या माया से भीतर की आत्मा को मुक्त करना होगा।

इसके अलावा बहाई धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, जैन धर्म व सिख धर्म भी ‘वसुधैव कुटंबकम्’ को मानते हैं। तो आइए आज प्रण लेते हैं–‘सारा विश्व एक परिवार है और हम उसके सदस्य हैं।’ ✿

परमाणु ऊर्जा विश्व के विनाश का पर्याय

◈ idt tu 12वीं
शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय
बाल विनय मंदिर
पार्क रोड़, इन्दौर, मध्यप्रदेश

विश्व के सारे धर्म व संप्रदाय अहिंसा, शांति, प्रेम, सत्य, सौहार्द की शिक्षा देते हैं। फिर भी विभिन्न धर्मों का सांप्रदायिकता के नाम पर अहिंसा का दमन कर अशांति उत्पन्न करना स्वयं उनके धर्म को ही कलंकित करता है। विश्व शांति के लिए परमावश्यक है समस्त धर्मावलंबियों का मित्रतापूर्वक रहना।

eमानव सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही प्राणी मात्र ने केवल सुख व शांति की अभिलाषा की है। काल के विकराल स्वरूप के कारण तथा समस्याओं की विशालता के फलस्वरूप ही अशांति व भय ने जन्म लिया, जिसका प्रभाव मानवीय सुख, शांति व जीवनशैली पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में परिलक्षित हुआ। इसके निवारण हेतु ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयासों की आवश्यकता महसूस की गई। प्रसिद्ध साहित्यकारों की समीक्षा के फलस्वरूप ही ''अहिंसा–विश्व शांति'' के संदर्भ में दृष्टिगोचर हुई।

वर्तमान समय में समाज में व्याप्त कुसमस्याएं भ्रष्टाचार, कालाधन, आतंकवाद, सांप्रदायकिता, महंगाई आदि ने समाज को अंधकार के गर्त में धकेला है। मानव व श्रम दोनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं। अहिंसा की विश्वस्तरीय स्थापना हेतु दार्शनिकों, समीक्षकों व मानवीय प्रयास की आवश्यकता है। अहिंसा न तो किसी पथ विशेष का दर्शन है व न ही किसी सम्प्रदाय की धार्मिक धारा है। अहिंसा प्राणी के मूल अस्तित्व से जुड़ी विषयधारा है। शांति, प्रेम, करुणा, दया, कल्याण, अभय, रक्षा आदि अहिंसा के पर्याय हैं।

'विश्व समन्वय अनेकांत–पथ, सर्वोदय का प्रतिपल गान
मैत्री करुणा सब जीवों पर, धर्म–अहिंसा ज्योति महान।'

साहित्यकारों व समीक्षाकारों के दर्शनशास्त्र के फलस्वरूप अहिंसा को जीवन का परम रसायन निरूपित किया है। शास्त्रों में यहां तक कहां गया ''एक व्यक्ति हिंसा किए बिना फल का पात्र होता है, जबकि दूसरा व्यक्ति हिंसा करके शायद उसके फल का पात्र नहीं होता। चूंकि दोनों में भाषों या विचारों का महत्व है। हिंसा करने वाला व्यक्ति यदि सावधानीपूर्वक कार्य करे और हिंसा भी हो जाये तो उसे कोई दोष नहीं। इसके विपरीत किसी भी व्यक्ति के द्वारा यदि हिंसा भी न हो, लेकिन वह यदि असावधानीपूर्वक कार्य करे तो भी हिंसा का ही दोष होगा।'' निष्कर्ष रूप में हिंसा के पीछे प्रमाद–परिणति मूल कारण है।

विश्व शांति की राह में बाधक सबसे बड़ा तत्व आतंकवाद है। स्वार्थ साधनों की पूर्ति हेतु हिंसक, अमानवीय व अवांछनीय क्रियाकलापों का पर्याय ही आतंकवाद है। वर्ष 2008 में अकेले कई आतंकी हमलों की मार से भारत का हृदय रक्तरंजित हुआ। मुंबई, असम, मालेगांव, अहमदाबाद, जयपुर जैसे शहरों में हुए हमले आतंक का पर्याय हैं और इनका निवारण अहिंसा से ही संभव है। विश्व स्तर में अहिंसा रूपी भावना की स्थापना हिंसा पर विराम लगा सकती है।

विश्व के सारे धर्म व संप्रदाय अहिंसा, शांति, प्रेम, सत्य, सौहार्द्र की शिक्षा देते हैं। फिर भी विभिन्न धर्मों का सांप्रदायिकता के नाम पर अहिंसा का दमन कर अशांति उत्पन्न करना स्वयं उनके धर्म को ही कलंकित करता है। विश्व शांति के लिए परमावश्यक है समस्त धर्मावलंबियों का मित्रतापूर्वक रहना। भारतीय लोकतंत्र में भी 'पंथ–निरपेक्षता' को सर्वोपरि रखा है। पंथ–निरपेक्षता के अंतस में अहिंसा ही मूल रूप में परिलक्षित होती है।

विश्व के अनेक देशों के मध्य एक तीव्र प्रतिस्पर्धा का माध्यम बन चुका है जिसका एक नमूना द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा व नागासाकी में किए गए परमाणु विस्फोट न केवल उस

देश के अमिट पतन का कारण बनें, बल्कि आज वर्षों बाद भी अपंगता व शारीरिक विकलांगता उसके ही अभिशाप बन कर रह गए।

आज भी इसी दौड़ में विश्व की महाशक्तियां यथा अमेरिका, रूस, चीन, जापान व जर्मनी तथा महाशक्तियों की दौड़ के पीछे भागता भारत यदि इसी तरह इन परमाणु हथियारों की होड़ में लगा रहा तो तथाकथित वैज्ञानिकों का कथन यथा वर्ष 2035 में ब्रह्माण्ड का विनाश संभव है सत्य कथन में परिणीत हो जायेगा और इसे केवल अहिंसा रूपी हथियार से थामा जा सकता है।

विश्व स्तर पर तथा भारत में पश्चिमी सभ्यता की नकल तथा पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, इन सबके फलस्वरूप ही विलासितापूर्ण जीवनशैली का प्रादुर्भाव हुआ। असंयमित जीवन शैली तथा खानपान के कारण नित नए रोगों का उदय हुआ। मांसाहार, मदिरापान जैसी विसंगतियों के फलस्वरूप जहाँ प्रत्यक्षतः पंचेन्द्रिय प्राणी की निर्ममता से हत्या होती है वहीं उसके द्वारा जनित अनेक रोगों के उपचारार्थ पुनः हिंसात्मक दवाईयों का सेवन, अहिंसा को खण्डित करता है।

fgalk dks tSu 'kkL=ksa esa n`f"V% चार भेद किये गए हैं, यथा–संकल्पी, उद्योगी, आरंभी व विरोधी हिंसा। इनमें सभी में संकल्पी हिंसा सर्वथा त्याज्य है। किसी भी प्राणी का संकल्प या उद्देश्यपूर्वक निश्चित करके वध करना या ऐसे भाव लाना ही संकल्पी है। आतंकवादी घटनाएं, मांसाहार हेतु प्राणियों को वधपूर्वक मारना आदि संकल्पी हिंसा के उदाहरण हैं। इस प्रकार की हिंसा का त्याग सभी धर्मों व संप्रदायों में किया गया है।

अतः विश्व शांति की स्थापना सिर्फ और सिर्फ अहिंसा के द्वारा ही संभव है। अहिंसा व शांति, दोनों ही एक–दूसरे के पर्याय व पूरक है। अहिंसा के बिना शांति व शांति के बिना अहिंसा की कल्पना असंभव है। अहिंसात्मक प्रवृत्ति का सतत् अनुसरण कर तथा गांधी व महावीर के अहिंसा के सिद्धांतों का अनुपालन करके ही संपूर्ण देश, समाज व राष्ट्र को सुख–शांति व निर्वाण रूपी माला में पिरोया जा सकता है। ✿

बिना अहिंसा कैसा मानव

◈ **ufyuh 'kek** 9वीं ए
माता गुजरी पब्लिक स्कूल
ग्रेटर कैलाश, दिल्ली

लोगों को भी समझना चाहिए कि विश्व शांति और अहिंसा इस संसार के लिए और इस संसार में रहने वाले लोगों के लिए कितनी आवश्यक है। बिना अहिंसा और शांति के यह संसार और उसमें रहने वाले लोग एक दानव की तरह हैं। तो इन बातों से यह पता चलता है कि विश्व शांति और अहिंसा लाभकारी हैं, उनमें कोई अवगुण नहीं है।

foश्व शांति हमारे जीवन का एक अनमोल पहलू है। शांति के बिना हमारा जीवन, जीवन नहीं। विश्व शांति तो एक जरिया है अहिंसा को बढ़ावा देने का। हमें हमेशा भगवान से यही कामना रहती है कि हमारे जीवन में शांति आए परंतु हमें ही नहीं पता होता कि हम अपनी कामना के विपरीत काम करते हैं। अहिंसा और विश्व शांति के सबसे बड़े उदाहरण थे 'श्री मोहनदास करम चंद गांधी,' जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन शांति और अहिंसक रूप से बिताया। उन्हें शांति और अहिंसा की मूर्ति माना जाता है। अहिंसा और विश्व शांति दोनों के बारे में हमें जान लेना चाहिए।

vfga**l**k% अहिंसा का अर्थ होता है शांति से काम लेना। अहिंसा प्रेम से संबंध रखती है जिसमें पाषाण काल से लेकर आज तक मानव में सामाजिकता का व्यवहार, सहयोग, बंधुता, सहानुभूति, सहनशीलता आदि का विकास हुआ है। सभ्यता का रथ रक्त के कीचड़ से शिकारी अवस्था में अहिंसक जीवन की ओर बढ़ रहा है। आज पुनः अति भौतिकवादी युग में यह चक्र उल्टा घूम गया लगता है। आधुनिक वैज्ञानिक विश्व में अणु

अस्त्रों के निर्माण से पुनः आज धरती रक्त–रंजित हो रही है। ऐसे समय में ऋषि–मुनियों ने पुनः इसे नियंत्रित करने एवं इसे एक नया मोड़ देने का सफल प्रयास किया है।

व्यसनमुक्ति को एक अभियान का रूप दिया गया है। विश्व को निर्व्यसनी बनाने का सुंदर प्रयास निरंतर किया जा रहा है। अहिंसा केवल हिंसा न करना ही नहीं प्रत्युत मित्र भावना, करुणा, समता, प्रेम और भाईचारे की भावना भी है। इसे आज जनसमुदाय को समझाया जा रहा है। शाकाहार, पर्यावरण–रक्षण, युद्ध, आतंकवाद आदि संदर्भों में अहिंसा को व्याख्यायित किया गया है।

विश्व शांति का अर्थ होता है हमारे जीवन में शांति और इस पूरे विश्व में शांति होना। हमारे देश में यदि शांति हो तो देश को विकासशील होने से कोई नहीं रोक सकता। हमारे देश में आतंकवादियों के होते हुए शांति हो ही नहीं सकती क्योंकि आतंकवादियों का लक्ष्य होता है अशांति फैलाना। यदि विश्व में किसी एक देश में भी अशांति फैली तो उसका पूरा प्रभाव विश्व में पड़ता है। पूरा विश्व अशांत और भयभीत हो उठता है। इस तरह से लोगों का जीवन जानवरों से भी बदतर हो जाता है।

हम कहते हैं कि हमें शांति चाहिए पर हम यह नहीं जानते कि जो आतंकवादी होते हैं वह भी हम आम इंसानों में से ही होते हैं जो पूरे विश्व को अशांत कर देते हैं। वैसे हर धर्म का एक ही लक्ष्य होता है कि वह लोगों में शांति की भावना लाए। पर कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ज्यादा से ज्यादा अमीर बनना चाहते हैं तो वह गलत रास्ता चुन लेते हैं और डाकू आतंकवादी, चोर आदि बन जाते हैं। इनके होते हुए हमारे देश या पूरे विश्व में शांति तो कभी नहीं आ सकती। हर धर्म में भगवान को प्रसन्न करने के तरीके बताए गए हैं। हम उन तरीकों को अपनाकर भगवान को प्रसन्न कर उनके आशीर्वाद से शांति चाहते हैं।

मानवीय सभ्यता का उच्चतम विकास बिंदु है विश्व शांति और अहिंसा। हिंसा और अशांति जीवन–यात्रा से जुड़े हुए हैं। क्योंकि दोनों ही शांति और प्रेम से वास्ता रखते हैं। समाज की आचार–सहिंता अहिंसा और

विश्व शांति के बिना पल्लवित हो ही नहीं सकती। अध्यात्म की आचार संहिता इनके बिना बन ही नहीं सकती। शांति का मतलब है मन की भावनाओं का ठहराव। हमारा देश मन है और उसमें रहने वाले लोग मन की भावना। शांति और अहिंसा दोनों ही हमारे जीवन के लक्ष्य होने चाहिए। यदि हमने यह दोनों चीज़ें अपने जीवन में प्राप्त कर लीं तो उन्नति के मार्ग पर जाने से हमें कोई नहीं रोक सकता।

विश्व शांति और अहिंसा के अनगिनत लाभ हैं। लोगों को भी समझना चाहिए की विश्व शांति और अहिंसा इस संसार के लिए और इस संसार में रहने वाले के लिए लोगों के कितनी आवश्यक हैं। बिना अहिंसा और शांति के यह संसार और उसमें रहने वाले लोग एक दानव की तरह हैं। तो इन बातों से यह पता चलता है कि विश्व शांति और अहिंसा लाभकारी है उनमें कोई अवगुण नहीं है।

dSlS gks fo'o 'kkafr dk çpkj% अहिंसा के बारे में सबसे ज़्यादा बच्चों को बताना चाहिए क्योंकि बच्चे ही हमारे देश का भविष्य माने जाते हैं। यदि बच्चों को विश्व शांति और अहिंसा के बारे पता होगा तो एक दिन हमारा देश शांतिप्रिय हो जाएगा। विश्व शांति और अहिंसा का प्रचार कुछ इस तरह करना चाहिए:

- विभिन्न धर्मों में विश्व शांति और अहिंसा की विवेचना, मूलतः उनके अभेद वर्णन से शिक्षार्थियों में विश्व शांति और अहिंसा की व्यापक अवधारणा का बोध कराना, जिससे उनमें विश्व शांति और अहिंसा परम धर्म की निष्ठा–भावना पैदा होगी।
- अहिंसा और विश्व शांति के विविध रूपों–मैत्री, करुणा, सहयोग, सहनशीलता, बंधुत्व आदि विधेयात्मक रूपों की व्याख्या कर अहिंसा और विश्व शांति को व्यापक स्वरुप से अवगत कराना ताकि उनके जीवन व्यवहारों में अहिंसक और शांति शैली का विकास हो सके।
- हिंसा और अशांति के विविध रूपों का भी अवबोध करा के जिससे हिंसा और अशांति तथा अहिंसा और विश्व शांति के विभिन्न व्यवहारों में अंतर कर सकें।

- वर्तमान हिंसाग्रस्त भौतिक जगत में अहिंसा और विश्व शांति की आवश्यकता निरूपित करना जिससे विश्वस्त होकर अहिंसक और शांति जीवन शैली का आधिकाधिक प्रसार हो सके। अहिंसक और शांत अभिवृत्ति का विकास हो सके।

- दैनिक जीवन में होने वाली हजारों पशु–पक्षियों का दारुण हिंसा के कारणों का विश्लेषण कर उनके निराकरण की रूचि जगाना, विकसित करना। प्राणीमात्र के साथ आत्मतुल्यता समता व व्यवहार का विकास करना।

- हम सब को घर–घर जाकर अहिंसा और विश्व शांति के बारे में बताना चाहिए। इसके लिए हमें कैंप, वर्कशॉप आदि खोलनी चाहिए जिसके माध्यम से ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को विश्व शांति और अहिंसा के बारे में पता चल सके।

यह सब करने से हमारा देश शांतिप्रिय और विकासशील देश हो जाएगा और लोगों को महात्मा गांधी की तरह अहिंसक और शांति से जिंदगी बिताने की प्रेरणा मिलेगी। ऐसा करने से हमें सुखी जीवन बिताने का अवसर मिलेगा और जिंदगी भर खुश रहेंगे। ✿

भारत सदैव से है शांतिप्रिय

भारत को सदैव विश्व में शांतिप्रिय देशों की गिनती में गिना गया है परंतु आज महंगाई, भ्रष्टाचार, लालच आदि समस्याओं ने भारत की शांति को भंग कर दिया है। हमारे भारत पर प्रश्न चिन्ह लग चुका है। ऐसी हालत में यदि कल के बारे में सोचा जाए तो डर लगता है कि कहीं हमारा भारत गांधी जी के आदर्शों को भुलाकर शांति के मार्ग से भटक न जाए।

◈ **e?kuk jkBkj** 9वीं ए
बी. एस. एफ. स्कूल, जालंधर
पंजाब

^|र्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्।' यह संस्कृत का श्लोक है, जिसका अर्थ है कि सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी का कल्याण हो और कोई भी दुःख का भागी न बने। शांति व अहिंसा संसार के दो ऐसे गुण हैं जिनसे संसार अथवा विश्व का कल्याण हो सकता है। व्यक्ति भले ही कितना भी पढ़ा–लिखा, समझदार, सर्वगुण संपन्न क्यों न हो, यदि उसमें अशांति और हिंसा का भाव झलकता है तो वह व्यक्ति कहीं नहीं टिक सकता।

आज हम सब गांधी जी को अपना प्रेरणास्त्रोत केवल इसलिए नहीं मानते कि उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना सहयोग दिया है, परंतु इसलिए मानते हैं क्योंकि वे सदैव सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चले हैं। यदि विश्व में शांति होती तो दो विश्व युद्ध कभी न होते। अशांति के कारण विश्व युद्ध हुए और विश्व युद्धों के कारण विनाश। सीधे शब्दों में अशांति सदैव विनाश का कारण बनती है। अतः स्पष्ट है कि शांति हमारे जीवन में एक अहम् भूमिका निभाती है।

जीवन में हर व्यक्ति अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है। कोई सफलता

प्राप्त करने के लिए हिंसा का मार्ग अपनाता है, तो कोई अहिंसा का। यह केवल मनुष्य का भ्रम है कि हिंसा का मार्ग अपनाकर सफलता प्राप्त की जा सकती है, परंतु ऐसा कुछ नहीं है। अंग्रेजी हुकूमत का लक्ष्य भारत को हड़पना था। ऐसा करने के लिए उन्होंने हिंसा का मार्ग अपनाया। भारतीयों पर असीम अत्याचार किए। उन्हें कुछ देर के लिए तो खुशी हुई परंतु वह सबके हृदय में अपने प्रति कड़वाहट छोड़ गए। आज अंग्रेजों का नाम सुनते ही हमें चिढ़ होने लगती है। ऐसे लोग केवल नाम से ही अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं परंतु इन्हें वास्तविक सफलता कभी नहीं मिलती।

गांधी जी ने सदैव हमें शांति और अहिंसा का पाठ पढ़ाया है। परंतु आज महात्मा गांधी तथा महात्मा बुद्ध के इस अहिंसक तथा शांतिप्रिय देश की अखंडता को भंग करने का प्रयास किया जा रहा है। जाति, धर्म, के आधार पर घृणा के बीच बोए जा रहे हैं। आज भी गोरे अंग्रेज कालों को नापसंद करते हैं। शांति का अर्थ केवल हिंसक न होना नहीं है बल्कि प्रेम, सद्भावना और भाईचारे की भावना होना भी है।

प्रभु ने तो सबको एक समान बनाया है। सभी लोगों में सफेद हड्डियाँ एवं लाल खून ही होता है फिर चाहे वह काला हो या गोरा इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। विश्व शांति की बात से पहले भारत की शांति की बात आती है। शांति वहीं हो सकती है जहां एकता हो। उदाहरण के लिये यदि अपने घर में हम सब में एकता का भाव नहीं है, सब एक दूसरे से ईर्ष्या रखते हैं तो उस घर में शांति का तो सवाल ही नहीं उठता। ठीक उसी प्रकार यदि हम भारतवासी एकाग्र नहीं हैं तो भारत में शांति कभी टिक ही नहीं सकती।

भारत को सदैव विश्व में शांतिप्रिय देशों की गिनती में गिना गया है परंतु आज महंगाई, भ्रष्टाचार, लालच आदि समस्याओं ने भारत की शांति को भंग कर दिया है। हमारे भारत पर प्रश्न चिन्ह् लग चुका है। ऐसी हालत में यदि कल के बारे में सोचा जाए तो डर लगता है कि कहीं हमारा भारत गांधी जी के आदर्शों को भुलाकर शांति के मार्ग से भटक न जाए।

आज आतंकवाद ने विश्व में हिंसा फैला रखी है। अफगानिस्तान द्वारा अमेरिका पर जो हमला हुआ था उसने विश्व की सबसे बड़ी ताकत, अमेरिका को हिला दिया। इस हमले के दौरान हज़ारों लोगों की जाने गईं और करोड़ों की संपत्ति का नुकसान हो गया था। कहा भी गया है 'वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।'

क्या यही मनुष्यता है? प्रभु ने हमें धरती पर भेजा केवल इसलिए कि हम एक–दूसरे को खून से नहलाएं। यह विश्व शांति का प्रतीक बिल्कुल नहीं है। जर्मनी, एक पश्चिमी देश में हिंसा का दूसरा नाम हिटलर था। उसने देश की स्थिति को सुधारने के लिए कड़क हिंसा अपनाई परंतु अंत वैसा ही हुआ जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता है। हिटलर कुछ न कर सका और उसका यह हिंसक स्वभाव देश की स्थिति में सुधार नहीं ला पाया।

जाहिर है, ऐसा हो भी नहीं सकता। यदि हिंसा के मार्ग पर चलकर देश को सुधारा जा सकता होता तो भारत की स्थिति को सुधारना भी कठिन नहीं था। परंतु ऐसा कुछ भी नहीं है। हम सभी को एकजुट होकर विश्व में शांति का संदेश पहुंचाना है अन्यथा मनुष्य और जानवर में कोई फर्क नहीं रहेगा। ✿

शांति नहीं तो जीवन नहीं

◈ ufer fç;k 9वीं बी
प्रेरणा बाल निकेतन
हायर सैकेंडरी स्कूल
राऊ, मध्यप्रदेश

आज सभी देशों को यह चाहिए कि वह शस्त्रों की चलती होड़ को रोके और इसके लिए आवश्यक है जितने भी शस्त्र बनाए जा रहे हैं, वे न बनें और जिन्हें बनाया जा चुका है उन्हें नष्ट कर दिया जाए एवं भविष्य में अब कभी भी शस्त्र न बनाए जाएं।

foश्व शांति आज के युग के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है। जब द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था तब उसकी हानियों को देखकर जानकारों ने कहा कि अगर अब इसके बाद तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो पूरी धरती नष्ट हो जाएगी तथा चौथा युद्ध पत्थरों से लड़ा जाएगा अर्थात् तब लड़ने के कोई साधन शेष नहीं रह जाएंगे।

इस हानि को देखकर सभी देशों ने विश्व शांति के प्रयास किए। सभी राष्ट्रों ने एक संघ की स्थापना करने के बारे में विचार किया जो युद्ध टालने का कार्य करेगा। उसका नाम संयुक्त राष्ट्र संघ रखा गया। फिर सभी देशों की एक बैठक हुई जिसमें एक प्रस्ताव पारित किया गया जिससे संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

विश्व में अनेक देशों ने शांति की ओर कदम बढ़ाए तथा चाहा कि युद्धों को होने से रोका जा सके एवं सभी शांति की जिंदगी व्यतीत करें। आजकल शांति के प्रयास किये गये हैं। विश्व शांति हमारी आवश्यकता है। इसे हमें पाना होगा। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हिंसा न

करें और सुखी रहें। विश्व शांति के लिए सभी देश प्रयत्नशील हैं तथा चाहते हैं कि कोई हिंसा का मार्ग न अपनाये तथा जीये और जीने दे।

fo'o 'kkfr ,oa vfgalk dh vko';drk% हमें और पूरे विश्व को विश्व शांति और अहिंसा की बहुत ही आवश्यकता है। अगर शांति और अहिंसा हमारी जिंदगी में न होगी तो कोई भी जीवन सही तरीके से व्यतीत नहीं कर पाएगा, सब आपस में मारपीट कर, लड़कर मर जाएंगे। विश्व शांति की वजह से ही आजकल लाखों जानें बचती हैं। क्योंकि आजकल इतने खतरनाक दिल दहला देने वाले हथियार हैं जो चाहे तो कुछ ही घटों में पूरी दुनिया को एक श्मशान में बदल दे।

विश्व शांति और अहिंसा की वजह से ही यह महाविनाश रुका हुआ है। आज पूरे विश्व में शांति फैलाने के प्रयास किए जा रहे हैं क्योंकि आज सभी देश आतंकवाद के शिकार हैं आतंकवाद हम सबकी शांति भंग करता है। आतंकवाद हिंसा एवं अशांति को उत्पन्न करना चाहता है। इसे रोकने के लिए हमें सुदृढ़ शांति व्यवस्था की आवश्यकता होगी। अगर सभी देशों में लोग शांति का अर्थ समझ लेंगे और हिंसा छोड़ देंगे तो कहीं मारपीट व दंगे नहीं होंगे। इस मारपीट से बचे रहने से जनहानि व मालहानि नहीं होगी। इस तरह हमें विश्व शांति और अहिंसा की आवश्यकता है।

fu%'kL=hdj.k% आज सभी देशों को यह चाहिए कि वह शस्त्रों की चलती होड़ को रोकें और इसके लिए आवश्यक है जितने भी शस्त्र बनाए जा रहे हैं, वे न बनें और जिन्हें बनाया जा चुका है उन्हें नष्ट कर दिया जाए एवं भविष्य में अब कभी भी शस्त्र न बनाए जाएं। केवल निःशस्त्रीकरण ही अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा अहिंसा को बनाए रख सकता है। शस्त्र न होने के कारण युद्ध नहीं होंगे एवं दंगे, मारपीट नहीं होगी। इसकी वजह से दो लाभ हैं। पहला लाभ तो यह कि जिस राष्ट्र में दंगे होते हैं व राष्ट्र बिना शस्त्र के दंगे नहीं करेगा तथा किसी को भी जनहानि–मालहानि नहीं होगी। दूसरा लाभ यह है कि जिन शस्त्रों को बनाने में धन लगता था उन सभी शस्त्रों के न बनने पर वह धन बच जाएगा तथा राष्ट्रों को विकसित करने के कार्य में सहयोग करेगा।

vijek.kq uhfr% आज विश्व के आधे देशों के पास परमाणु नीति का ज्ञान है पर इन देशों को चाहिए कि परमाणु का प्रयोग युद्ध में न करें क्योंकि इनके बहुत हानिकारक प्रभाव होते हैं। परमाणु बहुत खर्चीले होते हैं एवं हानिकारक भी होते हैं। दूसरा लाभ यह है कि परमाणु बहुत अधिक ऊर्जा उत्पन्न करता है। इस ऊर्जा से बिजली बनाई जा सकती है।

l;qDr jk"V‍ª la?k% यह एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है तथा शांति के लिए कार्य करती है। यह युद्ध टालने में सहायक है। इसकी स्थापना 1945 में एक घोषणा पत्र द्वारा हुई थी। संयुक्त राष्ट्र संघ के 198 सदस्य हैं तथा ये संयुक्त राष्ट्र संघ से जुड़े रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ मानव जाति के अधिकारों की रक्षा करता है तथा सभी को शांति व अहिंसा से रहने के लिए प्रेरित करता है। यह शांति स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण संस्था है। इसकी कई संस्थाएँ हैं जैसे विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि।

fo'o dk 'kkfr d çfr #[k% विश्व का शांति के प्रति रुख द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से बढ़ गया है। सभी देश चाहते हैं कि सब शांति व अहिंसा से रहें। सभी चाहते हैं कि शांति बनी रहे, इसलिए सभी ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की। यह संस्था कई बार युद्ध टालने में सफल हुई है। इसकी कोई सेना नहीं है। यह अपने सदस्यों से अपनी सेना देने के लिए अनुरोध करती है। यह कई आपदाओं से जान बचाती है। सारे विश्व में आतंकवाद के विरुद्ध अभियान चलाए जा रहे हैं ताकि विश्व में शांति और अहिंसा रहे।

fo'o 'kkfr d çHkko% विश्व शांति का शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ता है। शांति से अगर किसी छात्र को समझाया जाए तो वह समझ जाएगा। अगर शिक्षक किसी भी बच्चे को डाँट–डपट कर समझाए तो वह नहीं सुनता है तथा इसका प्रभाव शारीरिक होने के साथ–साथ मानसिक भी होता है। इसलिए सभी शिक्षकों को चाहिए की वे शांति से बच्चों को समझाएं तथा मारपीट न करें।

fo'o 'kkfr d ykHk% विश्व शांति व अहिंसा होने से हमें अनेक लाभ हैं जैसे विश्व में शांति और अहिंसा होने से सभी लोग मिल–जुलकर

कार्य करेंगे तथा तरक्की करेंगे। विश्व में शांति होने से जाति का भेदभाव दूर हो जाएगा तथा जहां शेर पानी पिएगा वहीं बकरी भी पानी पिएगी। विश्व शांति का एक और लाभ है विश्व शांति होने से हर जगह युद्ध नहीं होंगे तथा हथियार नहीं बनेंगे। हथियार न बनने की वजह से उनमें लगने वाला पैसा अच्छे कामों में लगाया जाएगा। विश्व में शांति होने से सभी एकजुट रहेंगे न ही साम्प्रदायिकतावाद होगा। इनसे न ही दंगे होंगे, नहीं लोग मरेंगे।

Hkkjr e 'kkfr o vfgalk भारत एक महान् देश है। भारत ने पहले से ही शांति और अहिंसा का पाठ पढ़ा है। आज तक भारत ने कभी भी पहले किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है। भारत का इतिहास गवाह है। यहाँ अनेक महापुरुष हुए हैं। सभी ने शांति व अहिंसा का संदेश दिया है। आज भी भारत में हर घर में आरती के समय 'सर्वत्र शांति, शांति' सुनाई देता है। आज भी हर व्यक्ति भगवान से प्रार्थना के समय सारे विश्व–परिवार की शांति मांगता है। इस से सिद्ध होता है कि भारत शांति का पुजारी है। भारत का हर नागरिक विश्व–परिवार की शांति चाहता है। ✿

निःशस्त्रीकरण के बिना विश्व शांति नहीं

◈ HkDrh vfuy frokjh 9वीं बी
स्वामी विवेकानंद विद्यामंदिर, विष्णुनगर
राणाप्रताप भवन, डोंबिवली, ठाणे,
महाराष्ट्र

'अस्थि सत्यं परंपरेण,
नत्थि असत्यं परंपरेण'
शस्त्रों में परंपरा चलती है,
अशस्त्र-अहिंसा में परंपरा नहीं है।
जिस राष्ट्र की नीति में दूसरे
राष्ट्रों को दबाने के लिए शस्त्रों
का विकास किया जा रहा है वह
राष्ट्र विश्व शांति के लिए सबसे
अधिक बाधक हैं। इसलिए
निःशस्त्रीकरण की दिशा में
विशेष प्रयत्न करना आवश्यक है।

foश्व के इतिहास को यदि युद्धों का रंगमंच कहा जाए तो अनुचित न होगा। मनुष्य में दो प्रकार की प्रवृत्तियां होती हैं, किसी कवि ने ठीक ही कहा है: *''क्योंकि युधिष्ठिर एक, सुयोधन अगणित यहां हैं, बढ़े शांति की लता, हाय वे पोषक तत्व कहाँ हैं?''*

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति हुई पर जर्मनी तथा उसके सहायकों की अप्रत्याशित पराजय हुई और ब्रिटिश, फ्रांस, अमेरिका आदि देशों की सामूहिक विजय हुई। दोनों पक्षों में सुलह–संधि हो गई और राष्ट्रपति विल्सन की चौदह सूत्री योजना के अनुसार 'लीग ऑफ नेशन्स' का निर्माण हो गया। लगभग सत्रह वर्षों का समय बीता होगा कि पुनः जर्मनी, जापान, इटली की शक्ति ने विश्व के राजनीतिक वातावरण में हलचल मचाना शुरू कर दिया। 1936 में इटली ने अबीसीनिया पर तथा जर्मनी ने अपने पश्चिमी पार्श्व के देशों पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। फलतः द्वितीय विश्व युद्ध का बिगुल बज गया।

लगभग नौ वर्षों तक भयंकर संहार के नाटक खेले जाते रहे। एटमबम का प्रयोग अमेरिका ने जापान के औद्योगिक क्षेत्र नागासाकी और हिरोशिमा

पर किया। लड़ाकू विमान, व्यापक विनाशकारी क्षमता वाले बम तैयार हो गए। विश्व का विनाश साकार रूप से प्रकट होने लगा और विश्व शाांति की समस्या सामने आयी। भयंकर एटम, हाईड्रोजन और न्युक्लीयर आदि बमों और क्षेपणास्त्रों से विनाश ही विनाश हुआ। पूरा संसार युद्ध की ज्वालामुखी पर था। फिर एक बार विश्व शांति की समस्या सुलझाने के लिए यू. एन. ओ. (संयुक्त राष्ट्रसंघ) की स्थापना हुई।

तब से आज तक विषाक्त वातावरण में दुनिया के सभी राष्ट्र किसी न किसी आशंका से भयभीत हैं। सभी के हृदय में आतंक समा गया है। ऐसी दशा में विश्व शांति की योजना में ही वह शक्ति है जो दुनिया का कल्याण कर सकती है। महाभारत का युद्ध प्राचीन युद्धों में विशालतम माना जाता है। उसमें कर्ण, दुर्योधन के पक्ष में था। वह महान् दानी और धर्मपरायण तथा ज्ञानी था।

कृभण ने एक बार कर्ण से पूछा, ''तुम वीर दानी हो और जानते हो कि दुर्योधन अन्याय कर रहा है फिर भी तुम क्यों उसका साथ देते हो ?'' कर्ण ने उत्तर दिया, ''जानामि धर्म न च में प्रवृत्तिः जानाभ्य धर्म न च में निवृत्तिः। कस्मै दैवा दृदि सन्ति रूद्धों तथा नियुक्तिः ओभि तथा करोमि।'' अर्थात् ''मैं भी धर्म जानता हूँ पर उसमें मेरी पूरी वृत्ति नहीं है और अधर्म को जानता हूँ पर उससे छुटकारा नहीं है। अरे कोई देव मेरे हृदय में बैठकर जहां नियुक्त करता है वही करता हूँ।''

युद्धों में लाखों लोग मारे जाते हैं। उनके परिवार वाले तबाह हो जाते हैं। भरण–पोषण के साधन नष्ट हो जाते हैं। कई विकलांग होते हैं। बीमारियाँ फेलती हैं। वायुमंडल दूषित हो जाता है। महँगाई बढ़ जाती है। सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध में लोखों लाशें, विकलांगों को देखकर विश्व शांति का संदेश दिया। हर युद्ध के बाद मानव शांति चाहता है। विश्व शांति निःशस्त्रीकरण के बिना संभव नहीं है। भयंकर संहार से विश्व को बचाना है तो अहिंसा ही आधार है। विश्व के राष्ट्र नायकों की यह प्रवृत्ति बन गई है कि वे शांतिदूत बनने का ढोंग तो रचते हैं पर अविश्वास के कारण निःशस्त्रीकरण के उपाय प्रयोग में नहीं लाते।

वर्तमान विश्व चेतना की गतिशील साधना ने विश्व को बहुत छोटा कर दिया है। आज आयात–निर्यात के साधन इतने विकसित हो गये कि एक भूखंड की समस्या सम्पूर्ण विश्वगत हो जाती है। संक्रमणशीलता की स्थिति में कोई भी व्यक्ति, वर्ग या भूखंड अप्रभावित नहीं रह सकता। एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण एक राष्ट्र की भूमि और संपत्ति पर अधिकार करने की मनोवृत्ति, आंतरिक व्यवस्थाओं में हस्तक्षेप, एक शासन पद्धति का दूसरी शासन पद्धति का आरोपण करने का प्रयत्न, अपनी विचारधारा दूसरों पर थोपने का प्रयास आदि ऐसी अनेक स्थितियां हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को उभारती हैं।

आक्रमक मनोवृत्ति और उपनिवेशवाद आज की समस्या है। भूमि, संपत्ति आदि का अपहरण, अधिकार हनन से भय, संदेह, प्रतिशोध, आशंका, सुरक्षा आदि कई कारण हैं जो मनुष्य की हिंसा को प्रेरणा देते हैं। शस्त्रनिर्माण और शस्त्रविकास अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का मुख्य कारण है। 'अस्थि सत्यं परंपरेण, नत्थि असत्यं परंपरेण' शस्त्रों में परंपरा चलती है, अशस्त्र–अहिंसा में परंपरा नहीं है। जिस राष्ट्र की नीति में दूसरे राष्ट्रों को दबाने के लिए शस्त्रों का विकास किया जा रहा है वह राष्ट्र विश्व शांति के लिए सबसे अधिक बाधक है। इसलिए निःशस्त्रीकरण की दिशा में विशेष प्रयत्न करना आवश्यक है।

विश्व एकता और विश्व सहकार के लिए शस्त्रों की दौड़ को रोकना ही होगा। अहिंसा ही हिंसाशक्ति को रोक सकती है। समन्वय की नीति और सद्भावनापूर्ण वातावरण ही अहिंसा और विश्व शांति ला सकता है। एक से सबका और सबसे एक का हित वहीं हो सकता है जहां अहिंसा है। अहिंसा शत्रु को मित्र बना सकती है। अहिंसा हिंसा पर अंकुश है। अहिंसा से विश्वमैत्री और विश्वबंधुत्व बढ़ सकता है।

जैन धर्म के तेरापंथ के आचार्य गणाधिपति तुलसी कहते थे,

''धार अहिंसा अणुव्रत जागृत कर ल्यो विमल विवेक।
मानव जन्म सुधारो 'तुलसी' सौ बातांरी एक।।''

अर्थात् अहिंसा और अणुव्रत से सारी समस्याएँ दूर होंगी। मानवीय एकता, समता, स्वतंत्रता, निस्संगत और सहअस्तित्व की अनुभूति में अहिंसा प्रसूत होती है। अहिंसा वह सुरक्षा कवच है जो घृणा, वैमनस्य, विद्वेष, प्रतिशोध, आसक्ति आदि घातक अस्त्रों के प्रहार को निरस्त्र कर देता है। यदि व्यक्ति क्लेश, संकट और विषमता के जगत से छुटकारा पाना है तो उसे अहिंसा के राजपथ पर आना होगा। अणुव्रत और अहिंसा ही अणुबम को एकमात्र चुनौती है। अहिंसा अभय है। ✿

युद्ध से नष्ट हो जाएगी मानवता

◈ **v{k;** 10वीं सी
रेनबो इंग्लिश सी. सै. स्कूल
जनकपुरी, दिल्ली

आज का युद्ध सम्पूर्ण मानव-सभ्यता और समाज का विनाश कर देगा। इसलिए विश्व में सभी राष्ट्र एक स्वर से शांति की याचना कर रहे हैं। वे देख चुके हैं पिछले दोनों विश्वयुद्धों में धन, जन और शक्ति की कितनी अधिक क्षति हुई थी। आज का युद्ध और विज्ञान मानव के साधन न बनकर विनाश के साधन बने हुए हैं।

fiछले दो महायुद्धों में भयानक नरसंहार को देखकर आज विश्व का मानव युद्ध की विभीषिकाओं से संत्रस्त होकर अपनी रक्षा के लिए शरण ढूंढ रहा है। बड़े–बड़े राष्ट्रों के कर्णधार युद्ध न करने के लिए योजनाएं बना रहे हैं और उन्हें कार्यान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं परंतु बीच–बीच में कुछ ऐसी चिंगारियां फूट निकलती हैं जिनसे युद्ध की सम्भावना फिर से वृद्धि पा जाती है और युद्ध–विराम योजनाएं असफल दुष्टिगोचर होने लगती हैं।

आज विश्व उसी स्थिति में है जिस स्थिति में महाराजा अशोक कलिंग विजय के उपरांत थे। अशोक ने मगध साम्राज्य की पूर्णता के लिए कलिंग पर आक्रमण कर विजय तो प्राप्त कर ली, परंतु युद्ध में भीषण नरसंहार, वीरान घर, सधवा स्त्रियों की माँग का पोछा हुआ सिंदूर और अनाथ बालकों को देखकर अशोक का हृदय चीत्कार उठा, उसके ऊपर खिन्नता छा गई। उस दिन से अशोक हिंसा के स्थान पर अहिंसा का उपासक बन गया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह शस्त्र धारण नहीं करेगा, संसार को हिंसा के बजाय प्रेम, करुणा और अहिंसा से जीतेगा।

इस घटना के पश्चात् अशोक ने जो विजय प्राप्त की वह आज भी भारतीय

इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। हिटलर और नेपोलियन जैसे वीर भी इतनी महान् विजय प्राप्त न करे सके, जितनी अशोक ने की। चीन, जापान, जावा, बाली, स्याम और सिंहल आदि देशों में आज भी बौद्ध धर्म छाया हुआ है। यह अशोक के प्रेम अभियान का ही परिणाम है।

भगवान बुद्ध का सबसे बड़ा धर्म अहिंसा ही था। प्रेम और करुणा ही उनके सबसे बड़े मंत्र थे। मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को कोई कष्ट न देना ही अहिंसा का मूल रूप है। अशोक ने प्राणीमात्र को सुख पहुंचाने के लिए हर सम्भव उपाय किया। अहिंसा और शांति का संदेश दूर–दूर देशों में प्रसारित करने के लिए उसने सुशील और सच्चरित्र विद्वानों को भेजा। अपने राजकुमार महेन्द्र और राजकुमारी संघमित्रा को भिक्षु और भिक्षुणी बनाकर सिंहल द्वीप बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भेजा था। आधुनिक युग में महात्मा गांधी ने भगवान् बुद्ध के सत्य, प्रेम और अहिंसा का प्रचार किया, जिससे सम्पूर्ण विश्व में शांति और सद्भावना स्थापित हो सके।

एक समय था जब युद्ध के बहुत लाभ माने जाते थे। प्रथम तो यह कि युद्ध में मारे जाने पर सीधा स्वर्ग प्राप्त होता है जैसा कि इस श्लोकांश में कहा गया है 'हत्रो वा प्राप्यसि स्वर्गं, जित्वा वा मोक्ष्यसे, महीम्।' अर्थात् (कष्टात्) 'जायते (रक्ष्यते) इति क्षत्रियों' इस परिभाषा के अनुसार अपने वास्तविक अर्थों में क्षत्रिय युद्ध करके प्राण की आततायियों से रक्षा करता था। इसलिए इसे क्षात्र धर्म कहा जाता था। भारतीय क्षात्र–धर्म रक्षा प्रधान होता था, परंतु विदेश विचारक आक्रमण प्रधान क्षात्र–धर्म को अधिक श्रेष्ठ मानते थे।

हीगल और नित्शे जैसे विद्वानों ने युद्ध को विकासवाद का जन्म माना है। इनका विचार है कि युद्ध के बिना अच्छे और बुरे, मूर्ख और विद्वान, असमर्थ और समर्थ सभी प्रकार के प्राणी सुख से जीवित रहते हैं, किसी को उन्नति करने की प्रेरणा नहीं मिलती, परंतु युद्ध प्रारंभ होने पर असमर्थ और अनुपयुक्त प्राणी समाप्त हो जाते हैं तथा श्रेष्ठ प्राणियों की सन्तानें अपने वंश की वृद्धि करती हैं तथा युद्ध में अन्याय समाप्त हो जाता है। यह बात किसी काल में सत्य रही हो ऐसा हो सकता है, परंतु आज के युद्ध में सशक्त और

बलिष्ठ नवयुवक ही युद्ध की अग्नि में स्वाहा होते हैं। असक्त, असमर्थ और अनुपयुक्त तो घर में बैठे रह जाते हैं।

आज का युद्ध सम्पूर्ण मानव–सभ्यता और समाज का विनाश कर देगा। इसलिए विश्व में सभी राष्ट्र एक स्वर से शांति की याचना कर रहे हैं। वे देख चुके हैं पिछले दोनों विश्वयुद्धों में धन, जन और शक्ति की कितनी अधिक क्षति हुई थी। आज का युद्ध और विज्ञान मानव के साधन न बनकर विनाश के साधन बने हुए हैं। पिछले दो विश्व युद्ध तक तो केवल अणु बमों का ही आविष्कार हुआ था परंतु अब तो रूसी और अमेरिकी वैज्ञानिकों ने उससे भी कई गुना अधिक विध्वंसकारी हाइड्रोजन बम का निर्माण कर लिया है।

अब यह स्थिति है कि यदि युद्ध का सभी राष्ट्रों ने एकदम बहिष्कार नहीं किया तो परिणाम इतना भयंकर होगा की विजित के साथ–साथ विजेता भी सर्वनाश की आँधी में उड़ जाएगा। इसलिए विश्व के सभी राष्ट्र किसी न किसी रूप में युद्ध विराम की योजनाएं बना रहे हैं।

धरातल से युद्ध की विभीषिका को सदा–सदा के लिए समाप्त करने के लिए गांधी जी ने विश्व को अहिंसा रूपी अस्त्र प्रदान किया। गांधी जी का कहना था कि 'प्रेम और अहिंसा द्वारा विश्व के कठोर से कठोर हृदय को भी कोमल बनाया जा सकता है।' उन्होंने इन सिद्धान्तों का परीक्षण भी किया और ये नितांत सफल हुए। विश्व बन्धुत्व और अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना में वृद्धि किए बिना शांति स्थापित नहीं हो सकती। ✿

क्या ईश्वर का दिया गया इतना अनुपम उपहार हमारी पृथ्वी आतंकवाद और हिंसा की भेंट चढ़ जायेगी? नहीं, बिल्कुल नहीं। यह तो ईश्वर का बड़ा अपमान होगा। मानव, जिसे सबसे बुद्धिमान प्राणी कहा गया है, वह ऐसा नहीं करेगा। हमारे संसार के सभी देशों के महानायकों से आशा की जाती है कि वे अपने मानव धर्म का पालन करेंगे।

हिंसा करने वालों को मिले कठोर सजा

◈ **vfer dekj lukfM;k** 10वीं ए
महर्षि विद्या मंदिर, सिवनी
मध्यप्रदेश

Hkगवान महावीर ने कहा था–अहिंसा परमो धर्मः। भगवान महावीर ने जीवन की अमूल्यता का मूल्यांकन करके उक्त महासूक्ति का सृजन किया था। उनके अनुसार किसी जीव की हत्या करना तो हिंसा है ही परंतु किसी को मानसिक कष्ट पहुंचाना, किसी का हृदय दुखाना भी हिंसा है। हमारे बापू महात्मा गांधी ने अपने जीवन में अहिंसा का पालन किया और अपने जीवन को सार्थक बनाया।

अहिंसा के भाव में असीम शक्ति निहित है। वास्तव में यदि पूरे संसार में ऐसा वातावरण बन जाये तो चारों ओर शांति ही शांति बन जायेगी। सब लोगों के भाव स्वस्थ रहेंगे। भारी भरकम चिकित्सा के व्यय में कमी आ जायेगी और सबसे बड़ी बात असुरक्षा का भाव खत्म हो जायेगा और हथियारों का भण्डार बनाने में जो धन बह रहा है वह बच जायेगा यह धन हमारा भविष्य उज्ज्वल बना सकेगा।

fgalk D;ksa जब हमारे चारों ओर स्वार्थ, भ्रष्टाचार और व्यभिचार का भाव बन जाता है तो ऐसे वातावरण में व्यक्ति की मानसिक स्थिति विकृत हो जाती है और वह हिंसा करने लगता है। विश्व में हिंसा का स्वरूप

विभिन्न प्रकार का है। कहीं जातिवाद, कहीं सम्प्रदायवाद, कहीं उग्रवाद तो कहीं आतंकवाद।

fo'o dh fLFkfr% विश्व आज हिंसा के दौर से गुजर रहा है। विश्व के अनेक देश घुट–घुट कर सांसें ले रहे हैं। अमेरिका जैसी महाशक्ति पर आतंकवाद का हमला हो चुका है। वहाँ आज भी भय के बादल मंडरा रहे हैं। सन् 2002 में विनाशकारी आतंकवादी ओसामा बिन लादेन ने विश्व विख्यात अमेरिका के ''वर्ल्ड ट्रेड सेंटर'' पर वायुयान से भेदकर उसे गिरवा दिया।

इस घटना में वायुयान में बैठे बेगुनाह तो हिंसा के शिकार हुये ही साथ ही, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर ध्वस्त हो गया और वहां काम कर रहे कई बेगुनाह लोग काल कवलित हो गये। कितना बड़ा जनसंहार हो गया और आर्थिक–सामाजिक क्षति का आंकड़ा तो बेहिसाब है।

भारत के औद्योगिक नगर मुंबई के ताज होटल की घटना हमें याद है। 26 नवम्बर, 2009 को पाकिस्तान से आये आतंकवादियों ने 100 से भी ज्यादा बेगुनाहों के खून से होली खेली थी। अफगानिस्तान में तालिबानों का तांडव हो रहा है। वे विध्वंसक गतिविधियों में लगे हुये हैं। उन्हें दिशा देने वाले लोग कितने हिंसक माहौल में पले होंगे। जिस जीवन में भय हो, अशांति हो वह जीवन क्या अच्छा हो सकता है ?

हमारा पड़ोसी देश जो कभी हमारी ही थाली में खाता था, हमसे ईर्ष्या रखता है। वह आतंकवाद का केन्द्र बन गया है। उसकी धरती पर आतंकवाद का प्रशिक्षण चलता है। उच्च पद पर बैठे लोग भी उन्हें समर्थन देते हैं। पद से हटने के बाद ये विदेशों में बस जाते हैं। हमारे देश का ताजमहल देखने आते हैं, शांति समझौता करने दिल्ली आते हैं और पीठ पीछे कारगिल में हमारी ही पीठ में खंजर भोंकते हैं।

वे ओसामा बिन लादेन को संरक्षण देते हैं। उनकी नाक के नीचे ओसामा बिन लादेन सुरक्षित क्षेत्र में छुपा बैठा रहता है। ये हमारे देश में मुंबई में घुसकर होटल ताज में बेकसूर लोगों कत्लेआम करते हैं। वे अशांति फैलाकर, हिंसा करके हमारे देश को कमजोर कर देना चाहते हैं, परंतु हमारा देश कायर नहीं है, हम डरपोक नहीं हैं। हम डरने वाले नहीं हैं।

fgalk vkj v'kkfr vkf[kj D;k% आखिर वे कौन से कारण हैं जिनके कारण हिंसा और अशांति होती है? नीचे दिये गए हैं कुछ कारणः

- **c<rh gbZ tula[;k%** आज भी ऐसे कुछ धर्म हैं, जो परिवार नियोजन को धर्म के विरुद्ध मानते हैं। वे निरंतर अपना परिवार बढ़ाने में लगे हुये हैं। ऐसे परिवार के बच्चे बड़े होकर धन की लालसा में आतंकवादियों के चंगुल में फंसकर अशांतिपूर्ण विध्वंसक गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं।

- **/kkfeZd mUekn dh Hkkouk%** विश्व में सभी धर्मों में कहा गया है कि सभी को जीने का अधिकार है और किसी का बुरा मत करो परंतु कुछ कट्टरपंथी लोग अपने धर्म की शिक्षाओं को अपने तरीके से परिभाषित कर रहे हैं। दूसरे धर्मों के लोगों को ये काफिर कहते हैं और उनके विरूद्ध 'जेहाद' करते हैं। खुद धार्मिक गुरु बन गये हैं।

- **b";k&tyu dh Hkkouk%** ईर्ष्या ऐसा जहर है जो अपनों को भी मौत की नींद सुला देता है। जब कोई देश प्रगति कर रहा होता है तो वह दूसरों की आंख की किरकिरी बन जाता है। ईर्ष्यालु लोग प्रगति करने वालों के रास्तों में कांटे–बिछाने शुरू कर देते हैं।

- **vukf/kdkj viuk gd trkuk%** पाकिस्तान हमारे कश्मीर को हड़पना चाहता है जबकि आज जिस कश्मीर की भूमि उसके पास है, वह हमने उसे दान में दी है, नहीं तो हमारी सेना ने युद्ध के दौरान तो उसे जीत ही लिया था।

- **jktuhfrKksa }kjk vkradokfn;ksa dk çJ;%** जब–जब भी किसी बड़े राजनीतिज्ञ ने आतंक फैलाने वालों को अपना स्वार्थ सिद्ध करने उन्हें प्रश्रय दिया है, उनका मनोबल बढ़ा है और उन्होंने कई विध्वंसक घटनाओं को अंजाम दिया है। परंतु अंत में ''ये'' उनके लिये भस्मासुर ही साबित हुये हैं।

lek/kku% क्या ईश्वर का दिया गया इतना अनुपम उपहार हमारी पृथ्वी आतंकवाद और हिंसा की भेंट चढ़ जायेगी? नहीं, बिल्कुल नहीं। यह तो

ईश्वर का बड़ा अपमान होगा। मानव, जिसे सबसे बुद्धिमान प्राणी कहा गया है, वह ऐसा नहीं करेगा। हमारे संसार के सभी देशों के महानायकों से आशा की जाती है कि वे अपने मानव धर्म का पालन करेंगे। वे शांति बनाने हेतु ठोस पहल करेंगे, जैसेः–

- **vfglk dh f'k{kk ykx djuh gkxh%** भगवान महावीर की शिक्षाओं को हर देश को अपनाना होगा। अहिंसा का मार्ग ही ऐसा एक मात्र मार्ग है जिस पर चलकर ही विश्व शांति बनाई जा सकती है।
- **Hk"Vkpkj dk NkMuk gkxk%** देश के, विश्व के बड़े राजनीतिज्ञों को स्वार्थ त्यागना होगा। उन्हें भ्रष्टाचार से मुक्त होना ही होगा तभी वे देश में अनुशासन बना सकते हैं।
- **tul[;k fu;=.k%** संसार के सभी देशों को अपने–अपने देश में जनसंख्या को नियंत्रित करने के उपाय करने होंगे।
- **fglk dju okyk d fy; dBkj ltk dk çko/kku%** हिंसा करने वालों के लिये फांसी की सजा आवश्यक करनी होगी।
- **;ok 'kfDr d fy; i;kIr jktxkj%** देश का युवा जब उचित रोजगार में लग जाता है तो वह भटकता नहीं और उसके घर में शांति रहती है।
- **vPN ekrk&firk cu%** जो भी नये माता–पिता बन रहे हैं, उन्हें खुद अच्छा बनना होगा ताकि वे उनकी संतान की परवरिश ऐसे अच्छे वातावरण में कर सकें जिससे उनके घर एक योग्य नागरिक तैयार हो सके।

अतः विश्व में आज शांति की परम आवश्यकता है और अहिंसा ही वह माध्यम है जिसके बल पर हम विश्व में शांति बना सकते हैं। ✿

जब इस तरह का वातावरण चारों ओर व्याप्त हो तो एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि आखिर इस सब का निराकण क्या और कैसे हो सकता है? कैसे समाज, व्यक्ति, जाति, धर्म और राष्ट्र को अशांति-अराजकता फैलाने वाले तत्वों से बचाया जा सकता है? इन सभी सवालों का एक ही उत्तर, सभी समस्याओं का मात्र एक ही हल है; वह है अहिंसा।

प्रश्न अनेक पर हल एक

◈ **ijekRek flg** 10वीं
प्रस्टेज कान्वेंट स्कूल
रोहिणी, दिल्ली

Hkारतीय सभ्यता में मनीषियों ने 'अहिंसा परमो धर्मः' कहकर अहिंसा का महत्व समझाने और प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न किया है। अहिंसा और अहिंसक होने का मनुष्य का सर्वोच्च धर्म मान कर ही ऐसा किया गया है। सृष्टि के आरंभ से ही मनुष्य धरती पर युद्ध और अशांति का वातावरण बनाता आया है। युद्ध भी होते रहे लेकिन तब यह सब कुछ सीमित लोगों में, एक सीमित क्षेत्र में ही हुआ करता था। अतः अन्य क्षेत्रों और वहाँ के भी आम लोगों पर उस सब का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता था। युद्ध के बाद धीरे–धीरे स्थितियां अपने आप ही सामान्य हो जाया करती थीं, अथवा थोड़े–बहुत संघर्ष के बाद उनका अंत हो जाया करता था। पर मानव–सभ्यता के वैज्ञानिक, यांत्रिक और औद्योगिक विकास के आज के युग में स्थितियाँ पहले जैसी नहीं रहीं।

अब केवल अनेक प्रकार के हिंसक शस्त्रों का वैज्ञानिक निर्माण करके उनकी ऐसी प्रयोग–विधियाँ ही विकसित कर ली गई हैं कि जो घर बैठे–बिठाए समस्त विश्व को विनाशक अथवा संघारक गतिविधियों से प्रभावित कर सकती हैं, बल्कि हिंसा मानव स्वभाव का एक अंग बन गई

है। आज सेवा, व्यवसाय, कार्य–व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में मनुष्य की हिंसक वृत्ति हावी होती जा रही है। स्वयं को सुसभ्य, सुशिक्षित एवं सुसंकृत समझने वाला मानव स्वभाव का एक अंग बन गया है। आज सेवा करने वाला मानव अपनी स्वार्थ–पूर्ति के लिए किसी भी सीमा तक गिर सकता है। तभी तो चारों तरफ राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आपाधापी, लूट–खसौट, घोटालों, भ्रष्टाचार और अराजकता का वातावरण व्याप्त होकर जीवन को अशांत बनाए हुए हैं।

जब इस तरह का वातावरण चारों ओर व्याप्त हो तो एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि आखिर इस सबका निराकण क्या और कैसे हो सकता है? कैसे समाज, व्यक्ति, जाति, धर्म और राष्ट्र को अशांति–अराजकता फैलाने वाले तत्वों से बचाया जा सकता है? इन सभी सवालों का एक ही उत्तर, सभी समस्याओं का मात्र एक ही हल है; वह है अहिंसा।

अहिंसा का धर्म केवल ऋषियों और संतों के लिए नहीं है। यह सामान्य लोगों के लिए भी है। अहिंसा उसी प्रकार से मानवों का नियम है जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। पशु की आत्मा सुप्तावस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति के नियम को ही जानता है। मानव की गरिमा एक उच्चतर नियम आत्मा के बल के पालन की अपेक्षा करती है। जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा की खोज की वे न्यूटन से भी अधिक प्रतिभाशाली थे। वे स्वयं वेलिंग्टन से भी बड़े योद्धा थे। शस्त्रों के प्रयोग का ज्ञान होने पर भी उन्होंने उसकी व्यर्थता को पहचाना और श्रांत संसार को बताया कि उसकी मुक्ति हिंसा में नहीं अपितु अहिंसा में है।

अहिंसा का सर्वप्रथम उद्घोष भगवान बुद्ध ने अपने उपदेशों में किया था। भगवान बुद्ध के उपदेशों का असर यह हुआ कि उस समय यज्ञों के दौरान जो पशु हिंसा होती थी, वह समाप्त हो गई। भारतीय चिंतन में हमें अहिंसा का समीचीन अर्थ जानना होगा। महाभारत युद्ध के आरंभ में भगवान श्रीकृभण अर्जुन को युद्ध हेतु प्रेरित करने के लिए उपदेश देते हैं। भगवान श्रीकृभण की दृष्टि में अहिंसा का अर्थ है। 'जिस पुरुष के अन्तःकरण में 'मैं कर्ता हूँ, ऐसा भाव नहीं है तथा जिसकी बुद्धि सांसारिक

पदार्थ और कर्म में लिप्त नहीं होती है, वह पुरुष सब लोगों को मारकर भी वास्तव में न तो मारता है और न ही पाप से बंधता है।'

मानसकार कहते हैं कि आततायियों को दंड देने के लिए जिनके हाथ में धनुष और बाण हैं, ऐसे प्रभु श्रीराम की वंदना करता हूँ। भगवान यज्ञ की रक्षा करने के लिए ताड़का को मारना भी उचित समझते हैं। भक्तों की रक्षा के लिए लाखों राक्षसों के संहार को भी उचित मानते हैं। यह है अहिंसा का यथार्थ स्वरूप। इसलिए मानसकार ने लिखा है *''परम धरम श्रुति विदित अहिंसा। पर निंदा सम अध न गरीसा।।''* वेदों में अहिंसा को परम धर्म माना गया है और यह पर निंदा के समान भारी पाप नहीं है।

विश्व शांति सभी देशों और या लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति और खुशी का एक आदर्श है। विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है, जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की एक प्रणाली के जरिये इच्छा से सहयोग करते हैं, ताकि युद्ध को रोका जा सके। हालांकि कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग विश्व शांति के लिए सभी व्यक्तियों के बीच सभी तरह की दुश्मनी के खात्में के संदर्भ में किया जाता है।

यह विश्वास इस विचार से उपजा है कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से हिंसक है या कुछ परिस्थितयों में तर्कसंगत कारक हिंसक कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे तथापि दूसरों का मानना है कि युद्ध मानव प्रकृति का एक सहज हिस्सा नहीं है, और यह मिथक वास्तव में लोगों को विश्व शांति के लिए प्रेरित होने से रोकता है।

विश्व शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके लिए कई सिद्धांतों का प्रस्ताव किया गया है। इनमें से कुछ नीचे सूचीबद्ध है। विश्व शांति हासिल की जा सकती है, जब संसाधनों को लेकर संघर्ष नहीं हो। उदाहरण के लिए, तेल एक ऐसा ही संसाधन है और तेल की आपूर्ति को लेकर संघर्ष जाना–पहचाना है। इसलिए, पुनः प्रयोज्य ईंधन स्त्रोत का उपयोग करने वाली प्रौद्योगिकी विकसित करना विश्व शांति हासिल करने का एक तरीका हो सकता है।

विश्व शांति को स्थानीय एवं निर्धारित व्यवहार के एक परिणाम के रूप में दर्शाया गया है, जो शक्ति के संस्थानीकरण को रोकता है और हिंसा को बढ़ावा देता है। अभिसरण के उत्प्रेरण के लिए प्रमुख तकनीक विचारों का प्रयोग है, जिसे बैककास्टिंग कहते हैं और इससे कोई भागीदारी में सक्षम हो सकता है, भले ही वह किसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धार्मिक सिद्धांत, राजनीतिक संबद्धता या जनसांख्यिकीय उम्र का हो। समान सहयोगी तंत्र विकिपीडिया सहित खुली स्त्रोत वाली परियोजनाओं के आसपास इंटरनेट के जरिये उभर रहे हैं और सामाजिक मीडिया का विकास हो रहा है। ✿

जैन धर्म में अहिंसा को ''अहिंसा परमो धर्मः'' माना गया है। जैन धर्म के पाँच महाव्रतों-अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और अचौर्य में अहिंसा सर्वोपरि है। हिंसा न केवल इस जन्म में ही नहीं अपितु आने वाले जन्म-जन्मांतरों में दुःख और कर्म बंधनों का कारण बनती है।

मानवतावादी भावना का ह्रास

◈ 'kHke feJk 9वीं ए
आदित्य बिरला पब्लिक स्कूल,
बिरलाग्राम, नागदा, मध्यप्रदेश

''**V**ष्टादशपुराणानां आसस्य वचनम् द्वभम्। परोपकार ही पुण्याय पापाय पापाय परपीडनम्।'' महर्षि वेदव्यास के समस्त 18 पुराणों का सारांश दो वाक्यों में प्रस्तुत होता है– परोपकार ही धर्म है और हिंसा अधर्म या पाप है।

अहिंसा शब्द 'अहिंसा' से बना है, जिसका अर्थ है– 'बिना हिंसा के। अर्थात् जीवों पर, प्राणी मात्र पर दया की भावना रखना। किसी भी जीव को सताना, कष्ट पहुंचाना, हिंसा के अंतर्गत ही आता है। हिंसा केवल शारीरिक रूप से कष्ट पहुँचाने को ही नहीं कहते अपितु मानसिक रूप से प्रताड़ित करना भी हिंसा ही है।

समस्त प्राणियों में प्रेम, भाई–चारा, सद्भावना, शांति की भावनाओं के साथ मिलजुल कर रहना ही अहिंसा है। अपने विचारों आदि को सभी के समक्ष प्रकट करना तथा दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना अहिंसा का मूल मंत्र है।

भारत सदा से अहिंसक रहा है। इतिहास साक्षी है कि भारत की संस्कृति

में हिंसा का कहीं कोई स्थान नहीं रहा है। इसकी संस्कृति का मूलाधार ही अहिंसा रहा है। उसने हिंसा के द्वारा किसी भी जाति या देश के लोगों को गुलाम नहीं बनाया, न ही किसी के विरुद्ध हिंसक कार्यवाही की। हाँ, अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अवश्य अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग किया किंतु अपनी रक्षा के लिए की गई हिंसक कार्यवाही हिंसा के अंतर्गत नहीं गिनी जा सकती।

गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी ने तो पशुबली तक को बंद करवा दिया था। हमारे देश में हूण, मंगोल आदि हिंसक जातियां आईं और सभी यहां की अहिंसक संस्कृति में रच–बस गईं। भारत का वर्तमान स्वरूप ही अहिंसा के मूल–मंत्र के आधार पर बना और टिका हुआ है। यहाँ अहिंसा को ही परम धर्म माना जाता है।

जैन धर्म में अहिंसा को ''अहिंसा परमो धर्मः'' माना गया है। जैन धर्म के पाँच महाव्रतों–अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और अचौर्य में अहिंसा सर्वोपरि है। हिंसा न केवल इस जन्म में ही अपितु आने वाले जन्म–जन्मांतरों में दुःख और कर्म बंधनों का कारण बनती है। अहिंसा का सभी धर्मों में सर्वोच्च स्थान है।

जैन धर्म के महान आचार्य हेमचन्द्र जी ने अहिंसा की महिमा इस प्रकार की हैः अर्थात्–''अहिंसा सब प्राणियों का हित करने वाली माता के समान है, और अहिंसा ही मरु देश में अमृत की नाली के समान तुल्य है तथा दुःखरूप दावानल को शांत करने के लिए वर्षाकाल की मेघशक्ति के समान है एवं भाव भ्रमण रूप महारोग से दुःखी जीवों के लिए परमौषध की तरह है।

सभी तीर्थंकरों का प्रमुख उपदेश अहिंसा का निष्ठापूर्वक पालन करना एवं सभी प्रकार की हिंसाओं का त्याग करना है। हिंसा सभी दुःखों की उत्पत्ति, कर्म बन्धनों, पाप का कारण है। जैन शास्त्र में दशवैकालिक का श्लोक हैः ''सव्वे जीवा वी इच्छाति जीविउं न मरिज्जउं। तम्हा पाणिवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं।।'' अर्थात् समस्त जीव जीने की ही इच्छा रखते हैं न कि मरने की, अतः प्राणियों का वध करना घोर पाप है और साधु लोग भी इसकी निंदा करते हैं।

अहिंसा सभी धर्मों में सर्वोपरि मानी जाती है फिर चाहे वह सनातन धर्म हो, यहूदी धर्म, इसाई धर्म, सिख धर्म, जैन धर्म या इस्लाम धर्म ही क्यों न हो, अहिंसा ही इन सबका मूल मंत्र है।

अहिंसा योग के प्रथम अंग 'यम' का दूसरा सूत्र है। हिंसा का भाव या विचार रखने से व्यक्ति का शरीर और मन रोग एवं शोकग्रस्त हो जाता है। इसका सीधा असर हमारे मन और मस्तिष्क पर पड़ता है। मन और मस्तिष्क के रोगग्रस्त होने से शरीर में भी रोग उत्पन्न होने लगते हैं। ऐसे में व्यक्ति का मन सदा खिन्न, उत्तेजित, उग्र और मतिभ्रम से ग्रसित हो जाता है। उसमें पशु प्रवृत्तियां हावी होने लगती हैं।

कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी, आज भारत और पूरे विश्व भर से अहिंसा समाप्त हो रही है। भारत में जगह–जगह पर आतंकवादी हमले, जात–पात को लेकर दंगे आदि दावानल की तरह फैल रहे हैं। पूरे विश्व में एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ मची है। बड़े पैमाने पर परमाणु हथियार एवं बम बनाए जा रहे हैं। सभी राष्ट्रों के आपसी संबंध इतने नकारात्मक और खोखले बनते जा रहे हैं कि उसकी कहीं कोई सीमा नज़र नहीं आती।

आज हम हिंसा के जिस भयावह दौर से गुज़र रहे हैं ऐसे में यदि अहिंसा के अग्रदूत गांधी जी होते तो क्या सोचते? जिनका पूरा जीवन रंग और जाति भेद की विषमता को कम करने के प्रयासों में बीता हो, हिंदू–मुस्लिम एकता के प्रति जिनका समस्त जीवन समप्रित हो गया हो, वे क्या इसी आग में जलते विश्व को देख आज यूँ खामोश रहते?

आज हमें एक गांधी की आवश्यकता है। कहां हैं उनके अनुयायी? हमें अहिंसा की बुझी हुई अमर ज्योति को पुनः प्रज्ज्वलित करना होगा। सभी देशों के एक–दूसरे के प्रति हिंसा के भाव को खत्म करना होगा और अहिंसा की भावना स्थापित करनी होगी। तभी संपूर्ण विश्व एक परिवार स्वरूप रहेगा। उस समय कही कोई सीमाएं नहीं होंगी। तब यह धरती, धरती नहीं अपितु स्वर्ग बन जाएगी। ✿

संतों–महापुरुषों की फिर जरूरत

◈ lkE;k[kh feJk 9वीं बी
राव मान सिंह सी. सै. पब्लिक स्कूल
रोशनपुरा, पपरावट रोड, नजफगढ़,
दिल्ली

बदलाव लाने की इस रणनीति को गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में विकसित किया तथा बाद में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इसका विकास हुआ। गांधीजी की अहिंसा, जो कि जैन तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों के प्रभाव से उत्पन्न हुई, कष्ट न देने का कोई नकारात्मक मूल्य नहीं है, अपितु मानवता के लिए प्रेम, त्याग तथा क्षमाशीलता का सकारात्मक व्यवहार है।

Hkारतवर्ष की पवित्र भूमि में सदैव ऋषियों–मुनियों, सन्त–महात्माओं, पीर–फकीरों, चिंतकों–विचारकों, तपस्वियों, शिक्षाविदों–दार्शनिकों, प्रसारकों–प्रचारकों आदि ने अपनी गोरवमयी बहुमुंखी प्रतिभा को प्रदर्शित करके अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। यहाँ ऐसी विलक्षण महान् विभूतियों ने जन्म लिया, जिन्हें हम विश्व शांति के अग्रदूत कह सकते हैं। इन महापुरुषों ने अपना सम्पूर्ण जीवन अहिंसा के मार्ग को प्रशस्त करने में समप्रित कर दिया।

çkphu Hkkjr vkj vfgalk भारत प्राचीन काल से ही अहिंसा का समर्थक रहा है। गौतम बुद्ध और भगवान महावीर प्राचीन काल की कुछ ऐसी ही विभूतियां थी जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अहिंसा के लिए समप्रित कर दिया। आज हमारा कर्तव्य है कि महात्मा बुद्ध द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों, उपदेशों, और शिक्षाओं का अनुसरण करके आज के भौतिकवाद के युग को साम्प्रदायिक सौहार्द, जन–कल्याण, विश्व शांति, मातृत्व, समानता, सहिष्णुता, बंधुत्व, सत्य एवं अहिंसा के नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करके 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के मूल मंत्र की अमरवाणी को सार्थक सिद्ध करने में सक्षम है।

विश्व शांति के लिए भारत सदा प्रयत्नशील रहा है। परंतु अकेले भारत के प्रयत्नों से विश्व में शांति और अहिंसा लाना अति कठिन है। आज हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। यह सदी केवल विश्व शांति एवं अहिंसा की समस्या से ही नहीं अपितु समस्याओं के उपहारों से भरी पड़ी है।

मनुष्य आज भारी विनाश के सच से भयभीत है। अणुयुद्ध की आशंका, जान–लेवा प्रदूषण, बढ़ता अपराधीकरण मनुष्य के अस्तित्व के लिये भारी संकट ला सकता है। आज सारा विश्व विस्फोट, प्राकृतिक असन्तुलन, प्रदूषित पर्यावरण, बेरोजगारी लागों का तक मूलभूत सुविधाओं का न पहुंचना पूरानी बीमारियों का पुनर्जन्म, नई बीमारियों का जन्म तथा सबसे महत्वपूर्ण है नैतिक व मानवीय सत्यों का क्षरण आदि समस्याओं से जूझ रहा है।

इन समस्याओं के चलते कभी–कभी विश्व शांति की कल्पना मात्र प्रतीत होती है। विश्व शांति का तत्व भगवान महावीर ने अहिंसा बताया है। महात्मा बुद्ध का भी सूत्र था–''हिंसा को अहिंसा से, घृणा को प्रेम से, क्रोध को क्षमा से और कृपण को दाव से जीतो।''

xka/kh th vkSj vfgalk% बापू के लिए पंत जी ने कहा हैः *'तुम रक्तहीन, तुम सांसहीन, अस्थिशेष, तुम अस्थिहीन, तुम शुद्ध–बुद्ध आत्मा केवल, हे चिर पुराण, है चिर नवीन।'* गांधीजी के शांतिवाद का आधार है–अहिंसा। अहिंसा की पुनर्व्याख्या गांधीजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है। अहिंसा सत्य को पाने का साधन है। जिस प्रकार हिंसा पशु का विशिष्ट व्यवहार है, उसी प्रकार अहिंसा मानव का नैसर्गिक व्यवहार है। गांधीजी के लिए अहिंसा, हिंसा पशु का विशिष्ट व्यवहार है क्योंकि उसमें न तो सोचने–समझने की क्षमता है और ना ही वह सामाजिक प्राणी है। गांधीजी के लिए अहिंसा हिंसा से कहीं ऊपर है।

बदलाव लाने की इस रणनीति को गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में विकसित किया तथा बाद में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इसका विकास हुआ। गांधीजी की अहिंसा, जो कि जैन तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों के प्रभाव से उत्पन्न हुई, कष्ट न देने का कोई नकारात्मक मूल्य नहीं है, अपितु मानवता के लिए प्रेम, त्याग तथा क्षमाशीलता का सकारात्मक व्यवहार है।

प्रतिशोध की अपेक्षा क्षमाशीलता के लिए अधिक बल की आवश्यकता होती है। अतः अहिंसा निष्क्रिय नहीं अधिकार की सही परिभाषा है–प्रेम व त्याग, अपने शुद्ध सकारात्मक रूप में। इसका आशय है किसी को भी अपने विचारों, शब्दों तथा कार्यों से हानि या दुःख ने पहुंचाना। इसका मतलब है, अन्यायी के प्रति भी प्रेम रखना, उसका भला चाहना। परंतु अहिंसा कायरों का नहीं, शक्तिशाली का हथियार है।

गांधीजी ने कहा था यदि मुझे कायरता और हिंसा में से किसी एक को चुनना पड़े तो मैं हिंसा का समर्थन करूंगा। उन्होंने कहा अपने अपमान को कायरों की भाँति स्वीकार करने से तो बेहतर है देश के गौरव के लिए हथियार उठाकर लड़ मरना। यही कारण है कि उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष का पूरी निष्ठा तथा आत्मबल के साथ नेतृत्व किया। उन्होंने कहा था कि ''मैं चाहूंगा कि भारत अपने सम्मान की रक्षा के लिए शस्त्र उठाए, बजाय इसके कि वह कायरतापूर्वक अपने अपमान को एक असहाय की भांति देखता रहे।''

fo'o 'kkfr e vojk/k विकसित देश यदि मिल कर पूर्ण प्रयास करें और विकासशील राष्ट्रों को साथ मिलाकर शांति के संदेश को जन–जन तक पहुंचायें तो कुछ आशा बंध सकती है, अन्यथा विश्व शांति अमेरिकी अर्थव्यवस्था बेहतरीन स्थिति में होती है, क्योंकि वह हथियारों का सबसे बड़ा सौदागर है। लम्बे समय तक रूस की अर्थव्यवस्था भी हथियारों की बिक्री पर ही टिकी थी और अभी भी विश्व पण्डित सोवियत रूस के कई देश अपने हथियारों की अवैध बिक्री के दम पर ही टिके हैं।

लेकिन अमेरिका चूंकि अब पूरे विश्व में शांति का सौदागर भी हो गया है, इसलिए हथियारों के सौदागर के रूप में उसकी भूमिका एक खास किस्म का अर्न्तविरोध पैदा करती है और खासकर उन इलाकों में, जहां वह शांति की कोशिशों में जुटा है, जैसे पश्चिम एशिया व दक्षिण एशिया।

अपने पड़ोसी देशों के साथ सौहार्द स्थापित करने का प्रयास हमारा देश इसलिए करता है कि विश्व में शांति हो। आज पुनः जरूरत है गांधीजी की तरह सच्चे नेता की; जवाहर लाल नेहरु की तथा उन सन्तों–महापुरुषों की जो विश्व में शांति ला सकें। ✿

मानव-जीवन दुर्लभ माना जाता है। यह भी एक सर्वज्ञात है कि अराजकता और अशांति की राहों पर चलकर हम अपने जिस राजनीतिक, आर्थिक या अन्य प्रकार के साम्राज्य का निर्माण किया करते या करना चाहते हैं, वह किसी के साथ नहीं जाया करता। हमेशा बना भी नहीं रहा करता फिर क्यों न जीवन के जो थोड़े से पल मिले हैं, उन्हें सुख-शांति से व्यतीत कर लिया जाए।

अशांति के कारणों का करें निराकरण

◈ **nfodk** 8वीं सी
सेंट माग्रेट स्कूल
प्रशांत विहार, दिल्ली

Hkारतीय संस्कृति में मनीषियों ने 'अहिंसा परमो धर्मः' कहकर अहिंसा का महत्व समझा और प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है। अहिंसा होने को मनुष्य का श्रेष्ठतम धर्म बता और मान कर ही ऐसा किया गया है। इस भारतीय दृष्टि से 'हिंसा मात्र हिंसा का' के प्रश्न के साथ अहिंसा शब्द का प्रयोग करना और जोड़ा जाना भी हमारे विचार में यही अर्थ और प्रयोजन रखता है।

यों युद्ध और अशांति का वातावरण मानव–धरती और सृष्टि पर आरम्भ से ही बनता आया है, युद्ध भी होते हैं। अन्य कारणों से भी अशांति फैलती रही है परंतु तब यह सब कुछ एक सीमित लोगों में ही हुआ करता था। अन्य क्षेत्रों और वहां के भी आम लोगों पर उस सबका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा करता था।

कुछ समय बाद स्थितियाँ या तो स्वतः ही समाप्त हो जाया करती थीं, या फिर थोड़े–बहुत संघर्ष के बाद उनका अंत हो जाया करता था। पर मानव–सभ्यता के वैज्ञानिक यांत्रिक, औद्योगिक विकास के आज के युग में स्थितियां पहले जैसी नहीं रह गईं। अब केवल अनेक प्रकार के हिंसक

शस्त्रों का वैज्ञानिक निर्माण कर उनकी ऐसी प्रयोग–विधियाँ ही विकसित कर ली गईं हैं जो कि जो घर बैठ–बिठाए सारे संसार को विनाशक या संघातगति विधियों से प्रभावित कर सकती हैं, बल्कि हिंसा मानव स्वभाव का अंग बन गई है।

आज ही मानव सेवा, नौकरी, उद्योग–धन्धों, कार्य–व्यापार सभी कुछ हिंसा–वृत्ति से परिचालित होकर हिंसक रंग–ढंग से कर रहा है यानि अपने स्थायी–अस्थायी सुख–लाभ के लिए अपने को सुशिक्षित, सुसभ्य एवं सुसंस्कृत समझने वाला किसी भी सीमा तक जा सकता है। हर प्रकार से हिंसा–वृद्धि से हमारा वास्तविक अभिप्राय यही है तभी तो चारों ओर, राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय प्रत्येक स्तर पर लूट–खसोट, आपाधापी, भ्रष्टाचार, घोटालों और अराजकतापूर्ण वातावरण से जीवन को अशांत बनाए हुए है।

जब इस प्रकार का वातावरण चारों ओर छा रहा हो तो स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि आखिर इस सबका समाधान क्या और कैसे हो सकता है? कैसे व्यक्तियों, समाजों, जातियों, धर्मों और राष्ट्रों को अशांति–अराजकता फैलाने वाले तत्वों से दूर रखा या बचाया जा सकता है? इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर, सभी समस्याओं का मात्र एक ही हल संभव हो सकता है, वह है–अहिंसा ! व्यक्ति से लेकर राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय हर स्तर तक अहिंसा ही हर प्रकार की अराजकता, अशांति से मानवता और उसके जीवन की शांति की रक्षा कर सकती है। लेकिन तभी, जब अहिंसा को एक सहज मानवीय धर्म, मानवता का उदात्त नियम और अनुशासन बनाकर व्यक्ति से लेकर राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हर मनुष्य, समाज, जाति धर्म और प्रशासन अपना ले।

ध्यान रहे, अहिंसा का तात्पर्य मात्र शस्त्र का त्याग करना ही नहीं है। अहिंसा दुर्बलों का हथियार या दुर्बलता का प्रतीक–परिचायक भी नहीं है। वास्तव में अहिंसा सबलता शस्त्र–शरीर की न हो कर आत्मा, आस्था और विश्वास की भी हो सकती है। भारत ने इसी प्रकार की अहिंसा को महात्मा गांधी से एक अमोघ शस्त्र के रूप में प्राप्त कर निकट भूत में ही अपनी खोई स्वतंत्रता प्राप्त की है; इस तथ्य से आज का संपूर्ण विश्व भली–भांति परिचित है। अतः स्पष्ट है कि इसी शस्त्र को धारण करके

ही विश्व में फल रही अराजकता और अशांति के कारणों के विरुद्ध मोर्चाबंदी करके विश्व शांति की सही अर्थों में रक्षा संभव हो सकती है। इसके लिए आत्मिक दृढ़ता और आत्मविश्वास, एक उदात्त मानवीय संकल्प का होना आवश्यक है।

अहिंसा की आँच से ही उन दीवारों को पिघलाया जा सकता है जो आज विश्व शांति की राह में बाधा बनी खड़ी है। अपने आप विश्व नेता और मानवता का रक्षक मानने वालों को आज सब से पहले आत्म निरीक्षण एवं आत्मा व लोकन कर इसी को पहचाने–अपनाने की जरूरत है।

मानव–जीवन दुर्लभ माना जाता है। यह भी एक सर्वज्ञात है कि अराजकता और अशांति की राहों पर चलकर हम अपने जिस राजनीतिक, आर्थिक या अन्य प्रकार के साम्राज्य का निर्माण किया करते या करना चाहते हैं, वह किसी के साथ नहीं जाया करता। हमेशा बना भी नहीं रहा करता फिर क्यों न जीवन के थोड़े से पल मिले हैं, उन्हें सुख–शांति से व्यतीत कर लिया जाए। क्यों न उन पर प्रेम–भाईचारे का ऐसा सहज मानवीय रंग चढ़ाया जाए कि जो पक्के रूप से मानवता की पहचान बन जाए। यदि थोड़ा प्रयास करके हम उस रंग का निर्माण अहिंसा कर लेते हैं, तो कोई कारण नहीं कि आज के अशांत वातावरण का अंत होकर विश्व में शांति की स्थापना न हो। ✿

आज भी मौजूद है उपनिवेशवाद

◈ vfHk"kd efr 7वीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, फेस-II, दिल्ली

आज संसार में दो महान शक्तियों और उनके पीछे लगे छोटे राष्ट्रों की हाँ में हाँ मिलाने की नीति ने संसार को तीसरे विश्व युद्ध की ओर धकेल दिया है। अरब-इजराइल युद्ध, वियतनाम युद्ध, रूस तथा हंगरी, दक्षिणी अफ्रीका और नाम्बिया, तंजानिया और युगांडा संघर्ष, कम्पूचिया संघर्ष तथा अफगानिस्तान में रूस की घुसपैठ समय-समय पर विश्व शांति को भंग करती रही है।

संसार की सुख और समृद्धि शांतिपूर्ण वातावरण में ही संभव है। विश्व जब युद्ध के कगार पर खड़ा हो, तब विश्व शांति केवल कल्पना ही रह जाती है। विश्व शांति सभी देशों या लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति और खुशी का एक आदर्श है।

विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से कभी या शासन की एक प्रणाली के जरिये सहयोग से विश्व शांति करते हैं, ताकि युद्ध को रोका जा सके। हालांकि कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग विश्व शांति के लिए सभी व्यक्तियों के बीच सभी तरह की दुश्मनी के खात्मे के संदर्भ में किया जाता है।

आज संसार में दो महान शक्तियों और उनके पीछे लगे छोटे राष्ट्रों की हाँ में हाँ मिलाने की नीति ने संसार को तीसरे विश्व युद्ध की ओर धकेल दिया है। अरब, इजराइल युद्ध, वियतनाम युद्ध, रूस तथा हंगरी, दक्षिणी अफ्रीका और नाम्बिया, तंजानिया और युगांडा संघर्ष, कम्पूचिया संघर्ष तथा अफगानिस्तान में रूस की घुसपैठ समय–समय पर विश्व शांति को भंग करती रही है।

आज भी उपनिवेशवाद अपनी जड़ें जमाए हुए है। फाकलैंड विवाद में अब इंग्लैंड और अर्जेन्टाईना उलझ चुके हैं। रूस का अर्जेन्टाईना को समर्थन देना और अमेरिका की दोहरी नीति इसे विश्व युद्ध की ओर धकेल रही है। इराक और ईरान में चल रहे भयंकर संघर्ष की लपटें सीमा पार के पड़ौसी राज्यों को भी लपेट सकती है। विश्व अब युद्ध के कगार पर खड़ा है।

विश्व शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके लिए कई सिद्धांतों का प्रस्ताव किया गया है। दावा किया जाता है कि कभी–कभी विश्व शांति किसी खास राजनैतिक विचारधारा का एक अपरिहार्य परिणाम होती है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश के मुताबिक ''लोकतंत्र का प्रयाण(मार्च) विश्व शांति को नेतृत्व करेगा। औद्योगिक क्रांति के बाद से लोकतांत्रिक बनने वाले देशों में वृद्धि हो रही है। एक विश्व शांति इस प्रकार संभव है, अगर यह रुझान जारी रहे और अगर लोकतांत्रिक शांति सिद्धांत सही हो। द्विपक्षीय आश्वस्त विनाश (कभी–कभी) इसे डण ।ण्क्ण कहा जाता है। सैन्य रणनीति का एक सिद्धांत है, जिसमें दो प्रतिद्वंद्वी पक्षों द्वारा पूर्ण पैमाने पर परमाणु हथियारों के उपयोग से हमलावर और रक्षक दोनों के विनाश का प्रभावी परिणाम निकलता है।

विश्व शांति को स्थानीय स्व निर्धारित व्यवहार के एक परिणाम के रूप में दर्शाया गया है जो शक्ति के उच्च प्राधिकार, संस्थानीकरण को रोकता है और हिंसा को बढ़ावा देता है। समाधान बहुत कुछ सहमति वाले एजेंडे या उच्च प्राधिकार, चाहे वह दैवीय हो या राजनीतिक, निवेश पर उतना आधारित नहीं है जितना अपनी सहमति वाले तंत्रों का स्व–संगठित नेटवर्क, जिसका परिणाम एक व्यवहार्य राजनीतिक–आर्थिक सामाजिक तानेबाने के रूप में निकलता है। आर्थिक मानदंडों के सिद्धांत को शास्त्रीय उदार सिद्धांत के रूप में भ्रमित नहीं होने देना चाहिए। बाद वाला मानता है कि बाज़ार प्राकृतिक होते हैं और मुक्त बाज़ार धन को बढ़ावा देता है। विश्व शांति और अहिंसा के लिए कई धर्मों और धार्मिक नेताओं ने इच्छा व्यक्त की है। ✿

दूसरों की इच्छाओं का भी आदर हो

◈ **f'kokxh tu** 9वीं बी
जिनवाणी भारती पब्लिक स्कूल
सैक्टर–4, द्वारका, दिल्ली

जैन दृष्टि से सब जीवों के प्रति संयमपूर्ण व्यवहार अहिंसा है। अहिंसा का शब्दानुसार अर्थ है, हिंसा न करना। इसके पारिभाषिक अर्थ विध्यात्मक और निषेधात्मक दोनों हैं। निषेधात्मक अहिंसा में केवल हिंसा का वर्जन होता है, विध्यात्मक अहिंसा में सक्रियात्मकता होती है। हिंसा न करने वाला यदि आंतरिक प्रवृत्तियों को शुद्ध न करे तो वह अहिंसा नहीं होगी।

foश्व शांति सभी देशों या लोगों के बीच और उनके भीतर स्वतंत्रता, शांति और खुशी का एक आदर्श है विश्व शांति पूरी पृथ्वी में अहिंसा स्थापित करने का एक विचार है, जिसके तहत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की एक प्राणी के जरिये इच्छा से सहयोग करते हैं, ताकि युद्ध को रोका जा सके।

अहिंसा का सामान्य अर्थ है 'हिंसा न करना'। इसका व्यापक अर्थ हैः किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म, वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुँचाना। हिन्दू धर्म में अहिंसा का बहुत महत्व है। अहिंसा परमो धर्मः (अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है) कहा गया है। महात्मा गांधी ने भारत की आजादी के लिए जो आंदोलन चलाया वह काफी सीमा तक अहिंसात्मक था।

fo'o 'kkfr d fl)kr% दावा किया जाता है कि कभी–कभी विश्व शांति किसी खास राजनीतिक विचारधारा का एक अपरिहार्य परिणाम होती है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यु बुश के मुताबिक ''लोकतंत्र का प्रयाण विश्व शांति का नेतृत्व करेगा। लोकतांत्रिक शांति सिद्धांत के

अनुसार ''चाहे कुछ भी हो, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में हमें एक व्यावहारिक कानून की आवश्यकता है।'' पूंजीवादी शांति सिद्धांत यह याद रखा जाना चाहिए कि उन्नीसवीं सदी की राजनीतिक प्राणलियां शुद्ध पूंजीवादी नहीं थीं, बल्कि मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं वाली थीं।

iFkdrkokn vkSj xSj&gLr{ksiokn% पृथकवाद और गैर–हस्तक्षेपवाद के समर्थकों का दावा है कि कई राष्ट्रों से बनी एक दुनिया उस समय तक शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व के साथ रह सकती है, जब तक वह घरेलू मामलों की तरफ मजबूती से ध्यान केंद्रित रखे और दूसरे देशों पर अपनी इच्छा थोपने की कोशिश नहीं करे। जापान जैसे राष्ट्र शायद अतीत में पृथकतावादी नीतियों की स्थापना के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं।

vkfFkZd ekunaMksa dk fl)kar% आर्थिक मानदंडों का सिद्धांत आर्थिक स्थितियों को प्रशासन के संस्थानों और संघर्ष से संबंद्ध करता है। मानव इतिहास का ज्यादातर समाज व्यक्तिगत संबंधों पर आधारित है। यह राज्य के प्रति वफादारी पैदा करती है, जो कानून का शासन और अनुबंध निष्पक्ष और विश्वस्त रूप से लागू करती है।

fo'o 'kkafr ds /kkfeZd fopkj% कई धर्मों और धार्मिक नेताओं ने हिंसा खत्म करने और विश्व शांति की इच्छा व्यक्त की है।

- **cq) /keZ%** बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ गौतम ने कहा, ''शांति भीतर से आती है। इसे इसके बिना न तलाशें।''
- **bZlkbZ /keZ%** दो उपदेश ''लेकिन मैं तुम्हें कहता हूं, अपने दुश्मनों से प्यार करो, जो तुम्हें शाप देते हैं, उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुमसे नफरत करते है।'' ''मैं तुम्हें एक नया आदेश देता हूं कि तुम दूसरे को प्यार करो, जैसा कि मैंने तुमसे प्यार किया है।''
- **fgUnw /keZ%** ''पूरा विश्व एक परिवार है। विभेद देखता है। विश्व शांति केवल आंतरिक साधनों के माध्यम से हासिल की जा सकती हैं।
- **bLyke /keZ%** विश्व शांति के इस्लामी विचार कुरान में वर्णित हैं, जहां पूरी मानवता को एक परिवार के रूप में मान्यता प्राप्त है।

- **tu /ke%** सभी तरह के जीवन, मानवीय या गैर मानवीय, में करुणा जैन धर्म का केंद्र है।

- **fl[k /ke%** दो उपदेश ''सभी जीव–जंतु उनके हैं, वह सभी के लिए है'' । ''एक बेदाग ईश्वर की स्तुति गाओ, वह सब के भीतर निहित है।''

fgUn 'kkL=k e vfglk% हिन्दू शास्त्रों की दृष्टि से अहिंसा का अर्थ है सब प्राणियों के साथ द्रोह का अभाव। योगशास्त्र में निदिषृयम तथा नियम अहिंसामूलक ही माने जाते हैं। यदि उनके द्वारा किसी प्रकार की हिंसावृत्ति का उदय होता है तो वे साधना की सिद्धि में उपादेय तथा उपकार नहीं माने जाते। सत्य की भी कसौटी अहिंसा ही है। हिंदू शास्त्रों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय (न चुराना), ब्रह्माचर्य तथा अपरिग्रह, इन पाँचों यमों को जाति, देश, काल तथा समय से अवच्छिन्न होने के कारण समभावन सार्वभौम तथा महाव्रत कहा गया हैं (योगसूत्र 2131) और इनमें भी, सबका आधार होने से, ''अहिंसा'' ही सबसे अधिक महाव्रत कहलाने की योग्यता रखती है।

vfglk ij tu nf"V% जैन दृष्टि से सब जीवों के प्रति संयमपूर्ण व्यवहार अहिंसा है। अहिंसा का शब्दानुसार अर्थ है, हिंसा न करना। इसके पारिभाषिक अर्थ विध्यात्मक और निषेधात्मक दोनों हैं। निषेधात्मक अहिंसा में केवल हिंसा का वर्जन होता है, विध्यात्मक अहिंसा में सक्रियात्मकता होती है। हिंसा न करने वाला यदि आंतरिक प्रवृत्तियों को शुद्ध न करे तो वह अहिंसा नहीं होगी। व्यवहार में निषेधात्मक अहिंसा को निष्क्रिय अहिंसा और विध्यात्मक अहिंसा को सक्रिय अहिंसा कहा जाता है।

जैन ग्रंथ आचारांगसूत्र में, अहिंसा का उपदेश इस प्रकार दिया गया है। किसी भी जीवित प्राणी को, किसी भी जंतु को, किसी भी वस्तु को, जिसमें आत्मा है, न मारो, न (उससे) अनुचित व्यवहार करो, न अपमानित करो, न कष्ट दो और न सताओ, सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। सभी प्राणियों को अपनी आयु प्रिय है, सब अनूकुल है, दुःख प्रतिकूल है। संक्षेप में, रागद्वेष का अप्रादुर्भाव कोटि का प्राणवध न होने पर भी वह होती है। हिंसा से विरत न होना भी हिंसा है और हिंसा में

परिणत होना भी हिंसा है। इसलिए रागद्वेष की प्रवृत्ति है वहाँ निरंतर प्राणवध होता है।

ck) ,o bZlkbZ /keZ% इसी प्रकार बौद्ध और ईसाई धर्मों में भी अहिंसा की बड़ी महिमा है। बौद्ध अहिंसा निःसंदेह आस्था में जैन धर्म के समान महत्व की न थी, पर उसका प्रभाव भी संसार पर प्रभूत पड़ा। उसी का यह परिणाम था कि विकराल जातियाँ प्रेम और दया की मूर्ति बन गईं। बौद्ध धर्म के प्रभाव से ही ईसाई भी अहिंसा के प्रति विशेष आकृभट हुए; ईसा ने जो आत्मोत्सर्ग किया वह प्रेम और अहिंसा का ही उदाहरण था। टॉल्सटॉय और गांधी ईसा के इस अहिंसात्मक आचरण से बहुत प्रभावित हुए। अपने आंदोलन के प्रायः चोटी पर होते भी चौरा–चोरी हत्याकांड से विरक्त होकर उन्होंने आंदोलन बंद कर दिया था। ✿

ENGLISH

A threat to humanity

◈ **Swaroop Kumar** X B
Amrit Vidyalayam
Karnataka

'Mutual assured destruction is a doctrine of military strategy in which a full scale use of nuclear wapons by two opposing sides will effectively result in the destruction of both the attacker and the defender. This makes wars pointless as it no longer offer a possibility of a net gain for either side.

"Why did millions of people kill one another when it has been known since the world began that it is physically and morally bad to do so? Because it was such an important necessity that in doing it men fulfilled the elemental zoological law which fulfill when they kill one another in autumn, and which causes male animals to destroy one another. One can give no other reply to that terrible question"

Leo Tolstoy (War and Peace)

Our species started out as but a petite and vulnerable group of Neanderthals. We have, since then, wandered our way throughout the world and claimed pieces of it, which, in the deepest of meanings, hold but lifeless piles of necessary resources, as our own, as honour and as victory itself. We are, though not irreversibly, bound by our instincts which suggests aggression and destruction as a means of survival and which initiates and causes all the unhappiness in the world that we take for granted by simply failing to let us

realize the fact that peace, harmony, sharing and kindness are greater and easier roads to life and living.

Wars are, as Leo Tolstoy writes, exaggerated and magnified reflections of the thoughts and instincts of the animals inside us. On thinking thus, we experience a revelation that wars are meaningless and are hardly civil. However, wars present us with great, and though are themselves insensible and physically and morally bad, and really a real danger.

A threat to humanity!

“Think of the rivers of blood spilled by all those generous and emperors so that in glory and triumph, they can become the momentary masters of a fraction of a dot. Think of the endless cruelties visited by the inhabitants of one corner of this pixel on the scarcely distinguishable inhabitants of some other corner. How frequent their misunderstandings, how eager they are to kill one another, how fervent their hatred”

Carl Sagan (Pale Blue dot)

Wars may seem, on the scales of the cosmos to be flimsy and insignificant. But they are, in matters of nations and states, a real threat to humanity and the achievement of its positive aspect. World was I killed more than a million combatants and its second successor resulted in 60 million casualities. World was 3, which may sound dillusionary to some is a threatening possibility of the future. A Global crisis natural resources will probably be the cause of a widespred mass attack of deadly nuclear in weapons that will, undoubtedly, disable both all the nations involved in the conflict, permanently. If we don’t make world peace and take immediate actions to doing so. Humans will be their own victims, with their instincts pouncing on them, with advanced technology for its claws and greed for motive.

There are way out

"World peace is an ideal of freedom, peace and happiness among and within all nations and or people. It is an ideal of planet or non-violence by which nations willingly co-operate either voluntariy or by virtue of a system of governance that prevent warface."

Wikipedia (en.Wikipedio.org)

Wars are, as it is observable through every example in history, both devastating and insensible. It is of utmost importance to evade immediately and avoid further warface and violence. World peace is theoretically possible, the proposals of whose possibilities are given below.

The 'democratic peace theory' claims that strong empirical evidence exists that democracies never or rarely wage war against each other. A world peace thus becomes possible if the trend that nations follow by more and more of them becoming democratic continues and if the theory is correct.

The 'cobdenism' theorists claim that removing tarrifs and creating international free trade will make wars impossible as it prevents nations from becoming self-sufficient, which is a requirement of long wars.

'Mutual assured destruction is a doctrine of military strategy in which a full scale use of nuclear wapons by two opposing sides will effectively result in the destruction of both the attacker and the defender. This makes wars pointless as it no longer offers a possibility of a net gain for either side.

Some believe Globlisation, where city-states and nation-states have unified, will bring about a unified world order, while others suggest isolation of, and non-interference with, the matters of foreign nations will prevent any possibility of a war.

Religious views such as those of Buddhists hold that world peace can only be achieved if inner peace is achieved. Other religions such as Hinduism, Islamic and Christianity preach that love, kindness, and sympathy towards others is the road to peace inside and outside.

A report in may 2011 on the Global peace index highlighted that had the world been 25% more peaceful in the past year. The global economy would have benefited by an additional 2 trillion dollars, which would account for 2% of global GDP per annum required to mitigate global warming, cancel all public debt held by Greece, Ireland and Portugal and cover the rebuilding costs for the 2011 Tohoku earthquake and Tsunami. ✿

Democracy and Non-violence are closely connected

◈ **Amit Yadav** X A
Delhi Public School
Vidyut Nagar, Dadri, U.P.

People working in the field of non-violence are in fact very inadequately trained and practiced in non-violence. It is necessary to frame a course of action to remove this inadequacy so that a cadre of seasoned and well trained workers is created to spread the message of non-violence to every corner of the world.

It is truly said by Theodore Reszak that "People try non-violence for a week, and when it doesn't work, they go back to violence, which hadn't work for centuries."

Non-violence generally means philosophy of obstention from because of moral or religious principle. In recent years there has been a dramatic increase in the number of people around the world who have taken part in non-violent political action. Non-violent action is an expedient technique for dealing with conflict or bringing about social change, for others, non violence is a moral imperative or even a way of life. At first glance, violence may appear to be a superior technique for resolving conflicts or achieving desired ends because it has obvious and tangible strategies and weapons. Non-violent techniques are often more difficult to visualize and there is no shortage of moral and practical dilemmas that skeptics are able to raise as impediments to taking non-violence seriously.

Today we have conquered distance. We are no longer living as isolated individuals. Our activities and thinking now encompass not only the country we belong to, but the whole world. This is an important development. However, let us not forget the truth that the centre of all consciousness lies within the individual. Therefore the dream of world-peace cannot be realized without refining the individual consciousness.

So, sooner or later, one will have to awaken social consciousness in individuals to ensure world peace. This social consciousness is in traditional terms consciousness of equity. Military rulers and dictators have survived through the exercise of total control. But we have now come a long way from the days of monarchy to present day democracy. This is an extremely important change. The next stage of the journey should be a government wedded and committed to peace.

Here it is not necessary that all democratic rulers should have faith in non-violence. The fact of matter is that even though ideally democracy and non-violence are closely connected, today democratic governments have become close approximations to dictatorship. The system of ‘paxocracy’ will not be different from that of democracy but the rulers system will have to be men and women having complete faith in non-violence. Only in such a ‘paxocracy’ can the dream of world peace come true. If only conferences could establish world peace, we could not ask for a greater blessing.

Let us not forget that even government organize similar conferences with the same objective of peace in the world. But the very same government keep arming themselves to the teeth. This duplicity is misleading. What a contradiction! Both, efforts for peace and those for developing increasingly destructive weapons, made at the same time. People

everywhere are opposed to war. Unfortunately, government thwart and defeat the wishes of people. Today, there is no powerful platform of non-violence anywhere. People working for non-violence are scattered without any effective links and contacts, or even unity of purpose. Whereas nations with opposing ideologies have found a common platform in the UNO where they confer, deliberate and try to solve international problems, people bound together by a common faith in non-violence never meet, talk together to find collective solutions to the world problems.

People working in the field of non-violence are in fact very inadequately trained and practiced in non-violence. It is necessary to frame a course of action to remove this inadequacy so that a cadre of seasoned and well trained workers is created to spread the message of non-violence to every corner of the world.

These formulas of non-violence can greatly benefit the cause of world peace. All our thinking must be centred on it. Other programmes can also be proposed. Let all our energies be trained in this direction. Our effort must be world wide. May the cause of universal non-violence advance & flourish. ✿

Many of the wars take place on the issue of religion and they disturb the peace of the nation. I believe that every major religion in the world- Buddhism, Christianity, Confucianism, Hinduism, Islam, Jainism, Judaism, Sikhism etc. has similar ideas of love, the same goal of benefiting humanity through spiritual practices, and the same effect of making their followers better human beings. All religions teach moral precepts for perfecting the functions of mind, body and speech.

Violence breeds violence

◈ **Shruti. S. Desai** Xth
Kidland School
Kopar Road Dombivli (W)
Mumbai, Maharshtra

When we rise in the morning and listen to the radio or read the newspaper, we are confronted with the same sad news: violence, crime, wars and disasters. I cannot recall a single day without the report of something terrible happening somewhere. Even in these modern times it is clear that one's precious life is not safe. No former generation had to experience as much dark news as we face today; this constant awareness of fear and tension should make any sensitive and compassionate person question seriously the progress of our modern world. All this calls for a new approach to global problems. The world is becoming smaller and smaller and more and more interdependent.

A nation's problems can no longer be satisfactorily solved by itself alone; too much depends on the interest, attitude, and co-operation of other nations. A universal humanitarian approach to world problems seems the only sound basis for world peace. To many, world peace is an idea of what the world foundation should lay upon. In reality, world peace

is an idea of freedom, peace and happiness among and within all nations and its people. World peace is an idea of planetary non-violence by which nations willingly co-operate, either voluntarily or by the virtue of a system of governance that prevents warfare.

Many of the wars take place on the issue of religion and they disturb the peace of the nation. I believe that every major religion in the world- Buddhism, Christianity, Confucianism, Hinduism, Islam, Jainism, Judaism, Sikhism etc. has similar ideas of love, the same goal of benefiting humanity through spiritual practices, and the same effect of making their followers better human beings. All religions teach moral precepts for perfecting the functions of mind, body and speech. I personally feel that all the religions have the same message, however, their way of presenting the thoughts are different. But it is very much beneficial to try to implement in daily life the shared precepts for goodness taught by all religions rather than to argue about minor differences in approach. In religion there are no national boundaries. A particular religion can and should be accepted by a person who finds it just and beneficial.

There are many other reasons for disturbance in the world peace. As all the nations are economically dependent on one another more than ever before, human understanding must go beyond national boundaries and embrace the international community at large. Indeed, unless we can create an atmosphere of genuine co-operation, gained not by threatened or actual use of force but by heartfelt understanding, world problems will only increase. If unwanted social, political and cultural forms continue to be imposed upon unwilling people, the attainment of world peace is doubtful. Adopting violent methods always goes against the principles of world peace as non-violence is one of the basic principles for attaining peace. For example, in

September the attacks also known as 9/11 occurred where the United States went through a terrorist attack which killed many innocent people. The United States then engaged in war on Iraq, which also resulted in destruction and bloodshed. The United states also used the similar ways, violent in nature, which increased the enemity between the nations. Now the question for many Americans remains, does this mean the threat level for the United States will be higher? By Adopting the violent ways the Americans may have won the war, they may have attained peace, but this will not last for a long time as the opposing countries will surely attack the United States, this time more severely. Thus for maintaining peace, non-violence is the need of the hour. From the above example I remember the famous lines by Bacon-'In taking revenge a man is equal to his enemy, but in passing it over he is superior.'

Non-violence, in essence, is the use of peaceful means to bring about a positive and lasting social or political change. Use of non-violent methods is like giving aid to the injured, water to the thirsty and food to the hungry. One can legitimately ask: Why should non-violence be used when violence offers more tangible and faster solution? 'The ultimate weakness of violence is that it is a descending spiral, begetting the very thing it seeks to destroy-Instead of diminishing evil, it multiplies it' said Martin Luther King. When violence solves the problems temporarily, non-violence helps in solving the problems by understanding their root-cause.

Non-violence is a "tool" that is available to all. Every single person in this world can practice non-violence right from this moment if one realizes its importance. Non-violence being a slow and milder process helps to spread the message of peace and unity whereas violence results in nothing but massive bloodshed and deaths. It is important to realize that

the use of violence to solve a social or political problem creates a host of other problems in its wake. No matter how pure and sublime one's aim is, use of violence to achieve in can never be justified. In the words of Mahatma Gandhi: "Violence breeds violence… pure goals can never be justified for impure or violent actions… They say the means are after all just means. I would say means are after all everything. As the means, so the end… If we take care of the means we are bound to reach the end sooner or later."

So, for the renewal of human values and attainment of lasting happiness, we need to look to the common humanitarian heritage of all nations the world over. I sign off by appealing that may this essay serve as an urgent reminder lest we forget the human values that unite us all as a single family on this planet.

Little deeds of kindness,
Little words of love,
Make our earth on Eden,
Like the heaven above. ✿

Non-violence is an eternal religion but we do not accept it as such. It is only when humanity is threatened with destruction that we start thinking of non-violence and of the ways of spreading. It is thus clear that the reason why non-violence is not developing independently its own habit of treating it merely as a method of crises management.

Education system should be balanced

◈ **Lakshay Choukse** IX B
New Era Public Academy
Indore, Madhya Pradesh

Society consists of innumerable individuals plurality constitutes collectivity but more collectivity does not become society without the bond of mutuality. Without a common thread the beads would not make a rosary and it is of utmost important to examine and evaluate the thread.

Life's formula is not conflict, for conflict denotes help not an independent trait. While treating life as conflict compels man to take the course of violence mutual beneficence takes him on the road to non-violence.

Countries like the Soviet Union and China laid utmost stress on bringing about in the economic and social order. The famous historian Toynbee talked of the twin question of bread and faith neither in isolation can be faultless. Only that system world peace which ensures both in the right proportion.

Co-existence

We are inhabitants of the same planet and share a common

solar system. All of us are being affected by inter-planetary radiation and all of us are in need of a proper atmosphere and ecological cover. Nature descares that we cannot but live together. These impediments are less natural and geographic but more artificial and imaginary. A is a citizen of India and B of Pakistan. The Indians feel more attached to his country's soil than he does to the Pakistani. The people feel much more attracted to word race, colour and religion than towards one another. Philosophy speaks of three kinds of opposition: Pratibadhya, pratibandhak (that which is impeded-that wine impedes) vadhy-vadhak (the hunted-the hunter), and sahanavasthan violence lies in viewing a opposition/non-opposition and difference/non-difference dyads relatively and in trying to reconcile them. On this basis alone can the principle of coexistence be implemented.

The materialistic point of view

Non-violence is an eternal religion but we do not accept it as such. It is only when humanity is threatened with destruction that we start thinking of non-violence and of the ways of spreading. It is thus clear that the reason why non-violence is not developing independently its own habit of treating it merely as a method of crises management. Though violence is a negative tendency and non-violence a positive one, for all practical purpose we have changed their place. As a matter of fact a the word non-violence, since it is taken to mean the negation of violence.

The rigmarole of violence automatically comes to an end once non-violence is understood to be an inevitable part of life.

The materialistic point of view

Man's ego prompts him to be more and more. It is this ambition which lies at the back of materialism. He has sensation too and he always wants pleasant sensations. It is again this hedonism and love of comfort that pros up materialism.

Peace and non-violence are no more subject of philosophy, they are essentially human conduct. It is common knowledge that practice is much more difficult than prep and since a major part of society is motivated in its activities by ambitions and the pleasure principle. The inevitable consequence is violence and unrest.

Non-violence and the education system

The Present day education system lays a great deal of stress on intellectual development. Our colleges and universities are producing excellent teachers, scientists, lawyers, administrators, education and businessmen, but they are unable to produce high quality ethical, religious and spiritual men. The Left Lobe of our brain has become overactive and the right lobe has become inactive. This imbalance has made the whole human personality unbalanced and an unbalanced personality becomes the cause of violence.

Only a balanced personality can bring about non-violence. For solving the problem of violence it is necessary that our education system should aim a balanced development of the intellectual and emotional aspects of the personality.

Both the lobes of the brain have to be activated so that the right soil is created for sprouting the seeds of non-violence.

Non-violence and willpower

Why does an individual indulge in violence? This question has great importance for one who practices non-violence. Its answer compels us to be controlled only by strong will power. Which is the same as a strong vrata or vow it is for this purpose that the Anuvrat Movement is going on. The unconscious harbours ego which accounts for the individual getting enjoyment out of thinking very high of himself and very low of others. Discrimination practiced on the basis of race and colour is but one manifestation of man's ego.

Irrational insistence too is rooted in ego. Here also lies the seed of the command problem. Here it is relevant to recall one of the vows of Anuvrata.

“I will believe in human, unity, will eschew any discrimination based on race, colour etc as well as untouchability”!

But if we want to develop non-violence it is not enough to be conscious merely of the present events. ✿

We know that egoism is the biggest obstacle to a life of harmony and peace on earth, but after so many centuries of civilization no amount of religious preaching or moral teaching has been able to convince the ego to forego its claims, as to speak to him of fraternity is to speak to him of something fundamentally contrary to his nature.

Need for real unity

◈ **B.S. Vidya Rani**
Sadhana Mandir High School
Bolarum, Secunderabad
Andhra Pradesh

I will believe in human unity

"A new spirit of oneness will take hold of the human race……'

Towards unity

Vasudhaiva Kudumbakam, said the ancient Indians. The world is one family. The ideal of human unity, which was already present at the dawn of civilization, has never appeared so close to realization, but paradoxically the closer we come to it, the more it seems to elude us. It is as if at the onset of the 21st century the need for human unity has never been so great, and yet quite often this very unit, seen as inevitable, is perceived as some what threatening.

World in crisis

We speak of mondialisation of globalization and in the same breath we deplore the dangers of uniformity. We speak of democracys as a universal ideal and of the progress of all nations towards it as irreversible, and yet at the same time

this democratic model is perceived as a system imposed by some nations on others. We are facing environmental problems which threaten the very survival of our planet, and we know that in order to tackle these common problems the individual nation-state is not an adequate institution anymore. But the very concepts of a supra-national body is perceived as a possible infringement on the sovereignty of the nation-state, won in numerous cases after many decades or longer of struggles and pain.

Erasure of cultures

We claim that today's world is a global village, because technological progress has made our earth very small, and new can instantly reach every inhabitant of the earth through the highroad of information. But there is the fear that this global village culture may erase the diverse culture of the earth; indeed it is argued that there is already an immense drive towards uniformity of life habits and uniformity of knowledge.

Economic front

On the economic front, the much-talked about liberalization process is seen by many as an attempt to impose everywhere a model only suited to some countries and to spread everywhere a culture of consumerism. A computer for everyone and bread for only one quarter of the world population; is this the global towards which we are advancing?

Science

In the 19th century, intellectuals saw the progress of science as the great factor which would lead to the unification of mankind, since science was a thing common to all men in its conclusions and was international in its very nature; but we know now that science can be misused, and is being

misused, to discover more and more of destruction. We have lost faith in science as a panacea for all evils, but what is there to replace it?

Biggest obstacle

We know that egoism is the biggest obstacle to a life of harmony and peace on earth, but after so many centuries of civilization no amount of religious preaching or moral teaching has been able to convince the ego to forego its claims, as to speak to him of fraternity is to speak to him of something fundamentally contrary to his nature.

Need for real unity

Therefore it appears that although we are moving somewhat reluctantly towards a kind of unification, this is not a process likely to solve the many active problems of the earth, nor will the envisaged unity answer the deeper needs and aspirations of the human beings. In fact we have begun to understand that if we want to preserve the freedom for man to develop and grow in all liberty, this unity cannot be built through mechanical means. It cannot be achieved as long as man does not recognize a real unity between man and man it cannot be arrived at through social and mechanical devices; and we have even started to realize that if its aim is not to bring about a fairer, brighter and nobler life for all main kind this unity is hardly desirable.

Man will be surpassed

It becomes therefore urgent to understand what this unity is towards which we feel pushed in spite of ourselves man is a transitional being. Said Aurobindo shortly after the first world war, evolution continues and man will be surpassed. Not only did Shri Aurobindo foresee the next step in the evolution of man, but he hold us how to participate in it.

Unsing inner means

But for this, we haves to reverse to process, said sir Aurobindo, and instead of using external means, we have to turn inward, because without a change in man's nature no real change in the external circumstances are likely to take place. The only way we can move towards unity is to progressively realize that there is a secret spirit, a divine reality in which we are all one not only realize it mentally but discover it in ourselves and live this knowledge. The secret of unity is within said Sri Aurobindo; the secret of brotherhood is within. There is no unity except by the soul, there is no real brotherhood except in the soul and by the soul. Only when we live from the soul and not from the ego will a real unity reign on earth.

Connecting with the new consciousness

The spiritual age of humanity then will represent a transformation in the nature of man as momentous as the appearance of the thinking mind on earth. In the same way as for millennia the mind was the centre of our life, so in new age opening for humanity or 'supra-mental' age, the soul will become the centre of all life and activities, A new stage in the evolution of man has already begun; a new consciousness, as Sri Aurobindo said, in which the dualities, hesitations and limitations of the mind and greed and blindness of the ego will no longer exits, has already started to appear, and all the upheavals and convulsions that are at present so painfully tearing our earth are the outward signs of this evolutionary crisis. This new consciousness is already at work in the atmosphere of the earth; we can connect with it, we can call it in ourselves, we can use it to transform our entire nature and consequently the world in which we live.

It is in this wide and far reaching sense that Aurovill is dedicated to human unity, all are invited. ✿

Non-violence is aid to the injured

Non-violence in essence, is the use of peaceful means to bring about a positive and lasting social or political change. Use of non-violence as a solution is tantamount to giving aid to the injured, water to the thirsty and food to hungry.

◈ **Srishti Gupta** XI C
City Montessory School
Aliganj, Sec-o, Lucknow
Uttar Pradesh

Society consists of innumerable individuals having a common bond. The bond is mutuality. As without a common thread the beads would not make the rosary and it is of utmost importance to examine and evaluate the thread, similarly applies for the society. We live as a part of society and the unit of society is the individual. Behind the belief that the external cause can explain everything and that an individual's own quality and competence do not matter. Both democratic and socialist system have in them the seeds of violence. It is possible to find a lasting solution to the problem of world peace by integrating the socialist economic systems requiring a definite limit to individual proprietorship with the democratic individual's freedom. The famous historian Toynbee talked of the twin questions of bread the faith. Neither in isolation can be faultness.

We are the inhabitants of world peace is an ideal of freedom, peace and happiness among and within all nations. It is an idea of planetary non-violence by which nations willingly

co-operate, either voluntarily or by virtue of a system of governance that prevent warfare. World peace more commonly refers to a permanent end to global and regional wars. Developing technology that utilize reusable feel sources may be one way to achieve non-violence or world peace. World peace and non-violence is sometimes claimed to be the inevitable result of a certain political ideology. According to former U.S. President George W. Bush, “The march of democracy will lead to world peace and non-violence.”

Non-violence in essence, is the use of peaceful means to bring about a positive and lasting social or political change. Use of non-violence as a solution is tantamount to giving aid to the injured, water to the thirsty and food to hungry.

One can legitimately ask- Why should non-violence be used when violence offers more tangible and faster solution?

Firstly, it is important to realize that the use of violence to solve a social or political problem creates the most of other problems in its wake. No matter, how pure and sublime his aim is, use of violence to achieve it can never be justified. In the words of Mahatma Gandhi! “Violence breeds violence…….. Pure goals can never justify impure or violent action.

Secondly, non-violence is a “tool” that is available to all. One doesn’t need either time or resources to acquire this tool.

Thirdly, and most importantly non-violence approach breaks the cycle of violence and counter violence, which is usually triggered by the use of violence as a solution. If one group attacks another one violently, the attacked group is naturally instigated to retaliate with violence. This, in turn, provokes the first group to counter attack with fierce violence. This chain reactions continues until one of the group is completely wiped out i.e. until a group has “won”. How can we term

this disastrous cycle results into nothing but massive bloodshed and deaths?

Mohan Das Karamchand Gandhi, Martin Luther King, Nelson Mandella all achieved a revolution and independence in their countries through non-violence. The reason this worked is because the non-violent people would be beaten and killed for doing nothing wrong. This made the attackers look like idiot for killing defenseless people.

The materialistic point of view, Man's ego prompts him to be more and more ambitious. It is this ambition of man which lies at the back of materialistic nature. World peace and non-violence are no more subjects of philosophy, they are essentially in good conduct.

Non-violence, world peace and education system- The present day education system lays a great deal of stress on intellectual development. Our colleges and schools are producing excellent teachers, scientists, lawyers, doctors but they are unable to produce high quality ethical, religious. The left lobe of our brain has become over active and right lobe become inactive. Because of this activeness and inactiveness in the both the sides of brain it has creates an imbalance in the personality of a person. Only a balanced person can bring world peace by non-violence. Non-violence and will power. A person can change or revolutionize the world if he/she has willpowers. For example, the father of nation i.e. Mahatma Gandhi forced the Britishers to leave India because of this will power and policy of non-violence.

"Strengthening the faith in non-violence implies nourishing world peace."

"May the cause of universal non-violence advance and flourish." May peace prevail on Earth. ✿

No powerful platform of Non-violence today

People working in the field of non-violence are in fact very inadequately trained and practiced in non-violence. It is necessary to frame a course of action to remove this inadequacy so that a cadre of seasoned and well-trained workers created to spread the message of non-violence to every corner of the world

◈ **Harshada Pillai** VIII A
South Indian Association High School
Dombivli (West), Mumbai
Maharshtra

Today we have conquered distance. We are no longer living as isolated individuals. Our activities and thinking now encompass not only the country we belong to, but the whole world. This is an important development. However let us not forget the truth that the center of all consciousness lies within the individual no matter whether it is individual consciousness or collective consciousness. Therefore, the dream of the world peace cannot be realized without refining the individuals consciousness. The individual is relegated to the secondary position as soon as peace becomes an organizational matter or a matter related to management. Now, what characterizes good organization or management is complete control. But such control is subversive of peace. Therefore sooner or later, one will have to awaken social consciousness in individuals to ensure world peace. This consciousness is in traditional terms consciousness of equity.

Military rulers and dictators have survived through the exercise of total control. But we have now come a long way

from the days of monarchy to present day democracy. This is an extremely important change. The next state of the journey should be a government wedded and committed to peace, a kind of 'paxocracy'. Here it is not necessary that all democratic governments should have faith in non-violence. The fact of the matter is that even though ideally democracy and non-violence are closely connected today, democratic governments have become close approximations to dictatorship. The system of paxocracy will not be different from that of democracy, but the rulers in the former system will have to be men and women having complete faith upon non-violence. Only in such a 'paxocracy ' can the dream of world peace comes true.

If only conferences could establish world peace, we could not ask for a greater blessing. Let us not forget that even governments organize similar conferences with the same objective of peace in the world. But the very same governments keep arming themselves to the teeth. This duplicity is misleading. What a contradiction! Both efforts for peace and those for developing increasingly destructive weapons made at the same time. People everywhere are opposed to war. They never like their own money collected through taxes wasted on wars and their instruments. Unfortunately governments thwart and defeat the wishes of people.

Today there is no powerful platform of non-violence anywhere. People working for non-violence are scattered without any effective links and contacts or even unity of purpose, whereas nations with opposing ideologies have found a common platform in the UNO where they confer deliberately and try to solve international problems. People bound together by a common faith in non-violence never meet talk or sit together to find collective solutions to the world's problems. A global platform of universal non-

violence should be created where the various problems of violence may be collectively considered and decisions taken on the ways of ending incidents of violence. Should it happen, it will be a great step forward towards the establishment of world peace.

People working in the field of non-violence are in fact very inadequately trained and practiced in non-violence. It is necessary to frame a course of action to remove this inadequacy so that a cadre of seasoned and well-trained workers created to spread the message of non-violence to every corner of the world.

Peace brigades have been formed at some places but they are just a drop in the ocean. Renewed efforts should be made to strengthen the above experiment and to make it more meaningful.

The above three-point formula of non-violence can greatly benefit the cause of world peace. All our thinking's must be centered on it. Of course other programmes can also be proposed so long as we are clear about the aim strengthening the faith in non-violence. Faith in non-violence implies nourishing world peace. Let all our energies be trained in this direction. Our effort must be world-wide. May the cause of universal non-violence advance and flourish! ✿

Global peace is the need of the hour

The world has become so small that an incident in one country affects the people in other parts of the world. To maintain world peace we have to think that mankind is one big family. The problem of one country is not the problem of that country alone, it has to be solved together. Global peace is the need of the hour.

◈ **Avisha Mishra** VI I
City Montessori School
Gomti Nagar Campus
Lukhnow, Uttar Pradesh

As a child I thought I should not worry about world peace and that it was my parent's responsibility, but the happenings of the last few months have made me change my mind. The recent events forced me to think that if we don't take care of the world, if we don't take care of the human species, what would happen in the next generation? All the wars going on in the world, what do the people get out of it? I myself cannot think of any logical reason.

Just recently the newspapers were flooded with the bomb blast in Bombay, the massacre in Norway and the riots in Bahrain. I don't understand why the people have to resort to violence to get something.

My aunt lives in Bombay and when we heard about the bomb blast we got very worried. My family was very lucky but there were so many unfortunate souls who will never get to see their loved ones again. Such violence has become a part of life of the Bombay citizens.

Another incident that shocked me was the protests in Bahrain. Bahrain is a small Island in the Middle East where I lived for over five years. It was a very calm and peaceful place then. Small bickering took place but someone's life was never lost. After I left Behrain in Auguest last year everything had changed! Protests were taking place on the roads against the king. Army was ordered to stop these protests. Many people's lives were disturbed and thousands would never be the same again.

The world has become so small that an incident in one country affects the people in other parts of the world. To maintain world peace we have to think that mankind is one big family. The problem of one country is not the problem of that country alone, it has to be solved together. Global peace is the need of the hour.

Science has given us such comfort but at the same time it has given us a major threat to the survival of mankind nuclear weapons. If a nuclear war takes place, it would wipe out the whole life from the earth, there will be no victors as there will be no survivors! All the prudent people of the world should decide to dismantle or destroy such deadly things that can cause destruction to mankind.

An important way of bringing peace and harmony in this world is by educating the people, not just making them literate. People who are educated can differentiate between right and wrong. They will not develop negative thoughts.

Last Wednesday morning I was lucky to attend one of the lectures of our school founder, Jagdish Gandhi. He mentioned in order to maintain world peace, the people should know that 'Man is one' Religion is one and God is one'. If everyone understands the essence of this thought we would definitely be free from violence. ✿

Our efforts must be worldwide

Peace brigade has been formed at some places but they are just a drop in the ocean. Renewed efforts should be made to strengthen to the above experiment & to make it more meaningful. Our effort must be world-wide. May the cause of universal non-violence advance & flourish!

◈ **Rahul Panwar** IX A
Shree Kasera Bazar Vidya Niketan
Indore, Madhya Pradesh

Today we have conquered distance. We are no longer as isolated individuals. Our activities & thinking now encompass not only the country we belong to but the whole world. This is an important development. However, let us not forget the truth that the center of all consciousness. Therefore, the dream of world peace cannot be realized without refining the individual consciousness. The individual is relegated to the secondary position as soon as peace becomes an organizational or management is complete control. But such control is subversive of peace. Therefore, sooner or later one will have to awaken social consciousness in individuals to ensure world peace. This social consciousness is in traditional terms consciousness of equity.

Military rules & dictators have survived through the exercise of total control. But we have now come a long way from the days of monarchy to present day democracy. This is an extremely important change. The next stage of the journey should be a government wedded & committed to peace, a

kind of ‘paxocracy’. Here it is not necessary that all democratic rulers should have faith in non-violence. The fact of the matter is the even though ideally democracy & non-violence are closely connected.

Today democratic government have become close approximations to dictatorshiop. The system of ‘paxocracy’ will not be different from that of democracy but the rulers in the from system will have to be men & women having complete faith in non-violence. Only in such a ‘paxocracy’ can the dream of world peace come true.

Sometime back lord Mahavira’s twenty-fith centenary was celebrated. On that occasion a Jain emblem was prepared which contained at its base the following sutra : Paraspagraho Jeevanam. This is an important aphorism from the first Sanskrit book in the Jain tradition. It means that sentiments (jivan) are mutually related through a sacred ceremony. The latter moulds himself according to the teacher & respectfully obeys his directions. Both are examples of mutual beneficence. Life’s formula is not conflict, for conflict denotes helplessness & is not an independent trait. On the other hand mutual beneficence is an independent trait while beneficence takes him on the road to non-violence.

We live as part of society & the unit of society is the individual’s. Like individuals like society & vice versa. The above relationship is both ways true but relatively so. In modern times, society is conceived in terms of economic conditions & their management. It is assumed that if the latter is good the individual will be good too. Behind this assumption is the belief that the external cause can explain everything & that an individual’s own quality & competence do not matter. Its converse is equally one-sided. It holds that the individual’s own quality & competence constitute the basic or material cause of virtue and vice-versa & that economic management and social circumstances act only by

the formula individual economic management & social order. A relative & balanced transformation of all these three constituents can alone establish a non-violence society.

Both democratic & socialist systems have in them the seed of violence. There is a need for a third system to usher in world peace. The Jain philosophy has an important principal called ‘anekantavada’ (the doctrine of manifold aspects). It considers the third alternative faulters neither ‘this’ nor ‘that’. In philosophy both eternalism & non eternalism are acceptable. Anekanta will consider neither blameless when both are integrated as eternalism cum noneternalism. We get the third alternative which is blameless . In the same manner it is possible to find a lasting solution to the problem of world peace by intergration of the socialist economic individual freedom. The famous historian Joynbee talked of the twin question of bread & faith. Neither in isolation can be faultless. Only that system can be conducive to world peace which ensures both in the right proportion.

The materialistic point of view

Man’s ego prompts to be more & more ambitious. It is this ambition which lies at the back of materialism. He has sensations too & he always wants pleasant sensation & love of comfort that praps up materialism & a materially successful person looks down upon all those who are less privileged. As a result of all this the entire energy of the individual is being spent in indulging his ego & pleasures. How can we then think of world peace & non-violence & of the ways of bringing them about? Peace & non-violence are no more subject of philosophy ; they are essentially human conduct. It is common knowledge that the practice is much more difficult than precept. How can we successfully change the situation? This question agitates our mind again & again. We do talk of non-violence but do not know how to break the cycle of the question naturally arises whether it is so easy to

give up ambition that one can give up the pleasure principle merely by reading about non-violence. Undoubtedly without saying goodbye to hedonism & materialism there can be no end to the cycle of arms race, wars, unrest & violence. Even if America & the Soviet Union agree to limit the arms race, some other countries may resort to.

Non-violence & the education system

The present day education system lays a great deal of stress on intellectual development. Our colleges & universities are producing excellent teachers, scientists, lawyers, administrator, educationists & businessmen. But they are unable to produce high quality ethical, religious & spiritual men. The left lobe of our brain has become overactive & the right lobe has become inactive. This imbalance has made the whole human personality unbalanced & an unbalanced personality becomes the cause of violence. Only a balanced personality can bring about non-violence. For solving the problem of violence it is necessary that our education system should aim at balanced development of the intellectual & emotional aspects of the personality. Both the lobes of the brain have to be activated so that the right soil is created for sprouting the seeds of non-violence.

Non-violence & willpower

Why does an individual indulge in violence? This question has great importance for one who practices non-violence. Its answer compels us to probe the unconscious. We discover there what psychologists call a repressed desire one to violence. We can be controlled only by strong will power which is the same as a strong Vrata or vow. It is for this purpose that the Anuvrat movement is going on the unconscious harbors ego which accounts for the individual getting enjoyment out of thinking very high of himself & very low of others. Discrimination practiced on the basis of race

& colour is but one manifestation of man's ego. Irrational insistence too is rooted in ego. Here in also lies the seed of the communal problem. Here, it is relevant to recall one of the vows of Anuvrat:

"I will believe in human unity, will eschew any discrimination based on race, colour etc as well as untouchability."

Non-violence—A practical course of development

If only conferences could establish world peace, we could not ask for a greater blessing. Let us not forget that even government organize similar conference with the some objective of peace in world. But the very same government keeps arming themselves to the teeth. This duplicity is misleading. What a contradiction! Both, efforts for peace & those for development increasingly destructive weapons, made at sometimes. People everywhere are opposed to war. They never like their own money collected through taxes wasted on wars & their instruments. Unfortunately government thwart & defeat the wishes of people.

People working in the field of non-violence are in fact very inadequately trained & practiced in non-violence. It is necessary to frame a course of actions to remove this inadequacy so that a cadre of seasoned & well-trained workers is created to spread the message of non-violence to every corner of the world.

Peace brigade has been formed at some places but they are just a drop in the ocean. Renewed efforts should be made to strengthen to the above experiment & to make it more meaningful. Our effort must be world-wide. May the cause of universal non-violence advance & flourish! ✿

A third system is needed

◈ **Saroop. B. Nair** IX A
St. Mary's High School
Chakkinaka, Kalyan (East)
Mumbai, Maharashtra

It is assumed that if the latter are good the individual will be good too. Behind this assumption is the believe that the external cause can explain everything and that an individual's own quality and competence do not matter. Its converse is equally one-sided. It holds the individuals own quality and competence constitute the basic or material cause.

Society contains of innumerable individuals having a common bond. That bond is mutuality. Plurality constitutes collectively, but mere collectively does not become society without the bond of mutuality. Without a common thread the beads would not make a rosary and it is of utmost importance to examine and evaluate the thread.

We live as a part of society and the unit of society is the individual. Like individuals like society and vice versa. The above relationship in both ways but both ways are true but relatively so. In modern times, society is conceived in terms of economic conditions and their management. It is assumed that if the latter is good the individual will be good too. Behind this assumption is the believe that the external cause can explain everything and that an individual's own quality and competence do not matter. Its converse is equally one-sided. It holds the individuals own quality and competence constitute the basic or material cause.

Neither proposition encompasses totality which can be

represented only by the formula-individual, economic management and social order. A relative and balanced transformation of all these constituents can alone establish a healthy and non-violent society. Both democratic and socialist systems have in them the seeds of violence. There is need for a third system to usher in world peace, it is possible to find a lasting solution to the problem of world peace by integrating the socialist economic system required a definite limit to the individual freedom. The famous historian Toynbee talked of the twin questions of bread and faith. Neither is isolation can be faultless. Only that system can be conductive to world peace which ensures both in the right way.

Non-violence, doctrine or practice of rejecting violence in favor of peaceful tactics as a means of gaining political or social objectives:

Some Quotations on Non-violence

1. ***Apartheid***—Sanctions are now the only feasible, non-violent way of ending apartheid. The other road to change is covered with blood. (Neil Kinnock, British Politician)

2. ***Conflict***—You cannot shake hands with a clenched fist. (Indira Gandhi, 1917-1984)

3. ***Humankind***—Non-violence is the law of our species as violence is the law of the brute. The spirit lies dormant in the brute and he knows no law but that of physical might. The dignity of man requires obedience to another law to the strength of the spirit (Mahatma Gandhi)

4. ***Pacifism***—It's possible to disagree with someone about the ethics of non-violence without wanting to kick his face in (Christopher Hampton)

The events of September 11 had a profound effect on the Bush administration and U.S. foreign policy. They also affected the attitudes of the American public support for the president on foreign policy status.

International League of Permanent Peace

In 1867 Passy wrote a letter to Le Temps, a newspaper in Paris to urge peaceful settlement of growing tensions between France and Prussia. In his letter Passy suggested the creation of an organization devoted to promoting peace. Public support for his proposal led to the 1867 creation of the International league for permanent peace. Despite the league's popularity its failed to persuade the two governments to seek a peaceful settlement, and the outset of the Franco-Prussian War (1870-1871) forced the league to disband.

Carnegic Endowment for International Peace

Carnegic Endowment for International Peace, private foundation established in 1910 by the American Industrialist and Philanthropist Andrew Carnegic for the purpose of abolishing war. Since II World war ended in 1945, the Carnegic Endowment has concentrated on the development of the International Institutions, particularly the United Nation. With the headquarters in Washington D.C. the organization opened a second office in November in Moscow at 1993.

Some Quotations on World Peace

1. ***Government—***The day will come when the people will make so insistent their demand that there be peace in the world that the governments will get out of the way and let them have peace. (Dwight. D. Eisenhower).

2. ***Women***—Balancing a job and a family is not the hardest thing to achieve. It's second. (Barbare Dale). ✿

Love of the enemy or the realization of the humanity of all people is a fundamental concept of philosophical non-violence. The goal of this type of non-violence is not to defeat the enemy, but to win them over and create love and understanding among all.

Peace begins with smile

◈ **Smita Kulkarni** XII
K.R. Kotakar College
Maharasthra

World peace is an ideal of freedom, peace and happiness among and within all nations. If you looked up world peace in a dictionary, chances are it would say something about tranquility and non-violence. I think world peace is far more than just a truce.

Mother Teresa once said, ”Peace begins with smile.” I absolutely agree! It is said that a smile can light up a room, so imagine what a world of smiles can do. If everyday someone does something kind for someone, it will create a ripple effect. Think of when you drop a stone in a pond. It generates a small ripple at first , but after a while that ripple has spread throughout the entire pond. Now think of world peace, if someone apologizes to someone else and they do the same, imagine what we can achieve!

World peace is an idea simple in principle but different tasks i.e. very difficult tasks needed to achieve in practice because, as individual members of our species, we have not found

peace within ourselves. The quest for peace must be carried out on many fronts, the most important of which is for each of us to contribute.

Our portion towards an environment in which human can labor and enjoy the fruits of their labor without fear that aggressive neighbors and oppressive government will confiscate their gain. Commensurate this freedom for fear is the responsibility to with respect the ecological systems of the 'Earth', which gives us sustenance.

We must be able to seek communications with our God without fear that individual belief will be ridiculed or oppressed by others. Finally, the tide of world events over which individuals seemingly have no control, cannot pose an irredemable threat to the 'safety and security of individuals.

While it is true that the world has become so complex and so technologically oriented that individuals no longer believe that they count nor that they can do anything to effect world events, it is precisely the opposite. For only when individuals take total responsibility for their own lives, find within themselves communion with the creative force and live in peace with their neighbours and environment, only then will forces be set in motion that will eventually bring about world peace. No power can create peace when humans have fear, anger and hate in their hearts, however, insignificant those individuals humans may think they are.

World peace is something which when achieved will always show us the right path. World peace is sometimes claimed to be the inevitable result of ideology.

According to George W. Bush

"The march of democracy will lead to world peace."

World peace has been depicted as a consequences of local,

self-determined behavious that inhibit the institutionalization of power and ensuring violence.

Non-violence

Non-violence has two closely related meanings:

(1) It can refer, first to a general philosophy of abstention from violence because of moral or religious principles.

(2) It can refer to the behavior of people using non-violent action.

In modern times, non-violent methods of actions has been a powerful tool for social protest. Here certain movements particularly influenced by philosophy of non-violence should be mentioned, including Mahatma Gandhi leading a decade long non-violent struggle against British rule in India, which eventually helped India win its independence in 1947.

Non-violence on the other hand, is most often associated with the intent to achieve social or political change. Indeed the desire to persue change effectively may be a reason for the rejection of non-violence. October 2, the birthday of Mahatma Gandhi is observed as International Day of non-violence.

On national level, the strategy of non-violence seeks to undermine the power of rulers by encouraging people to withdraw their consent and co-operation. The forms of non-violence draw inspiration from both religious or ethical beliefs and political analysis.

Love of the enemy or the realization of the humanity of all people is a fundamental concept of philosophical non-violence. The goal of this type of non-violence is not to defeat the enemy, but to win them over and create love and understanding among all.

Martin Luther king said, “Non-violence means avoiding not

only external physical violence but also internal violence of spirit."

Non-violence, in essence, is the use of peaceful means to bring about a positive and lasting social or political change. Use of non-violence as a solution is tantamount to giving aid to the injured, water to the thirsty and food to the hungry. One can legitimately ask why should non-violence be used when violence offers more tangible and faster solutions.

Firstly it is important to realize that the use of violence and to solve a social or political problem creates a host of other problems in its wake. No matter how pure and sublime one's aim is, use of violence can never be justified. Secondly it is a "tool" that is available to all. One doesn't need either time or resources to acquire this tool. Every single person in this world can practice non-violence right from the moment, if one realize its important. Thirdly, and most importantly, non-violent approach breaks the cycle of violence, which is usually triggered by the use of violence as solution.

Is non-violence an effective form of protest? Why?

Non-violence is a very effective form of protest because people can get the rights and authorities they belong to Non-violence is a philosophy and strategy for social change that rejects the use of violence.

I also want to say that non-violence be taught in our societies during their decades to make the children of the world aware of the real, practical meaning and benefits of non-violence in their daily lives, in order to reduce violence and consequent suffering.

Really, together we can build a new culture of non-violence for the people in the world. The choice of non-violence should not be left to chance. It must be integrated into every one's life. ✿

He is the happiest who gets peace at home

Through processes of bounded rationality, people are conditioned towards strong in group identities and are easily swayed to fear outsiders, psychological predispositions that make possible sectarian violence, genocide and terrorism.

◈ **Vaishali. P. Mishra** X
Kidland English School
Kopar Road, Dombivli (East)
Distt. Thane, Mumbai
Maharashtra

According to Mr. Mohandas Karamchand Gandhiji Non-violence is the very first religion.

World peace and non-violence are very modern concept, that every nation wants for their respected country.

World peace is an ideal of freedom, peace and happiness among and within all nations or people. World peace is an idea of planetary non-violence by which nations willingly cooperate, either voluntarily or by virtue of a system of governance that prevents warfare. The term is sometimes used to refer to cessation of all hostility among all individuals.

For Example: World peace and non-violence could be an end to wars, fighting between any two people, fighting between people and animals, fighting between people and any living element and/or crossing boundaries via education.

While world peace is theoretically possible, some believe that human nature inherently prevents it. This belief stems from

the idea that humans are naturally violent, or that rational agents will choose to commit violent acts in certain circumstances.

Others however believe that war is not an innate part of human nature and that this myth in fact prevents people from reaching for world peace.

World peace and non-violence is sometimes claimed to be the inevitable result of a certain political ideology. According to former U.S. President George Washington Bush: “The March of democracy will lead to world peace.” Lean Trotsky, a Marxist theorist, assumed that the world revolution would lead to a communist world peace.

Proponents of the controversial democratic peace theory claim that strong empirical evidence exists that democracies never or rarely wage war against each other. (the only exceptions being the cold wars, the Turbot war and operation fork), Jack Levy (1988) made an off quoted assertion that the theory is “as close as anything we have to an empirical law in international relations.”

There are proponents of cobdenism who claim that by removing tariffs and creating international free trade, wars would become impossible, because free trade prevents a nation from becoming self-sufficient, which is a requirement for long wars. An example is, if one country produces firearms and another produces ammunition, the two could not fight each other, because the former would be unable to procure ammunition and latter would be unable to obtain weapons.

Critics argue that free trade does not prevent a nation from establishing some sort of emergency plan to become temporarily self-sufficient in case of war or that a nation could simple acquire what it needs from a different nation. A good example of this, is World War I. Both Britain and Germany managed to become partially self-sufficient during

the war. This is particularly important, due to the fact Germany had no plan for creating a War Economy.

We cannot forget the great leader, the father of our nation i.e. Mahatma Gandhiji who selected the path of Non-violence for freeing our nation (India). Then why today, we are making use of violence. Man had become Materialist. Money have become measure of man's success. Today we can found caste greed everywhere. Today can't all of us choose non-violence and once again establish world peace.

World peace and non-violence have been depicted as a consequence of local, self-determined behaviors that inhibit the institutionalization of power and ensuring violence. The solution is not so much based on an agreed agenda, or an investment in higher authority whether divine or political, but rather a self-organized network of mutually supportive mechanism, resulting in a viable politico-economic social fabric. The principle technique for inducing convergence is thought experiment, namely back casting, enabling anyone to participate no matter what cultural background, religious doctrine, political affiliation or age demographic.

Through processes of bounded rationality, people are conditioned towards strong in group identities and are easily swayed to fear outsiders, psychological predispositions that make possible sectarian violence, genocide and terrorism.

According to Robert Fulgham.

Peace is not something you wish for; it's something you make, something you do, something you are, something you give always.

Can't we establish peace today not by violence but by non-violence?

Many Buddhists believe that world peace can only be achieved if we first establish peace within our minds. Siddhartha

Gautama, the founder of Buddhism, said, “Peace comes from within. Do not seek it without.” The idea is that anger and other negative states of mind are the cause of wars and fighting. Buddhists believe people can live in peace and harmony only if we abandon negative emotions such as anger in our minds and cultivate positive emotions such as love and compassion.

While according to the words of Jesus Christ which says. “I am the way, the truth, and the life. No one comes to the father except through me.., many Christians are unable to accept any other way to God other than Jesus Christ. Therefore, a true act of Christian love would be to proclaim that there is but one God, and one Savior. Christians are called to love their enemies and to preach the good news of the gospel.

Followers of Premillennial Dispensationalism believe that world peace will be unachievable until Christ’s second coming and the 1000 year reign of Christ after the Tribulation. So, although Christians should work towards spreading the message of salvation through Christ Jesus alone, their eschatology teaches on ultimate increase in war and natural disasters through the seven year Tribulation where the Anti-Christ rules until the initiation of the thousand year reign of Christ.

The United Nations (UN) is an international organization which stated aims are facilitating cooperation in international law, international security, economic development, social progress, human rights, and achievement of world peace. The UN was founded in 1945 after world war II to replace the league of Nations, to stop wars between countries, and to provide to platform for dialogue. It contains multiple subsidiary organizations to carry out its missions.

There are currently 193 member states, including every internationally recognized savereign state in the world but the Vatican city.

World peace and security cannot be achieved unless we the common people be liberated from the ruling classes of our own countries. We must be allowed to go where we want, buy what we want and be happy with the EARTH as our whole country, then nobody will resent anyone and all will feel liberated without restraints and without false distinctions and boundaries, until this utopian state of world citizens, we will have armies to prove narrow national boundaries and theories to be superior to each other.

The Great peace towards which people of good will throughout the centuries have inclined their hearts, of which seers and poets for countless generations have expressed their vision, and for which from age to age the sacred scriptures of mankind have constantly held the promise, is now at long last within the reach of the nations. For the first time in history it is possible for everyone to view the entire planet, with all its myriad diversified peoples, in one perspective. World peace is not only possible but inevitable. It is the next stage in the evolution of this planet in the words of one great thinker, “the planetization of mankind.”

> He is happiest, be he king or peasant
> Who finds peace in his home.
>
> —GOETHE ✿

Try to change people's consciousness

◈ **Vibha Tiwari** X A
Prerna Bal Niketan Hr. Sec. School
Indore, Madhya Pradesh

If only conferences should establish world peace, we could not ask for a greater blessing. Let us not forget that even governments organize similar conferences with the same objectives of peace in the world. But the very same government keep arming themselves to the teeth. This duplicity is misleading.

Society consist of innumerable individuals having a common bond. That bond is mutuality. Plurality constitutes collectivity, but mere collectivity does not become society without the bond of mutuality without a common thread the beads would not make a rosary & it is of utmost importance to examine & evaluate the thread.

Sometime back Lord Mahavira's twenty-fifth birth centenary was celebrated. On that occasion a Jain emblem was prepared which contained at its base the following sutra:

This is an important aphorism from the first Sanskrit book in the Jain tradition. It means that sentient (jivas) are mutually related through favour & obligation. Likewise, the teacher imparts knowledge to the pupil that makes him go through a sacred ceremony. Both are examples of mutual beneficence; Life's formula is not conflict, for conflicts denotes helplessness & is not an independent trait. On the other hand mutual beneficence is an independent trait.

While treating life as conflicts compels man to take the course of violence, mutual beneficence takes him on the road to non-violence.

We live as part of society & the unit of society is the individual. Like individuals like society & vice versa. The above relationship is both ways true but relatively so. In modern times, society is conceived in terms of economic conditions & their management. It is assumed that is if the latter is good the individual will be good too. Neither proposition encompasses totality which can be represented only by the formula-individual, economic management & social order. A relative & balanced transformation of all these three constituents can alone establish a healthy & non-violent society.

Countries like the Soviet Union & China laid stress on bringing about changes in the economic & social order. Consequently organizational changes did occur there but the individual remained unchanged. Even though external condition are under severe control, economic & social offences continue unabated. A relaxation of controls might lead to an increase in crime. Thus mere organizational changes are not enough. As opposed to the socialist countries, Great Britain, America & India claim to have a democratic system where the individual enjoys the right to freedom of speech, writing & expression. In the democratic system the claims of the individual are not ignored & everyone has equal opportunity to grow according to his ability.

Both democratic & socialist systems have in them the seeds of violence. There is a need for a third system to system in world peace. Historian Toynbee talked of the twin question of bread & faith. Neither in isolation be faultiers.

We are inhabitants of the same planet & share a common solar system. All of us are being effected by interplanetary

radiation & all of us are in need of proper atmosphere & ecological cover. This nature has given birth to the feeling of co-existence. Nature dictates that cannot but live together. One harmful consequence is that we have raised huge artificial walls between man & man making it impossible for one man to see, know & understand the other. Differences of race, colour & religion constitute an unholy trinity that has so divided humanity as to make hostility among men appear more real than friendship. It is this hostility which has vitiated the natural concept of coexistence.

A is a citizen of India & B of Pakistan. It is the nationality which divides them. The Indian feels more attached to his country's soil than he does to the Pakistani. In reality one man should be closer to another man, but in practice man feels more attached to his country's things than to other men. Thus people feel much more attracted towards race, colour & religion than towards one another. The gulf dividing truth & actual behaviour constitutes a complex problem. The solution to the problem of violence lies in viewing opposition/non-opposition & difference/non-difference dyad relatively & in trying to integrate & reconcile them. On this basis alone can the principle of co-existence be implemented.

Man's ego prompts him to be more & more ambitious. It is this ambition which lies at the back of materialism. He has sensations too & he always wants pleasant sensations. It is again this hedonisms & love of comfort that props up materialism & a materially successful person looks down upon all those who are less privileged. As a result of all this, the entire energy of the individuals is being spent in indulging his ego & his pleasures. How can we then think of world peace & non-violence & of the ways of bringing them about? Peace & non-violence are no more subjects of philosophy; they are essentially human conduct. It is

common knowledge that practice is much more difficult than precept & since a major part of society is motivated in its activities by ambition & the pleasure, the inevitable consequences is violence & unrest. How can we successfully change the situation? This question agitates our mind again & again. We do talk of non-violence but do not know how to break the cycle of violence.

We must address ourselves in finding the ways of removing these factors if we want to prevent wars & establish world peace.

The External Religion—Non-violence is an eternal religion but we do not accept it as such. It is only when humanity is threatened with destruction that we start thinking of non-violence. It is not developing independently in our habit of treating it merely as a method of crisis management. Though violence is a negative tendency & non-violence is a positive one for all practical purposes we have changed their places. As a matter of fact a serious misunderstanding has arisen because of non-violence since it is taken to mean the negation of violence. By this reasoning, violence has become primary & non-violence secondary. It had led people to believe that violence & not non-violence is an unavoidable part of life.

It is not difficult to prove the proposition that man has accorded full recognition to the need for & usefulness of violence on the other hand non-violence enjoys in our life & gaining recognition in a state of helplessness & compulsion. Consequently there is no research training or practice in the field of non-violence. If any miniscule effort in that direction is being made somewhere it is no better than a cry in wilderness. This, then is the big problem violence, though destructive, finds favour with people; non-violence, though one of life's basic truths, does not attract most people.

The empire of violence is very huge. A direct assault on it will prove unavailing. We should first try to change people's consciousness so that they feel attracted towards non-violence. Since early childhood the conviction should grow. Non-violence is a must for peace & success in our lives. For it we will have to prepare a new scheme of mental training in non-violence. The powers of violence cannot be beaten merely by discussing & theorizing. For it a change of heart will be needed. The practice of preksha meditation can bring about the necessary changes in the chemicals responsible for violence.

The present day education system lays a great deal of stress on intellectual development. Our colleges & universities are producing excellent teachers, scientists, lawyers, administrators, educationalists & businessmen. But they are unable to produce high quality ethical religious & spiritual men. The left lobe of our brain has become overactive & the right lobe has become inactive. This imbalance has made the whole human personality unbalanced & an unbalanced personality becomes the cause of violence.

Why does an individual in fall violence? This question has great importance for one who practices non-violence. Its answer compels us to probe the unconsciousness. We discover what psychologists call a repressed desire that drives one to violence. It can be controlled only by strong willpower, which is the same as a strong vrata or vow. Discrimination practiced on the basis of race & colour is one manifestation of man's ego. Irrational insintences too is rooted in ego. Here it is relevant to recall one of the vows of Anuvrata.

> "I will believe in human unity,
> will eschew and discrimination based race,
> Coluor etc as well as untouchability."

But if we want to develop non-violence, it is not enough to be conscious merely of the present exents. Find out the factors that have caused it. Likewise, solving the existing problem of violence & discovering the basic cause of violence are equal necessary. People working in the field of non-violence are much less concerned about the latter & this, according to us, is the biggest impediment to growth of non-violence.

Today we have conquered distance: We are no longer living as isolated individuals. Our activities & thinking now encompass not only the country we belong too, but the whole world. This is an important development. However, let us not forget the truth that the centre of all consciousness lies within the individual, no matter whether it is individual consciousness or collective consciousness.

Military rulers & dictators have survived through the exercise of total control. But we have now come a long way from the days of monarchy to present day democracy. This is an extremely important change. The next stage of journey should be a government wedded & committed to peace, a kind of 'Paxocracy'. Here it is not necessary that all democratic rules should have faith in non-violence. The system of 'Paxocracy' is not different from that of democracy, but the rules in the former system will have to be for men & women having complete faith in non-violence.

If only conferences should establish world peace, we could not ask for a greater blessing. Let us not forget that even governments organize similar conferences with the same objectives of peace in the world. But the very same government keep arming themselves to the teeth. This duplicity is misleading.

Today there is no powerful platform of non-violence anywhere. People working for non-violence are scattered

without any effective likes & contacts, or even unity of purpose.

People working in the field of non-violence are in fact very inadequately trained & practiced in non-violence. Our effort must be world-wide. May the cause of universal non-violence advance & flourish.

Peace is the symbol of a dove.
Peace is our freedom
Peace is our friendship. ✿

The individual is relegated to the secondary position as soon as peace becomes an organised matter or a matter related to management. What characterize good organization or management is complete control. But such control is subversion of peace. Therefore, sooner or later one will have to take social consciousness in individuals to ensure world peace.

An unbalanced personality is the cause of violence

◈ **Rahul Pratap Singh Jadon** IX C
Saraswati Vidhya Mandir
D-1, Kamal Nagar, Agra, U.P.

Why does an individual indulge in violence. This question has great importance for one who practices non-violence. Its answer compels us to probe the unconscious. We discover there what psychologist call a repressed desire that drives one to violence. It can be controlled only by strong will power. Which is as same as a strong vrata or vow. It is for this purpose that the Anuvrata, Movement is going on the unconscious harbour ego which account for the individual getting enjoyment out of thinking very high of himself & very law of others. Discrimination practised on the basis of race & colour but one manifestation of man's ego. Irrational insistence food is rooted in ego. Here in also lies the seed of the communal problem. Here it is relevant to recall of the vows of Anuvrata. On the other hand non-violence is gaining recognition in a state of helplessness & compulsion. Consequently there is no search for training or practice in the field of non-violence. And if any miniscule effort in the direction is being made some where it is no better than cry

in wildness. Then a big problem violence finds favour with people of non-violence though one of life's basic truth does not attract most people.

World peace of non-violence

Today we have conquered distance. We are not long living as isolated individual our activities & thinking now compass not only the country we belong to about the whole world. This is an important development. However let us not forget the truth that the center of all the lies with in the individual no matter whether it is individual getting enjoyment out of thinking very high of discrimination of ego irrational insistence too is rooted. Here in also lies the seed of the communal problem. Here it is relevant to recall one of the vows of Anuvrata. The individual is relegated to the secondary position as soon as peace becomes an organised matter or a matter related to management. What characterize good organization or management is complete control. But such control is subversion of peace. Therefore, sooner or later one will have to take social consciousness in individuals to ensure world peace. This social consciousness is in traditional terms consciousness of equality.

Preface

Present article in this work, have already been addressed to the first & second international conference on peace and non-violence action.

Non-violence the internal religion

The present day education system lays a great deal of stress on intellectual development of colleges and universities are producing excellent teachers, scientists, lawyers, administrators and businessmen. But unable to produce high quality ethical, religious & spiritual men. The left lobe of our brain has become over active and the has become inactive. This imbalance had made the whole human personality,

unbalanced. An unbalanced personality becomes the cause of violence. Only a balanced development of the intellectual & immotional aspect of the personality tube of the brain have to be activated so that the right soil is created for spruting the seeds of the non-violence. The internal religion held from 5th December to 7th December 1988 at Landon and from 17th December to 21st February 1991 at Rajsammand where a number of delegates from various counties like Russia, Japan, Canada, Great-Britain, Holland participated.

Non-violence of education system

More than 7000 years (big & small) have been fought in the history of the world, people are killed in wars. This means living becomes scarce. The price of things touch an ever new high. That is why wars break out in country every now & then conflicting national interest & ambitions create an atmosphere of war and armies are sent to the battle front. Non-violence is understandable to be an inevitable part of life.

Co-existence

We are inhabitiors of the same planet and share a common solar system. All of us are being affected by inter-plentary radiation and all of us are in need of a proper atmosphere and ecological cover. This natural state has given birth to the feeling of coexistence. Nature dictates that we can not live together. There are indeed impediment to the fulfillment of this natural requirement. These impediments are less natural and geographic but more artificial and imaginary. We have accumulated in our mind several nations and beliefs which have cut off our direct contact with reality we see distorted image through the spectacle.

Education

Of these false notions & beliefs one harmful consequence is that we have raised huge affected walls between man &

man making it impossible for one man to know & understand another. Difference of race colour & region constitute an unholy trinity that was so divided humanity to make hostility among concept of coexistence. How ironical that we have to make strenuous effort to make people understand that principle of world peace & friendship where no effort whatsoever required to make them understand strifle & unrest.

A is a citizen of India & B is of Pakistan. It is the nationality which divides then them. Indian feels more attached to his country soil than he does to the Pakistani in reality .

Eternal system

It is only when humanity is threatened with destruction that we think of non-violence & of the ways of spreading it is thus clear that the region when non-violence is not developing independently in our habit of treating it merely as a method of crests management through violence is a negative tendency and non-violence is a positive, one for all practical purpose we have changed their places. As a matter of fact a serious misunderstanding has arisen because of the word non-violence by this reasoning violence has become primary & non-violence secondary. It has led people to believe that violence & not non-violence is an unsuitable part of life. ✿

Non-violence is an eternal religion

Why does an individual indulge in violence? This question has great importance for one who practices non-violence. Its answer compels us to probe the unconscious. We discover there what psychologists call a repressed desire that drives one to violence. It can be controlled only by strong willpower, which is same as a strong vrata or vow.

◈ **Sourabh Jodwal** VI A
St. Joseph School
Nanda Nagar, Indore
Madhya Pradesh

Society consists of innumerable individuals having a common bond. That bond is mutuality. Plurality collectivity, but mere collectivity constitutes does not become society without the bond of mutuality. Without a common thread the seads would not make a rosary and it is of utmost impotence to examine and evaluate the thread.

Sometime back Lord Mahavira's twenty-fifth birth centenary was celebrated. On that occasion a Jain emblem was prepared which contained at its base the following sutra. Parasparopagraho Jeevanam. This is an important aphorism from the first Sanskrit book in the Jain tradition. It means that sentients (jivas) are mutually related through favour and obligation i.e. beneficence. The industrialist pays wages to the labourer and the latter acts in a manner likely to benefit the former and to safeguard his interests. Likewise, the teacher imparts knowledge to the pupil and makes him go through a sacred direction. Both are examples of mutual beneficence. life formula is not conflict for conflict, denotes

helplessness and is not an independent trait. On the other hand mutual beneficence is an independent trait. While treating life as conflict compels man to take the course of violence. Mutual beneficence takes him on the road to non-violence.

Countries like the Soviet Union and China laid utmost stress on bringing about changes in the economic and social order. Consequently organization changes did occur there but the individual remained unchanged. Even though external conditions are under severce control, economic and social offences continue unabated. A relaxation of controls might lead to an increase in crime. Thus mere organizational changes are not enough. As opposed to the socialist countries. Great Britain, America and India claim to have a democratic system where the individual enjoys the expression. In the democratic system the claims of the individual are not ignored and everyone has equal opportunity to grow according to his ability. However, there is no tight control on the economic and social organization. The result is that while one individual can become a billionaire, another leads a life of starvation and deprivation. There is neither a guarantee of employment nor limit to individual possessions.

We are inhabitants of the same planet and share a common solar system. All of us are being affected by inter-planetary radiation and all of us are in need of a proper atmosphere and ecological cover. These impediments are less natural and geographic but more artificial and imaginary. We have accumulated in our minds several notions and beliefs which have cut off our direct contant with reality. We see distorted images through the spectacles of these false notions and beliefs. One harmful consequence is that we have raised huge artificial walls between man and man making it impossible for one man to see, know and understand another.

Differences of race, colour and religion constiture an unholy trinity that has so divided humanity as to make hostility among men appear more real than friendship. It is this hostility which has vitiated the natural concept of coexistence. How ironical that we have to make strenuous effort to make people understand the principle of world peace and friendship , whereas no effort whatsoever is required to make them understand strife and unrest.

Philosophy speaks of love of three kinds of apposition pratibiadhya-pratibandak (that which is impeded- that which impedes), vadhya-vadhak (the huntred-the hunter,), and sahancuvasthan (presence of one- absence of another). The turning off of the electric switch results in darkness where there was light earlier. This is the first kind of apposition. The snake and the mongoose represent the second type of apposition. Therefore the solution to the problem of violence lies in viewing apposition/non-apposition and difference/non-difference dyads relatively and in trying to integrate and reconcile them. On this basis alone can the principle of covalence be implemented.

Man's ego prompts him to be more and more ambitious. It is this ambition which lies at the back of materialism. He has sensations too and he always wants pleasant sensations. It is again this hedonism and love of comfort that props up materialism. And a materially successful person looks down upon all those who are less privileged. As a result of all this, the entire energy of the individual is being spent in indulging his ego and his pleasures. How can we then think of world peace and non-violence and of the ways of bringing them about? Peace and non-violence are no more subjects of philosophy; They are difficult than precept and since a major part of society is maturated in its activities by ambition and the pleasure principle, the inevitable consequence is violence and unrest.

The Eternal Religion: Non-Violence is an eternal religion but we do not accept it as such. It is only when humanity is threatened with destruction that we start thinking of non-violence and of the ways of spreading it. It is thus clear that the reason why non-violence is not developing independently in our habits of treating it merely as a method of crises management. Though violence is a negative tendency and non-violence a positive one, for all practical purpose we have changed their places. As a matter of fact a serious misunderstanding has arisen because of the word non-violence, since it is taken to mean the negation of violence. By this reasoning, violence has become primary and non-violence secondary. It has led people to believe that violence and not non-violence is an unavoidable part of life.

It is not difficult to prove the proposition that man has accorded full recognition to the need for and usefulness of violence. Today thousands of scientists are busy inventing destructive weapons and thousands of soldiers are either undergoing training in the use of arms of staging war rehearsals. Thus all the three activities-research, training and practice are going on in the field of violence. It shows the place and the recognition violence enjoys in our lives.

The empire of violence is very huge. Its armies are very big. A direct assault on it will prove unavailing. We should first try to change people's consciousness so that they feel attracted towards non-violence. Since childhood the convention should grow that non-violence is a must for peace and success in our lives. For it we will have to prepare a new scheme of mental training in non-violence.

The present day education system lays a great deal of stress on intellectual development. Our colleges and universities are producing excellent teachers, scientists, lawyers, administrators, educationists and businessmen. But they are unable to produce high quality ethical, religious and spiritual

men. The left lobe of our brain has become overactive and the right lobe has become inactive. This imbalance has made the whole human personality unbalanced and an unbalanced personality becomes the cause of violence. Only a balanced personality can bring about non-violence. For solving the problem of violence it is necessary that our education system should aim at a balanced development of the intellectual and emotional aspects of the personality. Both the lobe of the brain have to be activated so that the right sail is created for sprouting the seeds of non-violence.

Why does an individual indulge in violence? This question has great importance for one who practices non-violence. Its answer compels us to probe the unconscious. We discover there what psychologists call a repressed desire that drives one to violence. It can be controlled only by strong willpower, which is same as a strong vrata or vow. It is for this purpose that the Anuvrata movement is going on. The unconscious harbours ego which accounts for the individual getting enjoyment out of thinking very high of himself and very low of others. Irrational insistence too is rooted in ego. Here in also lies the seed of the communal problem.

Today we have conquered distance. We are not longer living as isolated individuals. Our activities and thinking now encompass not only the country we belong to, but the whole world. This is an important development.

Military rulers and dictators have survived through the exercise of total control. But we have now come a long way from the days of monarchy to present day democracy. This is an extremely important change. Next stage of the journey should be a government wedded and committed to peace, a kind of ‘paxocracy’. Here it is not necessary that all democratic rulers should have faith in non-violence.

A practical course of development:- If only conferences could

establish world peace, we could not ask for a greater blessing. Let us not forget that even government organize similar conferences with the same objective of peace in the world. But the very same governments keep arming themselves to the teeth. This duplicity is misleading. What a contradiction! Both, efforts for peace and those for developing increasingly destructive weapons. Made at the sometime people everywhere are opposed to war. They never like their own money collected through taxes wasted on wars and their instruments. Unfortunately governments thwart and defeat the wishes of people.

The above three-point formula of non-violence can greatly benefit the cause of world peace. All our thinking must be centered on it. Of course other programmes are clear about the aim strengthening the faith in non-violence and faith in non-violence implies nourishing world peace. Let all our energies be trained in this direction. Our effort must be world-wide. May the cause of universal non-violence advance and flourish! ✿